Prime Minister's
Rural Development Fellows
प्रधान मंत्री ग्रामीण विकास फेलोज़

सत्यमेव जयते

ग्रामीण विकास मंत्रालय
भारत सरकार

प्रधानमंत्री ग्रामीण विकास फेलोज़ 2012-13

सत्यमेव जयते

Empowered lives.
Resilient nations.

प्रधानमंत्री ग्रामीण विकास फेलोज़ 2012-13

ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार इस प्रकाशन के संकलन एवं मुद्रण में भारत में कार्यरत संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) के सहयोग के लिए आभार व्यक्त करता है।

विषय सूची

प्रस्तावना, श्री जयराम रमेश,
ग्रामीण विकास मंत्री, भारत सरकार 5

प्रधानमंत्री ग्रामीण विकास फेलोज़
एक संक्षिप्त परिचय 6

फेलोज़ की जुबानी 11

फेलोज़ का प्रालेख 33

- आन्ध्र प्रदेश 35
- बिहार 43
- छत्तीसगढ़ 53
- झारखंड 65
- मध्य प्रदेश 83
- महाराष्ट्र 93
- ओडिशा 97
- उत्तर प्रदेश 117
- पश्चिम बंगाल 123

सत्यमेव जयते

प्रस्तावना

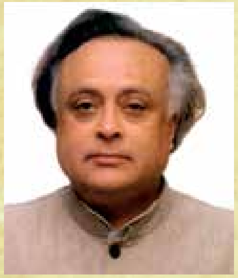

प्रधानमंत्री ग्रामीण विकास फेलोज़ (पी.एम.आर.डी.एफ.) के पहले बैच की भर्ती के पश्चात् कार्य ग्रहण किए हुए एक वर्ष बीत चुका है। पी.एम.आर.डी.एफ. का मुख्य लक्ष्य एकीकृत कार्य योजना (आई.ए.पी.) के जिलों में प्रशासन को कार्यक्रम निस्तारण एवं समाज के वंचित वर्गों के साथ उनके संबंध सुधारने हेतु उत्प्रेरक सहयोग देना है। हमें इसके लिए लगभग 10,000 आवेदन प्राप्त हुए और कठिन चयन प्रक्रिया के पश्चात् 156 फेलोज़ चुने गए। गरीबों के साथ काम करने के उत्सुक होनहार महिला एवं पुरुष युवाओं को भर्ती एवं प्रशिक्षित कर उन जिलों में तैनात किया गया जहाँ विकास की बहुत अधिक कमी है।

मैं निजी तौर पर राज्य सरकारों और फेलोज़ के सम्पर्क में रहा हूँ व अब तक के हासिल परिणामों से उत्साहित हूँ। सभी संबंधित राज्य सरकारों ने बिना किसी हिचक के योजना स्वीकार की और फेलोज़ का गर्मजोशी से स्वागत किया गया। अब तक फेलोज़ के कार्यक्रम छोड़ने की दर बहुत कम है। मेरे क्षेत्र के दौरों, संबंधित विभिन्न व्यक्तियों से बातचीत, मीडिया रिपोर्ट, हमारे ब्लॉग में फेलोज़ के स्वयं का प्रालेख तथा फेसबुक पर चर्चाओं से मुझे पता चला कि हालांकि नतीजे पूरी तरह प्राप्त होने बाकी हैं लेकिन फिर भी फेलोज़ कड़ी मेहनत कर रहे हैं। इन जिलों में अपने दौरे के दौरान मैं अक्सर उनसे मिलता हूँ और उनकी प्रतिबद्धता एवं उत्साह से प्रभावित हुआ हूँ।

गरीबों को समाज में उनका स्थान हासिल करने में मदद करना और अल्पविकसित क्षेत्रों का विकास करना हमारे समक्ष बड़ी चुनौती है। यह काम उससे कहीं अधिक जटिल है जितना आमतौर पर समझा जाता है। इस हेतु हमें कार्यक्रम निस्तारण में उच्च स्तर की कार्यशैली एवं वंचित वर्गों के प्रति सहानुभूति की आवश्यकता है। हमारे पास जिलों में गरीबों के साथ काम करने के लिए पेशेवर मानव संसाधनों की बहुत कमी है। हमारे देश के अल्पविकसित क्षेत्रों में तो यह कमी और भी गंभीर है। हमें इस चुनौती को सीधे से निपटने के लिए पेशेवर मानव संसाधनों के पूल के विस्तार की आवश्कता है। पी.एम.आर.डी.एफ. इस चुनौती से निपटने का एक प्रयास है।

हमारे मंत्रालय ने इस योजना के लागू करने की दिशा में प्रबंधन को मजबूत बनाने के लिए अनेक कदम उठाए हैं। संशोधित दिशानिर्देश तैयार किए गए, मंत्रालय में सहायता के लिए एक प्रकोष्ठ बनाया गया है तथा राज्यों ने भी अपने सहायता प्रकोष्ठ बनाए हैं। फेलोज़ के लिए विकास अभ्यास में स्नातकोत्तर डिग्री पर विचार किया जा रहा है जिससे वह गरीबी के मुद्दों का सामना करने के लिए और समर्थ हो सकेंगे।

अंत में, मैं इस सहयोगात्मक प्रयोग की सफलता में सक्रिय योगदान करने के लिए सभी संबंधित पक्षों, खासतौर से राज्य सरकारों और जिलाधिकारियों, लोक कार्यक्रम और ग्रामीण प्रौद्योगिकी विकास परिषद (कपार्ट), राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एन.आर.एल.एम.) तथा टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान (टी.आई.एस.एस.) को धन्यवाद देता हूँ। मैं सभी हितधारकों से सुझाव और प्रतिपुष्टि भी आमंत्रित करता हूँ ताकि हम इस प्रयोग को कामयाब कर सकें और अब तक जो हासिल किया जा चुका है उसमें आगे बढ़ सकें। अंत में, लेकिन महत्वपूर्ण रूप से मैं उन फेलोज़ को बधाई देता हूँ जिन्होंने यह उपलब्धि हासिल की है। मैं उम्मीद करता हूँ कि पी.एम.आर.डी.एफ. की सफलता जारी रहेगी।

Jairam Ramesh

जयराम रमेश
ग्रामीण विकास मंत्री

भारत सरकार

प्रधानमंत्री ग्रामीण विकास फेलोज़

एक संक्षिप्त परिचय

प्रधानमंत्री ग्रामीण विकास फेलोज़ (पी.एम.आर.डी.एफ.) योजना भारत सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय के द्वारा चलाई जा रही है। पी.एम.आर.डी.एफ. उन होनहार युवा महिलाओं और पुरुषों के लिए लघु अवधि कार्य अवसर (तीन वर्ष) है जिनके पास कुछ शैक्षिक एवं व्यवसायिक अनुभव है, जिससे जिला प्रशासन को कार्यक्रम कार्यान्वयन में सुधार करने तथा आबादी के कमजोर वर्गों के साथ संबंध सुधारने में मदद मिलेगी। दीर्घ काल में इसका उद्देश्य विकास पेशेवरों का ऐसा संवर्ग विकसित करना है जो गरीबों और वंचित लोगों के लिए काम करने को प्रतिबद्ध हों। इसका तात्कालिक उद्देश्य विकास धारा से वंचित क्षेत्रों में विकास को गति प्रदान करना एवं योजनाओं के कार्यान्वयन को सुचारू रूप से चलाने के लिए जिला प्रशासन को सहयोग करना है।

पी.एम.आर.डी.एफ. की घोषणा केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री श्री जयराम रमेश के द्वारा 13 सितंबर, 2011 को भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री मनमोहन सिंह की उपस्थिति में की गई थी।

फेलोज़ का प्रालेख

वर्ष 2012 में, 156 फेलोज़ की भर्ती दो बैचों में की गई थी। इसके लिए न्यूनतम शैक्षिक योग्यता मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालयों से कृषि, पशुपालन, इंजीनियरिंग, मेडिसिन्स आदि विषयों में चार वर्ष की स्नातक डिग्री या मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालयों से स्नातकोत्तर डिग्री (जिनके पास स्नातक डिग्री तीन वर्ष या उससे कम की है)। कुछ वर्ष के अनुभव को प्राथमिकता दी गई।

टी.आई.एस.एस., मुम्बई के सहयोग से आयोजित अत्यधिक प्रतिस्पर्द्धी प्रक्रिया के जरिए चयन किया गया। समूह चर्चा और व्यक्तिगत साक्षात्कार के जरिए 8,560 आवेदनों में से 816 प्रतिभागी चुने गए। अंत में, प्रशिक्षण के लिए 156 उम्मीदवारों को चुना गया। लिंग, शिक्षा और अनुभव के मामले में यह समूह विविधतापूर्ण था। वर्तमान में कार्यरत 138 फेलोज़ में से 34 महिलाएं हैं तथा 100 स्नातकोत्तर हैं। निम्नलिखित चित्र से इन फेलोज़ की लिंग, सामाजिक वर्ग एवं शिक्षा आधारित विविधता का पता चलता है।

चित्र 1: फेलोज़ का लिंग आधारित विभेदीकरण

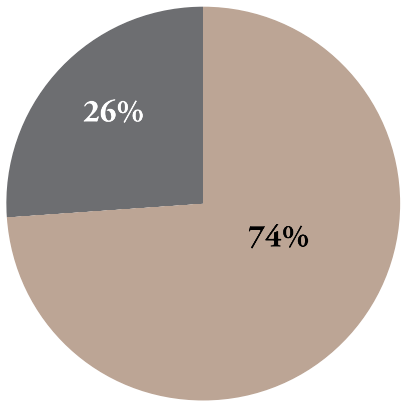

चित्र 2: स्नातकोत्तर स्तर पर फेलोज़ का शिक्षा आधारित विभेदीकरण

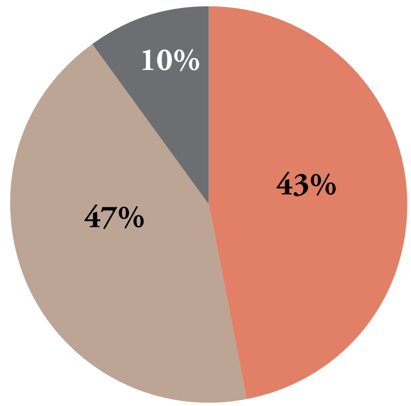

चित्र 3: फेलोज़ का सामाजिक वर्ग आधारित विभेदीकरण

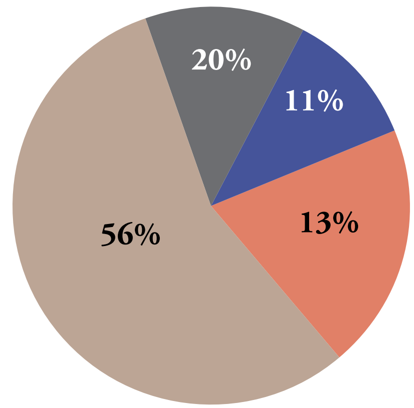

चुने गए उम्मीदवारों को काम पर तैनात करने से पहले टी.आई.एस.एस. में दो महीने का गहन प्रशिक्षण दिया गया तथा उसके पश्चात् जिलों में चार सप्ताह की प्रशिक्षुता (इंटर्नशिप) दी गई।

नियुक्ति

138 फेलोज़ नौ राज्यों में एकीकृत कार्य योजना (आइएपी) के तहत् शामिल 84 जिलों में काम कर रहे हैं। कुछ जिलों में जहाँ तीन फेलोज़ हैं, को छोड़कर प्रत्येक जिले में एक या दो फेलोज़ नियुक्त किए गए हैं। नियुक्ति का विवरण इस प्रकार है:

राज्य	फेलोज़ की संख्या	जिलों की संख्या जहाँ वे नियुक्त किए गए हैं
आन्ध्र प्रदेश	12	8
बिहार	16	10
छत्तीसगढ़	18	14
झारखंड	29	16
मध्य प्रदेश	15	10
महाराष्ट्र	4	2
ओडिशा	33	18
उत्तर प्रदेश	6	3
पश्चिम बंगाल	5	3

फेलोज़ की भूमिका

फेलोज़ जिला अधिकारी के मार्गदर्शन में काम करते हैं। उनके मुख्य कार्य निम्नलिखित हैं:

क. क्षमता निर्माण के लिए और अधिकार एवं हक़ हासिल करने में मदद के लिए गरीबों की संस्थाओं के साथ काम करना

ख. स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) और पंचायतों जैसी स्थानीय लोकतांत्रिक संस्थाओं की क्षमता निर्माण में सहयोग देना

ग. विकास खंड में स्थानीय क्षेत्रों का सामाजिक–आर्थिक विश्लेषण करना तथा लोगों द्वारा महसूस की जा रही जरूरतों को निर्धारित करने में योगदान करना

घ. स्थानीय क्षेत्र की योजनाओं में जिला प्रशासन की मदद करना

ङ. गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों, खासतौर से महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल कार्यक्रम, निर्मल भारत अभियान, एकीकृत जलागम प्रबंधन कार्यक्रम, राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम, एकीकृत कार्य योजना, एकीकृत बाल विकास सेवाएं, राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन, सर्व शिक्षा अभियान, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान जैसे कार्यक्रमों के बेहतर कार्यान्वयन में मदद करना

च. जिला प्रशासन द्वारा कार्यक्रम निस्तारण के अधिक समुचित तरीकों की खोज के लिए कार्य शोध करना

छ. प्रगतिशील परियोजनाएं बनाना और उनका क्रियान्वयन करना

ज. ग्रामीण विकास प्रयासों के बारे में प्रतिपुष्टि उपलब्ध कराना

फेलोज़ से यह अपेक्षा हैं कि वे गरीबों तक पहुँच कर उन्हें उनके अधिकार एवं हक़ सुलभ कराने में मदद करने तथा लोगों की शिकायत दूर करने में जिला प्रशासन की मदद करें। उनसे स्थानीय नियोजन, निष्पादन, समुदाय से बातचीत और परिणाम प्रबंधन के लिए नई सोच और सुझावों की अपेक्षा है। अनेक फेलोज़ ने विभिन्न स्रोतों से पूँजी लेकर प्रगतिशील परियोजनाएं शुरू की हैं और अपने प्रगतिशील विचारों को कार्य रूप में ढाला है जिससे गरीबों के जीवन में सीधे तौर पर सुधार हुआ है।

अपनी सीखने वाली भूमिका में प्रत्येक फेलो ने अपने कार्यों और उनके परिणामों का वर्णन दैनिक विवरण में किया। वे क्षेत्रीय और राष्ट्रीय संगोष्ठियों/सभाओं या योजना के तहत् आयोजित किसी संगोष्ठियों में शामिल हुए जिसने उन्हें अपने साथियों से विचारों के आदान–प्रदान, हालात के बारे में साझा समझ विकसित करने, अपनी संभावनाओं की तलाश करने, निजी संकटों से निपटने की क्षमताएं विकसित करने तथा भविष्य के लिए योजना बनाने में मदद करने का अवसर उपलब्ध कराया। उन्होंने सीखने के लिए अन्य आयोजनों में भी भागीदारी की तथा अध्ययन पाठ्यक्रमों, जब जब सरकार ने आयोजित किए, में भी भाग लिया।

पारिश्रमिक और अन्य लाभ

फेलोज़ को प्रशिक्षण अवधि के दौरान कुल 50,000 रुपये प्रति महीने स्टाइपेंड, पहले वर्ष 75,000 रुपये प्रति महीने स्टाइपेंड दिया जाएगा तथा फेलोशिप के दूसरे एवं तीसरे वर्ष में प्रदर्शन संतोषजनक होने की स्थिति में 10 प्रतिशत वृद्धि की जाएगी। उन्हें कार्यालय और परिवहन सुविधाएं जिला प्रशासन उपलब्ध कराता है। फेलोज़ आधिकारिक काम के लिए यात्रा करने पर उसके खर्चे की भरपाई तथा निश्चित कारणों पर निर्धारित छुट्टियों के भी हकदार हैं। फेलोज़ सरकार के कर्मचारी नहीं हैं। वे क्षतिपूर्ति के रूप में अपनी फेलोशिप की पूरी अवधि के दौरान स्टाइपेंड प्राप्त करते हैं। फेलोशिप सफलतापूर्वक पूरी करने पर उन्हें फेलोशिप प्रामणपत्र दिया जायेगा।

क्रियान्वयन व्यवस्था

जिला अधिकारी फेलोज़ का निरीक्षक होता है और उन्हें काम आवंटित करता है। जिलाधिकारी सबसे करीबी व्यक्ति भी है जो पी.एम.आर.डी.एफ. योजना से लाभ उठाता है। वह यह सुनिश्चित करता है कि फेलोज़ को सभी आवश्यक संसाधन सुलभ कराने के लिए सहायता उपलब्ध कराई जाए। राज्य में पी.एम.आर.डी.एफ. योजना के लिए प्रमुख सचिव (ग्राम विकास) उत्तरदायी अधिकारी हैं। राज्य पी.एम.आर.डी.एफ. सपोर्ट सैल का नोडल अधिकारी योजना की निगरानी और समन्वय, राज्यों में फेलोज़ की नियुक्ति एवं तबादले की देखरेख करता है और राज्य में ग्रामीण विकास के लिए प्रमुख सचिव तथा केंद्र सरकार के बीच संपर्क रखता है। उपयुक्त विशेषज्ञता वाला राष्ट्रीय स्तर का शैक्षिक संस्थान, वर्तमान में टी.आई.एस.एस., पी.एम.आर.डी.एफ. में कार्यक्रम सलाहकार और ज्ञान सहयोगी के रूप में काम करता है। कार्यक्रम सलाहकार फेलोज़ की भर्ती, चयन और आरंभिक अभिविन्यास (ऑरिएंटेशन) आयोजित करता है और उसके लिए संसाधन उपलब्ध कराता है तथा फेलोज़ को सलाह देता है एवं उनकी निगरानी रखता है। फेलोज़ के लिए विकास अभ्यास पर शैक्षिक कार्यक्रम तैयार करना और उपलब्ध कराना भी कार्यक्रम सलाहकार की जिम्मेदारी है। लोक कार्यक्रम और ग्रामीण प्रौद्योगिकी विकास परिषद् (कपार्ट) फेलोज़ को नियुक्त करता है तथा योजना के लिए प्रशासनिक एवं लॉजिस्टिक इंतजाम करता है। यह जिम्मेदारी अब राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका प्रोमोशन सोसायटी (एन.आर.एल.पी.एस.) के द्वारा उठाई जाएगी। अन्ततः भारत सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय के अन्तर्गत गठित कार्यक्रम सपोर्ट सैल, कपार्ट, राज्य सरकारों, सहयोगी शैक्षिक संस्थानों, फेलोज़ और योजना के कामकाज की निगरानी करने वाले अन्य संबंधित पक्षों के साथ मिलकर विभिन्न प्रकार की सुविधाओं के लिए कार्य कर रहा है।

भावी योजनाएं

फेलोज़ के लिए विकास अभ्यास में एमफिल/एमएससी/एमए डिग्री देने के लिए स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम चलाने की योजना बनाई गई है। टी.आई.एस.एस. यह पाठ्यक्रम, ई–सक्षम दूरवर्ती शिक्षा के माध्यम के साथ–साथ संपर्क सत्रों तथा क्षेत्र में उनके कार्य को समाहित करते हुए, आयोजित करेगा। फेलोज़ के नए बैच की शीघ्र ही भर्ती की जाएगी तथा पी.एम.आर.डी.एफ. स्कीम का विस्तार पूर्वोत्तर राज्यों में किया जाएगा। योजना के आंकलन के लिए अध्ययन कराने की योजना बनाई गई है जिससे योजना को और सुदृढ़ बनाने के सुझाव मिलेंगे।

पी.एम.आर.डी.एफ. योजना के बारे में अधिक जानकारी यहाँ उपलब्ध है:

www.rural.nic.in/pmrdfs/

www.pmrdfellows.wordpress.com/

www.facebook.com/pmrdfofficialpage

फेलोज़ की जुबानी

प्रिया तायड़े
गढ़चिरोली, महाराष्ट्र

शिक्षा एवं अनुभव के आधार पर मैं एक विकास पेशेवर थी परंतु ग्रामीण विकास के क्षेत्र में आना मेरे लिए एक खूबसूरत आकस्मिक घटना साबित हुई। इस अनुभव ने मुझे विभिन्न संसारों के दर्शन और अनुभव करवाए। जहाँ एक ओर सुंदर प्रकृति की आनंदमयी अनुभूति थी तो दूसरी तरफ मन को विच्छिन्न करने वाली ग्रामीण हकीकत – अपनी पूरी जिंदगी को कष्ट में काट देने का विचार ही मुझे तीव्र वेदना से भर देता है।

स्वतंत्रता के छह दशकों एवं अनगिनत नीतियों के बावजूद भी हम अपने नागरिकों के लिए उस एक मूलभूत ढाँचे को भी सुनिश्चित नहीं कर पाए हैं जो कि उनके इज़्ज़त से जीने की क्षमता को बढ़ा सके। मुझे अपनी व्यवस्था पर पूरा विश्वास है और मेरा मानना है कि केवल इसके द्वारा ही हम एक दूरगामी स्थिरता को प्राप्त कर सकते हैं। परंतु साथ ही साथ मैं देश में मौजूद क्रियान्वयन संकट से भी पूरी तरह भिज्ञ हूँ। मैं, व्यक्तिगत रूप से, नीति निर्धारकों की विचारधारा से शंकित हूँ अतः मैं उस स्थिति में होना चाहती थी जहाँ मैं तृणमूल स्तर पर रहते हुए वृहत् संरचना में योगदान दे सकूँ।

यह मेरा लक्ष्य है कि हर व्यक्ति स्वतंत्र रूप से अपने विकल्पों को चुनने में सक्षम हो! तार्किक विकल्प चुनने की क्षमता अच्छी शिक्षा और मनुष्य के प्रयासों से ही पैदा की जा सकती है। इस फेलोशिप के दौरान मेरे अंदर ऐसे अनुभव की उम्मीद जागी जहाँ सामुदायिक विकास के प्रयास लागू किए जा सकें और उनका विश्लेषण किया जा सके।

> यह फेलोशिप मेरे करियर में मील का पत्थर है। इसने न केवल मेरे ज्ञान में विस्तार किया अपितु जीवन के उन क्षेत्रों को भी छुआ जो जीवनशैली की मुख्यधारा से मीलों दूर थे। इसने मुझे व्यक्तिगत रूप से बढने में और साथ ही एक बेहतर नागरिक बनने में मदद की।

हम न केवल सेवा वितरण के पहलू लागू करने में कामयाब हुए बल्कि हमने विभिन्न परियोजनाओं की योजना भी बनाई। इनसे न सिर्फ लोगों का जीवन स्तर सुधरेगा बल्कि स्थानीय काम–धंधे को भी बढ़ावा मिलेगा। हमारा प्रयास है कि लोगों को अधिक से अधिक जानकारी दी जाए ताकि वे खुद ही चुनाव करने में सक्षम हो जाएं और विकास का अपना रास्ता तलाश सकें। इसके अलावा, हम ग्रामीणों को आसानी से सेवाएं सुलभ कराना चाहते हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए नए और आधुनिक विचारों को लाने के संस्थागत तरीके भी तैयार कर रहे हैं।

पी.एम.आर.डी.एफ. के आखिरी साल के दौरान काफी हद तक हम संस्थागत पर्यवेक्षण में ही शामिल रहे। हमने हर गाँव में चलाई गई सभी परियोजनाओं/कार्यों और कार्यक्रमों का रिकॉर्ड देखा। जब भी हमने गाँव का दौरा किया, हमने क्षेत्र में किए गए काम की जाँच की। जिले में सबसे कठिन काम तो ऐसे कार्य की स्थिति के बारे में विश्वसनीय आंकड़े प्राप्त करना था क्योंकि काम करने वाले दूरदराज के गाँवों में गए ही नहीं थे। संस्थागत पर्यवेक्षण की पहल से यह फायदा हुआ कि हम गाँव की स्थिति, उनकी जरूरतों और नई परियोजनाओं की योजना बनाने की

चुनौतियों को बेहतर ढंग से समझ गए। हालांकि हमें डर था कि कहीं बात उल्टी न पड़ जाए लेकिन इससे गाँव स्तर पर कर्मचारियों की उपस्थिति भी बढ़ी। ऐसे हालात में मुझे तो अपने प्रारंभिक दिनों की एक घटना याद आ गई जब एक गाँव में मेरा स्वागत किया गया और यह कहते हुए माला पहनाई गई "हम आजादी के बाद अपने गाँव में पहले सरकारी अधिकारी का स्वागत कर रहे हैं।" वह ऐसा पल था जब कुछ सूझा ही नहीं कि इसका क्या जवाब दें।

प्रारम्भ में, हमें सर्वेक्षण का काम सौंपा गया जिससे हमें पता लगाना था कि गाँव स्तर पर कैसा बुनियादी ढाँचा उपलब्ध है। इस सर्वेक्षण की सहायता से, हमने जिले के कुछ क्षेत्रों की पहचान की जहाँ बुनियादी ढाँचे का अभाव था। इससे हमें विभागों और संस्थाओं की दक्षता समझने में भी सहायता मिली।

मेरे साथी फेलो ने "नेट इन्फ्रास्ट्रक्चर इंडेक्स (एन.आई.आई.)" नामक एक सूचकांक विकसित किया जो यह निर्धारित करता है कि प्रत्येक गाँव में किस मानक की बुनियादी ढाँचागत सुविधाएं हैं। सबसे पहले हमने ऐसे गाँवों पर ध्यान दिया जहाँ की एन.आई.आई. बहुत कम थी। आखिरकार, हमने ऐसे गाँवों के समूह बनाए जहाँ प्रतिकूल सूचक नज़र आए। इसी के आधार पर हमने एक समूह विकास योजना विकसित की। हम चाहते थे कि भौतिक, आर्थिक और सेवा सम्बंधी बुनियादी सुविधाओं के अंतर को मिटाया जाए।

भौगोलिक हों या इलेक्ट्रॉनिक, संचार के मामले में गढ़चिरौली के अधिकतर गाँव जिला मुख्यालय से कटे हुए हैं। मैंने महसूस किया कि उनसे संपर्क करने और संवाद करने का कारगर तरीका रेडियो सेवाएं ही हो सकती हैं। हालांकि, जिले में पाँच भाषाएं बोली जाती हैं लेकिन फिर भी यही तरीका मुझे कारगर लगा। मुझे लगा कि सामुदायिक रेडियो परियोजना प्रसारण के विकल्प के साथ रोज़गार के बेहतर अवसर उपलब्ध कराने में अत्यधिक उपयोगी रहेगी। जब मैंने जिलाधिकारी को यह विचार बताया तो उन्होंने फौरन हाँ कर दी। हमने स्थानीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान केंद्र से प्रसारण केंद्र की जिम्मेदारी संभालने को कहा क्योंकि हमें आशंका थी कि यदि यह परियोजना किसी बाहरी संस्था को सौंपी गई तो गड़बड़ हो सकती है। तकनीकी मंजूरी मिलते ही इस परियोजना को जल्द ही कार्यान्वित किया जाएगा।

गढ़चिरौली बहुत बड़ा जिला है और उसकी आबादी बहुत कम एवं दूर–दूर बसी है। इसलिए जिले के लिए नियमित रूप से लोकप्रिय आधार पर सेवाएं उपलब्ध कराना संभव नहीं है। मालूम हुआ है कि बैंकों की कमी के कारण लोग मनरेगा में भी रुचि नहीं लेते। लोग महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम के तहत रोज़गार को वरीयता नहीं देते क्योंकि मजदूरी का भुगतान सीधे बैंक खातों में किया जाता है और उन्हें बैंक तक पहुंचने के लिए 90 किलोमीटर तक का सफर तय करना पड़ता है। भारतीय योजना आयोग ने एकीकृत कार्य योजना के माध्यम से बैंक नेटवर्क का विस्तार करने का फैसला किया तो हमने उसका लाभ उठाना चाहा। इसलिए जिलाधिकारी ने भी बैंकिंग नेटवर्क बढ़ाने का निर्णय लिया। पी.एम.आर.डी.एफ. ने बैंकिंग इकाइयां स्थापित करने में सक्रिय सहयोग किया। हम जिले में 14 नई अत्यंत लघु शाखा ले आए जो आंतरिक क्षेत्रों में रहने वाले लगभग डेढ़ लाख लोगों को सेवाएं प्रदान करतीं हैं।

इन समूह परियोजनाओं के अलावा, मैंने व्यक्तिगत रूप से दो कार्य किए। पहला, गढ़चिरौली में सार्वजनिक वितरण प्रणाली पर शोध किया। मैंने वर्तमान प्रणाली की चुनौतियों के साथ साथ इसकी व्यवस्था का विश्लेषण किया और इसकी क्षमता में सुधार के लिए सिफारिशें कीं। दूसरा, डीआरडीए के अधिकारियों की सहायता से, गढ़चिरौली में एक दुग्ध परियोजना बनाई जो उस समय तक दूर का सपना नजर आती थी।

पी.एम.आर.डी.एफ. मेरे कैरियर में मील का पत्थर साबित हुई है। इसने न सिर्फ मेरे क्षितिज को व्यापक बनाने में सहायता की बल्कि जीवन के उन क्षेत्रों को भी छुआ जो आधुनिक जीवन शैली से मीलों दूर थे। इसने मुझे व्यक्तिगत रूप से विकास करने में ही नहीं बल्कि बेहतर नागरिक बनने में भी सहायता की।

शीला मतंग
खूंटी, झारखंड़

मैं गुजरात में पैदा हुई और वहीं पली–बढ़ी। गरीबी और सम्बंधित मुद्दों से मेरा वास्ता सिर्फ पश्चिमी और दक्षिणी गुजरात तक ही सीमित था। मतलब यह है कि वहाँ कोई निजी अस्पताल और निजी स्कूल तक नहीं हैं। लेकिन मेरी यह सोच उस समय बदल गई जब मुझे चार अन्य लोगों के साथ एक महीने लंबे ग्रामीण व्यावहारिक कार्य के लिए ओडिशा के ढेंकनाल जिले में भेजा गया। मैंने पानी और नमक के साथ चावल खाकर दस दिन गुज़ारे, स्कूल की इमारत में ही सोई और वन अधिकार अधिनियम, 2006 के लिए समुदाय को एकजुट करने के लिए काम किया।

सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में दो साल के अनुभव के बाद मैं आदिवासी अधिकारों, खासकर प्राकृतिक संसाधनों के मालिकाना हक़ से जुड़े मुद्दों पर काम करना चाहती थी। झारखंड के व्यापक दौरे और पर्यटन के कारण मेरे जीवन में यह बदलाव या संक्रमण संभव हो पाया। यहाँ मुझे एहसास हुआ कि आर्थिक सशक्तिकरण के चक्कर में सामाजिक सशक्तिकरण कहीं पीछे छूट गया है। दरअसल व्यक्ति की बुनियादी जरूरत, भोजन, पूरी होने पर उसे अधिकारों और हक़ों के मुद्दों के लिए एकजुट किया जा सकता है। इसी बीच, मुझे पी.एम.आर.डी.एफ. के रूप में काम करने का अवसर मिला।

> जब समुदाय यह कहते हुए मेरे कार्य को पहचान दे कि "जब तक आप यहॉ हैं आप हमारे अधिकारों एवं पात्रताओं से हमें अवगत करवाते रहें", तब एक उपलब्धि का अहसास होता है।

मुझे झारखंड के खूंटी जिले में भेजा गया। काम के पहले चरण में हमने विकेन्द्रीकृत नियोजन के संबंध में स्थानीय प्रशासन और पंचायती राज संस्थाओं के सदस्यों और ग्राम सभाओं को मजबूत बनाने पर जोर दिया। हमने केंद्र सरकार की प्रमुख योजनाओं और राज्य प्रायोजित कार्यक्रमों के बारे में जानकारी देने, समुदायों को एकजुट करने और प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण के माध्यम से स्वयं सहायता समूहों के बैकवर्ड और फॉरवर्ड लिंकेज मुद्दों को हल करने का काम किया। हमने नॉन टिम्बर वन उत्पादों, विशेष रूप से लाख के संग्रह, भंडारण और बिक्री के लिए किसान समितियां बनाने पर ध्यान दिया। इसका उद्देश्य बाज़ार और सौदेबाज़ी की क्षमता बढ़ाने के लिए किसानों को संगठित करना और बिचौलियों को दूर करना भी था। हमारा उद्देश्य लाख की खेती के बारे में वैज्ञानिक प्रशिक्षण देना और खरीदारों के साथ नेटवर्किंग को विकसित करना भी था।

हम जिले के अधिकांश अंदरूनी विकास खंडों में से दो में लाख खेती व्यवसाय से जुड़े 200 किसानों को संगठित करने में सफल रहे। गैर सरकारी संगठनों, जागरूकता प्रशिक्षण और पुलिस एवं समुदाय की कार्यशालाओं के साथ नेटवर्किंग के माध्यम से मानव तस्करी का विरोध करने से मुझे आंतरिक संतुष्टि मिलती है।

जब समुदाय आपको पहचाने और कहे "आप जब तक हैं हमें हमारे अधिकारों के प्रति जागरूक कर दीजिए" तो इससे एहसास होता है कि हाँ हमने कुछ अच्छा काम किया है और उसका अच्छा सिला मिला है।

डॉ कुमार शुभाशीष
मयूरभंज, ओडिशा

बचपन से ही मैं हमेशा सपना देखा करता था कि अपने देश के जरूरतमंद लोगों के लिए कुछ करूं। इसलिए 2012 में जब पी.एम.आर.डी.एफ. के बारे में सुना तो मैंने फौरन आवेदन कर दिया। मैंने सोचा कि इससे देश के गरीबों के लिए कुछ करने का अच्छा मौका मिलेगा। कई मित्रों और रिश्तेदारों ने मेरा विरोध भी किया और कहने लगे कि मैं एक प्रतिष्ठित संस्थान से डॉक्टरेट हूँ और मुझे वामपंथी उग्रवाद प्रभावित क्षेत्र में काम से जुड़े पद के लिए आवेदन नहीं करना चाहिए। लेकिन इस विरोध के बावजूद मैंने हिम्मत नहीं हारी और आगे बढ़ा और सौभाग्य से मेरा चयन भी हो गया।

विज्ञान का छात्र होने के बावजूद मुझे सामाजिक विज्ञान का भी थोड़ा बहुत ज्ञान है। टी.आई.एस.एस., मुम्बई और मयूरभंज जिला प्रशासन के द्वारा आयोजित दो महीन के प्रशिक्षण के बाद मुझे लगता है कि मैंने विकास के क्षेत्र के बारे में बहुत जानकारी प्राप्त कर ली है। इस सबके लिए मैं इन दोनों का आभारी हूँ।

मुझे महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम के कार्यों की एक मौसम आधारित (महीने वार) योजना चलाने का काम सौंपा गया। यह योजना इसलिए चलाई जा रही थी ताकि क्षेत्र के लोग आसानी से जान जाएं कि वे विभिन्न मौसमों या महीनों के अनुसार किस प्रकार का काम करें। अपने साथी आर आर राउत के साथ मैंने मयूरभंज की भौगोलिक और मौसमी परिस्थितियों के अनुसार मासिक आधार पर महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम में स्वीकृत कार्यों को वर्गीकृत किया। यह काम बाद में उड़िया भाषा की पुस्तक में भी प्रकाशित हुआ जो अक्टूबर 2012 में ओडिशा सरकार द्वारा चलाए गए ग्राम सभा सशक्तिकरण कार्यक्रम (जीएसएसके) के अंग के रूप में मयूरभंज जिले की पल्ली और ग्राम सभाओं के लिए लिखी गई थी। इसके बाद तो हमें प्रत्येक गांव से सड़कों और तालाबों, समरेखीय बंधों, खाई, खाद गड्ढे, सोख पिट, बांधों, रिचार्ज गड्ढों आदि के सम्बंध में मनरेगा परियोजनाओं के अनेक प्रस्ताव मिले।

> मैं ग्रामीण विकास मंत्रालय को इस शानदार अवसर के लिए धन्यवाद देता हूँ जिसने मुझे गरीब समुदाय के लिए कुछ करने का मौका दिया।

मुझे कपटीपाडा उप संभाग का उत्तरदायी अधिकारी नियुक्त किया गया ताकि पल्ली और ग्राम सभाओं का समुचित संचालन किया जा सके। मैं 2012 में जीएसएसके के लिए एक विकास खंड (मोरोडा) का प्रभारी भी रहा। जीएसएसके प्रक्रिया के दौरान मैंने सम्बंधित क्षेत्र में 15 दिन बिताए। मैंने एक सौ से अधिक पल्ली सभाओं का आयोजन किया और उनमें भाग लिया। मैंने इस प्रक्रिया को सफल बनाने के लिए पुलिस, विकास खंड अधिकारियों, एपीओ, पीइओ, ग्राम पंचायत उत्तरदायी अधिकारियों और पीआरआई के साथ पूरा समन्वय किया। अपनी टीम के साथ पल्ली सभाओं में भाग लेने के लिए जनता को एकजुट किया।

नए जिलाधिकारी राजेश पी पाटिल के संरक्षण में हमने अपने जिले में तीव्र पर्यवेक्षण प्रणाली शुरू की। मैंने अपने दल के साथ, इस पर्यवेक्षण प्रणाली के लिए प्रारूप विकसित किया और अधिकारियों के 25 दल बनाए। इस प्रणाली के अनुसार, डीएम ने एक दल को प्रत्येक दिन एक ग्राम पंचायत का दौरा करने और क्षेत्र में सभी विकास कार्यों की देखरेख का निर्देश दिया। जिले के दौरे से एक दिन पहले तक कोई ग्राम पंचायत नहीं सौंपी जाती थी क्योंकि यह एक अनियमित दौरा होता था। इस कार्यक्रम से हमें विभिन्न ग्राम पंचायतों में विकास कार्य की वास्तविक स्थिति जानने में सहायता मिली।

मुझे मध्याह्न भोजन योजना के संचालन पर नज़र रखने का काम मिला। इसके लिए मैंने 200 से अधिक स्कूलों का दौरा किया ताकि भोजन की गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सके। मुख्य रूप से भाषा की समस्या के कारण जिले में बहुत से बच्चे बीच में ही स्कूल छोड़ देते हैं। हमारे दल ने जिले के भीतरी इलाकों में शिक्षा साथी तैनात किए। शिक्षा साथी दसवीं पास स्थानीय लड़का/लड़की हो सकते हैं। उसे अपनी स्थानीय भाषा में छात्रों को पढ़ाने में सक्षम होना चाहिए। स्कूल का दौरा करने के दौरान मैंने बच्चों के माता पिता से बातचीत की और उन्हें समझाया कि अपने बच्चों को स्कूल भेजें। हमारे दल ने शिक्षकों के लिए कार्यशालाओं का आयोजन किया और एक कार्यक्रम "मु भी पढ़ीबी" शुरू किया। हमने शैक्षिक वर्ष 2013–14 के लिए एक विशाल नामांकन अभियान भी चलाया। मैंने मामलों की व्यक्तिगत जांच के माध्यम से जनता की सभी शिकायतें भी दूर कीं।

फिलहाल, मैं मयूरभंज जिले में महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम योजना के समुचित कार्यान्वयन और शिक्षा संबंधी सभी मुद्दों तथा जनता की शिकायतों का काम देख रहा हूँ। गरीबों के लिए कुछ करने का अद्भुत अवसर प्रदान करने के लिए मैं ग्रामीण विकास मंत्रालय को धन्यवाद देता हूँ। इस दौरान मुझे सबसे बड़ी सीख यही मिली कि सरकार की आलोचना करना आसान है लेकिन क्षेत्र की कठिनाइयों को समझना उतना ही मुश्किल है।

रवि धानुका
मुंगेर, बिहार

'विकास' शब्द का संकेतार्थ हमारी सोच से बहुत भिन्न है। दरअसल विकास के क्या घटक हैं इस पर बहस पूरी तरह निर्धारित नहीं है और मुझे नहीं लगता कि कभी ऐसा हो भी पाएगा। हालांकि विकास के मतलब की गहराई में जाएं तो शायद ये बुनियादी हक़ीक़त सामने आए कि जनसंख्या का विशाल वर्ग "सड़क, बिजली, पानी" और "रोटी, कपड़ा और मकान" से वंचित है। इन बुनियादी जरूरतों को एक ही विकास संस्था पूरी कर सकती है और वह है सरकार।

पी.एम.आर.डी.एफ. मेरे लिए ऐसा मंच साबित हुई जिसे मैं कभी भूल नहीं सकता – यह शासन के लिए ऐसा अवसर था जो सबसे ज्यादा मायने रखता है। इस दौरान मेरे मन में हमेशा कुछ न कुछ संदेह बना रहा – हमेशा ख्याल आते, यदि परिकल्पना के अनुसार कुछ नहीं किया गया तो क्या यह योजना काम करेगी ?

पिछला एक वर्ष असीम आनंद, संतोष, कुंठा, सीखने और न सीखने का भी समय रहा है। इस काम के दौरान मुझे अलग तरह का अनुभव प्राप्त हुआ। एक उत्प्रेरक के रूप में, मैं लंबे समय से अटकी हुई चीजों को आगे बढ़ाने में कामयाब रहा। अपने साथियों के साथ मैंने भूमिहीनों के लिए भूमि तलाशी। जिले की अधिकांश आंतरिक पंचायतों में कुछ विद्यालय और आंगनवाडी बिना भवनों के ही चल रहे थे। कक्षा 1 से 8 तक के सब बच्चे एक ही कमरे में पढ़ाए जा रहे थे, कुछ स्कूल आधे दशक से अधिक समय से तदर्थ छतों तले ही चलाए जा रहे थे। लेकिन हम 70 प्रतिशत से अधिक मामलों में भूमि तलाशने में सफल रहे जो बहुत बड़ी सफलता थी।

> पी.एम.आर.डी.एफ. स्कीम एक ऐसा मंच था जिसको मैं चूक नहीं सकता था। यह मेरे लिए एक ऐसा अवसर था जिससे प्रशासन को वहाँ ले जाया जा सकता था जहॉं उसकी सबसे ज्यादा आवश्यकता है।

मुझे आशा है कि हमारे प्रयास के बाद 500 से अधिक बच्चे शिक्षा पाने में समर्थ होंगे और अब उन्हें खुले में धूप या ठंड या भारी वर्षा का सामना नहीं करना पड़ेगा। हमने जीविका, जो कि बिहार में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका लक्ष्य को लागू करने के लिए उत्तरदायी संस्था है, के साथ सहयोग की पहल की और – निर्धारित समय से बहुत पहले इसे मुंगेर ले आए। हम जीविका के सहयोग से रोज़गार मेले के आयोजन के दौरान ग्रामीण आदिवासी में से 150 युवाओं को मुख्यधारा के संगठित क्षेत्र में रोज़गार दिलाने में कामयाब रहे। उम्मीद है कि वे अपना काम जारी रख सकेंगे और अब कभी गरीबी का बदसूरत चेहरा नहीं देखेंगे। सरकार के एक राजदूत के रूप में, हमने संघर्ष प्रभावित क्षेत्रों में सांप्रदायिक सद्भाव का संदेश पहुंचाया। हमने पंचायत स्तर पर सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन किया ताकि विभिन्न समुदायों को साथ आने का मौका मिले और बच्चों एवं स्थानीय कलाकारों को अपनी कलात्मक प्रतिभा दिखाने का अवसर मिले। लोगों के प्रतिनिधि के रूप में, हमने प्रशासन के बारे में लोगों की शिकायतें

सुनीं और जितना सम्भव हुआ उनकी समस्याएं दूर करने की कोशिश की। एक पेशेवर प्रबंधक के रूप में, हमने महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम जैसी कुछ प्रमुख योजनाओं के कार्यान्वयन की मशीनरी में फेरबदल करने, भ्रष्टाचार कम करने एवं पारदर्शिता बढ़ाने के लिए ग्लोबल पोज़ीशनिग सिस्टम मैपिंग जैसी प्रौद्योगिकी का उपयोग कराने के लिए प्रशासन के साथ काम किया।

कुछ चुनौतियों के बावजूद नौकरशाही के साथ मेरा कार्य अनुभव बहुत आकर्षक रहा। हमें काम करने में मन्दगति की कठिनाइयां, विभिन्न कार्यकर्ताओं का विश्वास जीतने और कार्य जारी रखने के लिए उन्हें एक साझा मंच पर लाने, बहुत अधिक औपचारिकताओं के साथ फंसे होने और प्रणाली के तहत लगातार अपने आप को स्थापित करने जैसी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। लेकिन काम के दौरान मैंने सीखा कि यदि दृढ़ इच्छा शक्ति हो तो काम हो ही जाएगा। दरअसल कार्यक्रम का कोई भी डिजाइन इतना कमजोर नहीं हो सकता कि वह चलाया ही नहीं जा सके बशर्ते सुशासन हो और उसे फिर से डिजाइन करने के लिए प्रतिपुष्टि हो। मैंने सीखा कि ऐसे अनेक गुमनाम हीरो हैं जो बिना किसी सराहना और पुरस्कार के लगन से अपना काम कर रहे हैं, पूरी ईमानदारी के साथ वे रोज कुछ न कुछ नया कर रहे हैं। हालांकि, एक साल के अंत में, मैं एक बार फिर से उलझन में हूँ कि अगला साल कैसा होगा।

मुझे अब भी पूरा विश्वास नहीं है कि काम की यही रफ्तार, जो हमने उपलब्ध की है, जारी रखी जा सकती है या नहीं, लेकिन इतना विश्वास है कि प्रयास जारी रहेगा। मैं यह भी नहीं जानता कि यह राह मुझे किस मंजिल पर ले जाएगी। लेकिन इसकी पूरी आशा है कि यह सफर कुछ सार्थक और रोमांचक होगा। दरअसल यह बात सबसे ज्यादा मायने रखती है कि मुझे लोगों के लिए काम करने का अवसर मिला–और उपलब्धियों की संभावना, भले छोटी ही सही, मुझे काम जारी रखने की प्रेरणा देगी।

लक्ष्मीधर सिंह
सुंदरगढ़, ओडिशा

भारत के दूरदराज के गाँवों, विशेष रूप से आदिवासियों के विकास के लिए काम करने की उम्मीद के साथ मैंने पी.एम.आर.डी.एफ. के लिए आवेदन किया था। प्रसिद्ध सिमलिपाल राष्ट्रीय जैव मंडल के करीब जंगलों से घिरे एक गाँव में मेरा जन्म और पालन–पोषण हुआ। मैं मयूरभंज जिले के दूरदराज और बहुत पिछड़े गाँव से सम्बन्ध रखता हूँ। बचपन में, मैंने गरीबी, शोषण और भेदभाव के सभी रूपों को बारीकी से देखा और अनुभव किया है। हमारे गाँव में अच्छा स्कूल ही नहीं था इसलिए मुझे पढ़ाई के लिए गाँव से बाहर जाना पड़ता था। मैं अनुसूचित जनजाति और अनुसूचित जाति के लिए सरकार द्वारा चलाए जा रहे आवासीय विद्यालय में रुकता था। इसलिए बचपन में ही मैंने फैसला किया कि बड़ा होकर ग्रामीण क्षेत्रों में मेहनतकश जनता के लिए ही काम करूंगा। देश के दो प्रमुख सामाजिक विज्ञान संस्थानों, खासतौर से टी.आई.एस.एस. में पढ़ाई के दौरान मुझे ग्रामीण गरीबी के विभिन्न पहलुओं का पता चला और मैंने सभी तरह के शोषण के उन्मूलन का काम करने की ठान ली।

मुझे ओडिशा के सुंदरगढ़ जिले में तैनात किया गया। उस समय से जिले में विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों और नवाचारों में शामिल होने का मौका मिला। प्रारम्भ में, मैं जिला और ग्रामीण स्तर पर विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों और नीतियों की जानकारी के प्रसार के लिए जरूरी स्थायी संरचना बनाने के लिए जिले और गाँव संसाधन केंद्र की परिकल्पना से जुड़ा। इसका मकसद गाँव वालों के अधिकारों और हकों के बारे में सभी आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराने के माध्यम से ग्रामीण समुदायों को सशक्त बनाना था। इस दौरान कुछ समय आदर्श ग्राम पंचायतों की परिकल्पना और उनके कार्यान्वयन में भी शामिल रहा। प्रारम्भिक चरण में जिला प्रशासन ने आदर्श ग्राम पंचायत के रूप में प्रत्येक विकास खंड में दो ग्राम पंचायत बनाने का फैसला किया जो ग्रामीण जनता को सभी जानकारी प्रदान करें। हमने सोचा कि पहले लोगों को पर्याप्त जानकारी मिल जाए तो वे अपने अधिकारों और हक़ों की माँग भी करने लगेंगे।

> एक फेलो की तरह काम करते हुए मैंने जन प्रतिनिधियों, समुदाय के नेताओं और सामाजिक संगठनों के साथ सम्बन्ध स्थापित किये जिसने मेरे व्यक्तित्व निर्माण में मदद की।

बाद में, मैं जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, सुंदरगढ़ के पास गया और रोज़गार, आजीविका और आवास योजनाओं पर केंद्र सरकार के प्रमुख कार्यक्रमों से जुड़ गया। मैं राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम और इंदिरा आवास योजना के नियोजन और पर्यवेक्षण जैसी प्रमुख गतिविधियों में शामिल रहा। नियमित क्षेत्र भ्रमण के दौरान विभिन्न हितधारकों से बात करना मेरे क्रियाकलापों में शामिल था और जहाँ तक भी संभव होता बेहतर कार्यान्वयन के लिए उन्हें छोटे–छोटे रचनात्मक विचारों का सुझाव भी देता।

फेलो के रूप में काम करने के दौरान सीखने का अनुभव बहुत अच्छा रहा है। विशेष कर मुझे इससे अनुसूचित जनजातियों के सम्बंध में और ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के मुद्दे पर पर्याप्त जानकारी मिली। मैंने समुदाय के नेताओं, पंचायती राज संस्थाओं के सदस्यों और नागरिक समाज संगठनों के साथ व्यक्तिगत सम्बंध बनाए जिससे मेरे व्यक्तित्व विकास में सहायता मिली।

श्रद्धा पांडेय
गढ़वा, झारखंड

मैं पेशे से वकील हूँ। शुरू में मुझे गैर सरकारी संगठनों और नीति बनाने वाले संस्थानों के लिए काम करने का अवसर मिला। कानून के पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में ही मुझे लगा कि कानून की पाठ्यपुस्तकें और व्यावहारिक ज्ञान दोनों ही मेरे लिए महत्वपूर्ण हैं। पाठ्य पुस्तकों में जो लिखा है वह वास्तविकता से काफी अलग है इसका अहसास मुझे कार्य अनुभव के बहुत प्रारम्भ में ही हो गया था। इसलिए जब मुझे पी.एम.आर.डी.एफ. के रुप में काम करने का अवसर मिला तो मैंने इसे तुरंत स्वीकार कर लिया। इसने मुझे उन लोगों के लिए काम करने का अवसर दिया जिनके बुनियादी मानव अधिकार रोज़ाना छीने जा रहे हैं तथा जो निरंतर भय में जी रहे हैं।

> जब मुझे पी.एम.आर.डी. फेलो बनने का अवसर मिला तब मैंने उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया क्योंकि इससे मुझे उन लोगों के लिए काम करने का मौका मिला जिनके मानवाधिकार प्रतिदिन छीने जाते हैं तथा जो प्रतिपल भय के माहौल में अपना जीवन काट रहे हैं।

पी.एम.आर.डी.एफ. में शामिल होने से पहले भी मैं भारत के संघर्ष प्रभावित राज्यों में रही हूँ लेकिन झारखंड के गढ़वा जिले के बारे में कभी नहीं सुना था जहाँ अब मैं तैनात हूँ और जो अब मेरा घर भी है। गढ़वा जिले की सीमा तीन राज्यों –उत्तर प्रदेश, बिहार और छत्तीसगढ़ से मिलती है और इस प्रकार इसके तीन उप संभागों गढ़वा, नगर उंतरी और रांका की तीन विभिन्न सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक स्थितियाँ भिन्न हैं।

मैंने ज्यादातर महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम, स्वर्णजयंति ग्राम स्व–रोज़गार योजना, सर्व शिक्षा अभियान, इंदिरा आवास योजना, एकीकृत कार्य योजना और एकीकृत जल प्रबंधन कार्यक्रम जैसी प्रमुख योजनाओं के बेहतर कार्यान्वयन में सहयोग किया है। मुझे जिम्मेदारी दी गई थी कि उस काम का अध्ययन करूं जो इन योजनाओं के अन्तर्गत जिले में पहले किया जा चुका है। उसके बाद उन क्षेत्रों में लोगों की काम की जरूरत या समर्थन की आवश्यकता का पता लगाने के लिए, जरूरत के आधार पर, सर्वेक्षण करने का काम भी मुझे मिला। आवश्यकता आधारित सर्वेक्षण के लिए जिले में व्यापक क्षेत्र कार्य (फील्डवर्क) भाामिल है जिसके द्वारा मुझे लोगों के साथ बातचीत और समुदाय के विभिन्न वर्गों की जरूरतों को सुनने का मौका मिला। विभिन्न ग्रामीण विकास योजनाओं का पर्यवेक्षण और मूल्यांकन भी मेरे काम में सम्मिलित था जिसने मुझे विभिन्न स्तरों पर सहयोग करने का अवसर दिया।

इसके अलावा, मैंने जिले के लिए कानूनी और तकनीकी सहायता के क्षेत्र में भी काम किया। वहाँ अदालतों में अनेक मामले लम्बित थे जिनमें जिला अधिकारियों का अधिकतर समय व्यतीत होता था। मैंने मानक प्रारूप विकसित करके कागजात शीघ्र दाखिल करने में उनकी सहायता की। मैं शिकायत निवारण मार्ग (ट्रैकिंग) प्रणाली विकसित करने में जिले का समर्थन कर रही हूँ जिससे लोग मोबाइल फोन और इंटरनेट के माध्यम से शिकायतें दर्ज कराने और उन पर की गई कार्रवाई का पता लगाने में समर्थ हो सकेंगे क्योंकि जिले में शिकायत निवारण कार्यालय पहले से ही काम कर रहा है।

नियोजन के क्षेत्र में भंदरियां कार्य योजना (बीएपी) का विकास सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि रही है। जिले के बहुत कम विकसित और संघर्ष से प्रभावित विकास खंड में से भंदरिया एक है। मैंने नियोजन, अनुसंधान और भंदरियां कार्य योजना बनाने में भी सहायता की। सरकार ने जल्दी ही बीएपी अनुमोदित कर दी और सौभाग्य से विकास की गतिविधियों को चलाने की योजना की राशि की पहली किस्त भी मिल चुकी है।

जिले में बिताए गए हर पल ने मुझे अधिक धैर्यवान बनाया। इसने मुझे महसूस कराया कि गंभीर और निरंतर प्रयासों के परिणाम हमेशा सकारात्मक निकलते हैं।

वामसी कृष्णा नुकाला
करीमनगर, आन्ध्र प्रदेश

सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में काम शुरू करने के कुछ समय बाद ही महसूस हुआ कि मुझे यहाँ नहीं बल्कि कहीं और होना चाहिए। उस काम में मेरा मन ही नहीं लगता था क्योंकि मेरा मन तो विकास के क्षेत्र में अटका हुआ था। मैंने सामाजिक उद्यमिता में स्नातकोत्तर के लिए टी.आई.एस.एस. में दाखिला लिया। स्नातकोत्तर के दौरान मैंने विभिन्न सामाजिक मुद्दों के बारे में सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त किया और इन समस्याओं को हल करने के लिए कुछ ज्ञान भी प्राप्त किया। लेकिन मेरे अकादमिक अध्ययन के दौरान विकास से सम्बंधित विभिन्न मुद्दों पर काम करने के ज्यादा अवसर नहीं मिले। हालांकि पाठ्यक्रम के जरिए भी मुझे क्षेत्र गतिविधियों के लिए कुछ अवसर मिला। जब मैंने पी.एम.आर.डी.एफ. के लिए आवेदन किया तो सोचा कि इससे दो फायदे होंगे। एक, यह मुझे देश के कठिन भौगोलिक क्षेत्रों में काम करने में सक्षम बनाएगा जो एक तरह से अच्छी शिक्षा प्राप्त करने का सबसे बढ़िया तरीका है। दो, यह नियमित तंत्र का भाग हुए बिना ही मुझे सरकार के साथ काम करने का मौका देगा तथा साथ ही प्रशासनिक पक्ष के मुद्दों को समझने में भी सहायता करेगा।

जब मैंने पी.एम.आर.डी.एफ. में आवेदन किया तब मैंनें यह सोचा कि यह दो कारणों से श्रेष्ठ है पहला, यह मुझे देश के दुर्गम क्षेत्रों में काम करने का मौका देगा तथा दूसरा, यह मुझे सरकार में बिना उसका नियमित हिस्सा बने उसके साथ काम करने का मौका देगा।

प्रशिक्षण के दौरान मुझे ग्रामीण और शहरी विभाजन, स्त्री–पुरुष के बीच भेद, गरीबी, स्वास्थ्य, शिक्षा, प्रवास जैसे विकास के विभिन्न मुद्दों के बारे में बताया गया और सहभागितापूर्ण ग्रामीण मूल्यांकन, ग्लोबल पोज़ीशनिग सिस्टम मैपिंग और एसपीएसएस जैसे विभिन्न साधनों से परिचित कराया गया। इसके अतिरिक्त प्रशिक्षण के दौरान ही शिक्षाविदों, चिकित्सकों, गैर सरकारी संस्थाओं के कर्मियों और नौकरशाहों के साथ विचार–विमर्श सत्र भी आयोजित किए गए। इनमें उन्होंने विकास का अपना नजरिया पेश किया जो मेरे लिए काफी फायदेमंद साबित हुआ।

क्षेत्र प्रशिक्षण के लिए मुझे तल्लीन नामक एक गाँव में भेजा गया। मुझे ग्रामीणों की सामाजिक – आर्थिक स्थिति और गाँव के अन्य परिदृश्य को समझने की जिम्मेदारी दी गई तथा प्रशिक्षण के दौरान प्रदान किए गए विभिन्न कौशल इस्तेमाल करने का निर्देश दिया गया। यह अभ्यास ग्रामीण अर्थव्यवस्था, संस्कृति और आजीविका के विभिन्न पहलुओं की जानकारी देने में बहुत उपयोगी रहा। तल्लीन गाँव के बाद, मुझे आंध्र प्रदेश के क़रीमनगर जिले में तैनात किया गया। आंध्र प्रदेश में राज्य सरकार ने प्रत्येक पी.एम.आर.डी.एफ. को विशेष रूप से आदिवासी बहुल तीन आंतरिक मंडल (ब्लाक) आवंटित किए। हमें पी.एम.आर.डी.एफ. की अवधि के दौरान मंडलों में से किसी एक में रहने के लिए कहा गया। मैं क़रीमनगर जिले के मंथानी मंडल में रहा।

आजीविका पर काम करने में मेरी बहुत रूचि रही है, खासतौर से समुदाय प्रबन्धित छोटे उद्यमों में मेरी बहुत रुचि है जिसमें मुझे दक्षता प्राप्त है। हमारे जिला प्रशासन ने जिले के आंतरिक भागों में कुछ आजीविका गतिविधियों को आरम्भ करने की योजना बनाई और सौभाग्य से मुझे आजीविका योजनाओं की तैयारी में शामिल होने का मौका मिला। हमने (मेरे सहयोगी और मैं) गुणात्मक (सामूहिक चर्चा केंद्र और सहभागितापूर्ण ग्रामीण मूल्यांकन) एवं मात्रात्मक (ग्राम सर्वे) माध्यमों के जरिए मंडलों की संसाधन रूपरेखा बनाई। आंकड़ों के विश्लेषण और समुदाय के साथ लंबे विचार विमर्श के बाद, स्थानीय संसाधनों, कौशल और बाजार पर विचार करते हुए परियोजनाओं को अंतिम रूप दिया गया।

इन नियोजित आजीविका गतिविधियों के तहत तुषार कोकून बैंक की स्थापना की गईं जिसने तुषार रेशम पर आश्रित सभी हितधारकों की आजीविका को मजबूत बनाया। कोकून बैंक को मार्च 2013 में शुरू किया गया था। इस परियोजना का उद्देश्य बिचौलियों को हटाना और तुषार किसानों को उचित मूल्य प्रदान करना और बुनकरों एवं रेशम चरखे चलाने वालों के लिए उचित मूल्य पर साल भर काम सुनिश्चित करना है।

आजीविका कार्यक्रम के तहत चलाई गई एक अन्य परियोजना लघु परिधान इकाइयों की स्थापना की थी। ये इकाइयां महिलाओं को आजीविका के लिए अपने सिलाई कौशल का उपयोग करने के मंच के रूप में काम करेंगी। यह परियोजना हाल ही में शुरू हो गई है और इन इकाइयों में स्कूली वर्दी तैयार की जाएंगी।

जिले में एक साल समुदाय के साथ काम करने का अनुभव बहुत संतोषजनक रहा है। मुझे इस बात ने बहुत ज्यादा प्रोत्साहित किया कि मैं उन क्षेत्रों में काम कर सका जिसमे मेरी रुचि है। मुझे छोटे–छोटे बदलाव नजर आने लगे हैं जैसे हमारे हस्तक्षेप के फलस्वरूप 12 बुनाई परिवारों की आय में वृद्धि बाजार संयोजन में सुधार के कारण हुई और स्थानीय खपत में वृद्धि की वजह से 300 किसानों की आय भी बढ़ी है।

अंशुमान गुप्ता
सूरजपुर, छत्तीसगढ़

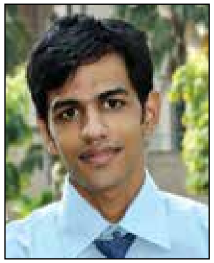

मैं देश के विभिन्न शहरों में पला बढ़ा हूँ। गाँव के बारे में मेरी इतनी ही सोच थी कि वहां हरे खेत, लम्बी घुमावदार सड़कें, विशाल खाली स्थान, स्वच्छ हवा और अच्छी तरह से घुला–मिला समाज होता है। यही विचार मुझे गाँव की तरफ खींचता था। फिर बहुत जल्दी अपने कैरियर में मैंने फैसला किया कि मैं ऐसे गाँव की खोज करूंगा और ग्रामीण जीवन को समझने में कम से कम कुछ समय तो जरूर बिताऊगा। सौभाग्य से अभियांत्रिकी की पढ़ाई के दौरान अपने कॉलेज के पास के गाँवों का दौरा किया। इस दौरान मैंने लोगों के साथ बात भी की। इससे मुझे अहसास हुआ कि गाँवों के लोगों को भी गंभीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और सब कुछ मेरी कल्पना के गाँव जैसा हरा–भरा और खुशहाल नहीं है। तब मैंने फैसला किया कि मुझे ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के लिए काम करना चाहिए। भाग्य से, ग्रामीण प्रबंधन में स्नातकोत्तर के साथ ही मुझे बहुत लंबे समय के लिए गाँवों में रहने और गाँव के जीवन की बारीकियों को समझने का पहला मौका मिल ही गया।

एक फेलो के रूप में पिछले दस माह एक उतार चढ़ाव भरी यात्रा के समान रहे। मैं भाग्यशाली हूँ कि मेरे जिला कलैक्टर एक प्रभावशाली व्यक्ति हैं जिन्होंने मुझे कई विकास कार्यक्रमों में सम्मिलित किया जैसे महात्मा गाँधी ग्रामीण रोजगार गारण्टी अधिनियम, स्टेट स्किल डवलपमेण्ट मिशन और विभिन्न आजीविका सम्बन्धित योजनायें जो वर्तमान में जिले में क्रियान्वित की जा रहीं हैं।

2011 में शिक्षा पूरी करने के बाद, विकास क्षेत्र के साथ मेरा वास्ता राजस्थान में एक आदिवासी जिले के सरकारी प्राथमिक स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने के दौरान पड़ा। वहां मुझे एक प्रतिष्ठित सीएसआर के साथ में काम करने का अनुभव हुआ। बाद में मैंने कृषि के क्षेत्र में सूक्ष्म सिंचाई के उपयोग के सामाजिक – आर्थिक प्रभाव पर कार्यवाई अनुसंधान परियोजना में भी काम किया। इन दोनों अवसरों ने मुझे इस क्षेत्र में बहुमूल्य अनुभव प्रदान किया। हालांकि गाँव समाज की बेहतरी के लिए सीधे योगदान करने की कसक तो फिर भी बाकी ही रही। लेकिन पी.एम.आर.डी.एफ. में शामिल होने का अवसर मिला तो लगा कि उस तमन्ना के भी पूरे होने का वक्त आ गया।

पी.एम.आर.डी.एफ. के रूप में हमें सरकारी प्रशासन तन्त्र में काम करने अवसर मिला और व्यक्तिगत अनुभव हुआ कि महत्वपूर्ण ग्रामीण विकास योजनाएं जैसे कि स्वर्णजयंति ग्राम स्व–रोज़गार योजना, महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम, एकीकृत जल प्रबंधन कार्यक्रम, निर्मल भारत अभियान आदि कैसे काम करती हैं। इसने मुझे यह सोचने के लिए विवश किया कि इससे सीखने का एक बहुमूल्य अनुभव होने

जा रहा है। इसके अलावा, हमें उन कमियों को समझने का मौका मिला जो हमारी व्यवस्था की नाक में दम कर रही हैं और इन योजनाओं के वितरण और आउटरीच में सुधार के लिए सार्थक योगदान करने का अवसर भी मिला। फेलोशिप के पहले दो महीनों के दौरान मिले प्रशिक्षण ने तो चीजें और भी स्पष्ट कर दीं। अब हमें अच्छी तरह मालूम हो गया कि जहां हम जिलों में प्रवास के दौरान रहने वाले हैं वहाँ हमसे फेलोज़ के रूप में क्या करने की अपेक्षाएं हैं तथा उन क्षेत्रों में क्या योगदान देने की अपेक्षाएं हैं।

पिछले दस महीनों में एक फेलो के रूप में जीवन उतार–चढ़ाव वाला यानी रोलर कोस्टर की सवारी जैसा रहा है। सौभाग्य से मुझे ऐसे ओजस्वी जिलाधिकारी के साथ काम करने का मौका मिला जो वर्तमान में जिले में चलाई जा रही मनरेगा, राज्य कौशल विकास लक्ष्य और विभिन्न अन्य आजीविका परियोजनाओं जैसी अनेक योजनाओं में शामिल रहे हैं। जिला ग्रामीण विकास संस्था में काम करते हुए मुझे कई और योजनाओं के प्रावधानों को समझने का मौका मिला। अब मेरा सारा ध्यान विभिन्न योजनाओं पर केंद्रित हो गया है ताकि लक्षित लाभार्थियों को अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके।

हालांकि, इन योजनाओं के कार्यान्वयन में क्षेत्रीय कर्मचारियों के साथ काम करना हमेशा आसान नहीं रहा। क्षेत्रीय कर्मचारियों और उच्च अधिकारियों को समझाने के मेरे प्रयास हर बार सफल ही रहे हों ऐसा भी नहीं है। विभिन्न योजनाओं को मिलाना भी बड़ी चुनौती रहा है क्योंकि लाभार्थी के चयन और कार्यान्वयन की प्रक्रिया के लिए हर योजना के अलग मापदंड है। हालांकि, इन मुद्दों के साथ हर रोज जूझने से मुझे इन योजनाओं का छोटे से छोटा विवरण और विकास क्षेत्र में शामिल जटिलताओं को समझने में बहुत सहायता मिली। मैं महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम, स्वर्णजयंति ग्राम स्व–रोज़गार योजना और राष्ट्रीय बागवानी लक्ष्य के माध्यम से सब्जी बागवानी के लिए एक अभिसरण कार्यक्रम पर महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों के साथ काम करते हुए कुछ ठोस काम करने में सफल रहा। हम मशरूम की खेती का प्रशिक्षण देकर कुछ महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों के लिए आय का एक दूसरा स्रोत उपलब्ध कराने में सफल रहे। इन विनम्र प्रयासों ने मुझे और भी अधिक व्यवहारिक बना दिया है। मैंने सीखा कि गाँव के गरीब घर की आमदनी में मामूली वृद्धि से भी एक बहुत बड़ा योगदान मिलता है।

कविंद्र कुलकर्णी
सोनभद्रा, उत्तर प्रदेश

सिविल सर्विसेज की तैयारी के दौरान इंटरनेट से मुझे पी.एम.आर.डी.एफ. के बारे में पता चला। मुझे इसी तरह के अवसर की तलाश थी और पी.एम.आर.डी.एफ. में शामिल होकर मैं खुशी से फूला नहीं समाया था। लेकिन इस कार्यक्रम में शामिल होने की एक और अच्छी वजह यह थी कि मैं माननीय मंत्री श्री जयराम रमेश का बहुत बड़ा प्रशंसक हूँ। जब वह पर्यावरण मंत्रालय में आए तो उन्होंने लवासा शहर और वन क्षेत्र के विकास में पंचायत भागीदारी जैसे कुछ अहम मुद्दों पर काम किया जिससे मैं बहुत प्रभावित हुआ। इस तरह की वैचारिक कार्रवाई से कमजोर क्षेत्र और सतत् विकास की उनकी काफी गहरी समझ के बारे में पता चलता है।

आलोचना करना जितना आसान है कार्रवाई करना उतना ही अधिक कठिन। मैं दोष देने से पहले सरकारी तंत्र के साथ काम करना चाहता था। मैं हैदराबाद में पी.एम.आर.डी.एफ. कार्यक्रम में शामिल हुआ। प्रशिक्षण अवधि के दौरान, मैंने और मेरे सहयोगियों ने चयनित विकास खंड में बहुत काम किया। हमें शुरू में जिला प्रशासन ने भी बहुत समर्थन दिया।

> मैं इसी प्रकार के अवसर खोज रहा था और मैं बहुत खुश हूँ कि मैं पी.एम.आर.डी.एफ. स्कीम से जुड़ा।

हमारे जिला आयुक्त ने तंत्र को समझने में हमारी सहायता की और हमें क्षेत्र प्रशिक्षण के लिए चोपन खंड सौंपा गया। चोपन खंड भौगोलिक विविधता के मामले में बहुत अनोखा और उत्तर प्रदेश के अन्य विकास खंडों से तो बिलकुल अलग है। यहां अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों की अधिक आबादी, अधिक गरीबी और घने वन का क्षेत्र हैं। हमने स्थानीय भूगोल और संस्कृति को समझने के लिए दो गाँव चुने। इन गाँवों में अनुसूचित जनजातियों में चेरो, बैगा, खडवाड और गोंड शामिल हैं। उनके टोले गाँव के अन्य समुदायों से दूर हैं। उनके पास पानी, स्वास्थ्य और आजीविका जैसी बुनियादी सुविधा भी नहीं हैं।

हम गाँव में रुके और हमने विकासात्मक गतिविधियों में भागीदारी के लिए निर्वाचित प्रतिनिधि और स्थानीय लोगों को प्रेरित करने की कोशिश की। हमने सामाजिक अंकेक्षण की बैठक का आयोजन किया जिसमें हमें बताया गया कि सचिव और प्रधान खराब गुणवत्ता का काम करके पैसा बना रहे हैं। सचिव से पूछने पर लोगों की बात हमें सही लगी। हमने सचिव को बताया और कहा कि उसे पंचायत भवन में ग्रामीणों को जवाब देना पड़ेगा। अगले दिन, उनके कई लोग आए और आते ही घटिया और अधूरे काम के बारे में बहस करनी शुरू कर दी। मैंने उन्हें समझाया कि लड़ाई मत करो बल्कि समस्या का कारण समझने की कोशिश करो और तय करो कि काम कब तक पूरा हो जाएगा। काफी चर्चा के बाद, सचिव ने कहा कि वह एक महीने में काम पूरा करने की कोशिश करेगा। इस तरह के समाधान से ग्रामीण खुश और संतुष्ट हुए। हमने सरकार के कार्यक्रमों के बारे में स्थानीय लोगों के साथ–साथ सरकारी कर्मचारियों से भी संपर्क किया। इस तकनीक ने दोनों पक्षों पर रचनात्मक दबाव बनाने में सहायता की।

प्रशिक्षण पूरा करने के बाद, मैं जिला मुख्यालय वापस आ गया। मैंने महसूस किया कि उच्च अधिकारियों की सहायता के बिना मैं कोई भी परिवर्तन नहीं आ सकता। हमने एकीकृत कार्य योजना, सर्व शिक्षा अभियान, मध्याह्न भोजन, समेकित बाल विकास सेवाएं और महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम जैसी अन्य योजनाओं, नवाचार निधि आदि को लक्ष्य बनाया। मैंने अपने कार्यक्रम और लक्ष्यों के बारे में लोगों को जागरूक बनाने के लिए स्थानीय नेताओं, विचारकों और स्थानीय प्रतिनिधियों से संपर्क किया। सर्वेक्षण और विश्लेषण के बाद, उन समस्याओं को दूर करने के लिए जिला आयुक्त और सम्बन्धित अधिकारियों से संपर्क किया। वहां भ्रष्टाचार सबसे बड़ा मुद्दा था और इस बारे में एक घटना तो मुझे हमेशा याद रहेगी। हमने कस्तूरबा गाँधी स्कूल का दौरा किया और अपने दौरे के बारे में जिला प्रशासन को रिपोर्ट दी। रिपोर्ट में सुरक्षा, पीने के पानी, स्वास्थ्य और स्वच्छता की समस्याओं का उल्लेख था तथा यह भी बताया गया था कि वहां चाहरदीवारी नहीं है जिससे किशोरियों की सुरक्षा को बहुत खतरा है। इस बीच उच्च अधिकारियों की देरी के कारण एक लड़की ने मानसिक और यौन उत्पीड़न के कारण आत्महत्या कर ली। उसके अभिभावकों ने हत्या का आरोप लगाया। मैंने अपने आप से पूछा कि हत्यारा कौन है? मैं बहुत निराश हुआ लेकिन फिर भी अपना काम जारी रखा लेकिन भ्रष्टाचार ने मेरी गति बाधित कर दी।

अमृता धीमन
गया, बिहार

मैं हमेशा बिहार में लोगों के बीच काम करना चाहती थी। एम बी ए करने के बाद, पहले हैदराबाद और फिर मुंबई जाना हुआ। एक दोस्त के माध्यम से मुझे पी.एम.आर.डी.एफ. के बारे में तब पता चला जब आवेदन करने का आखिरी दिन था। पी.एम.आर. डी.एफ. बनने से पहले, मैंने लोगों पर केंद्रित विकास के लिए समर्पित एक गैर सरकारी संगठन चलाने की योजना बनाई थी। सौभाग्य से, मैं आज पी.एम.आर.डी.एफ. हूँ और विकास को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए जो कुछ भी थोड़ा–बहुत मैं कर सकती हूँ, वह करने की कोशिश कर रही हूँ।

गाँवों में लोगों के पास बहुत अच्छे विचार हैं और वे यह भी जानते हैं कि उपलब्ध संसाधनों का उपयोग कैसे करना चाहिए। यह सब मैंने उस समय देखा जब उन्हें सिंचाई के लिए चिमनी की जरूरत थी और उन्होंने चिमनी के रूप में पानी की एक खाली बोतल का ही उपयोग कर लिया। इस तरह के बड़े–छोटे नवाचारों की भरी–पूरी विविधता है जो वे लोग कर रहे हैं। इन लोगों, खासकर महिलाओं ने मुझे बहुत प्रेरित किया है। मैंने गर्भवती मजदूरों को बच्चा जनने की तिथि तक काम करते देखा है। पी.एम.आर.डी.एफ. के रूप में मुझे उस दर्द और ताकत का ज्यादा एहसास हुआ जब मैं खुद भी उसी हालत से गुजरी। मैंने उनकी स्वास्थ्य सुविधाओं और जच्चा–बच्चा की हालत में सुधार लाने के लिए काम करने का फैसला किया।

> मेरे चार साल के कार्पोरेट जगत के अनुभव और उस दौरान प्राप्त हुए ज्ञान ने मेरी जिला स्तरीय टीम का महत्वपूर्ण सदस्य बनने में मदद की।

गया जिले में, मैंने एकीकृत कार्य योजना के तहत विभिन्न नए विचारों की अवधारणा और कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जैसे आंगनवाड़ी केन्द्रों एवं प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में मध्याह्न भोजन के लिए धुएं रहित चूल्हों, कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालयों में सौर आवेशन (चार्जिंग) स्टेशनों की स्थापना और आवधिकों, पुस्तकों और पत्रिकाओं के साथ विकास खंड स्तर पर पुस्तकालयों की स्थापना करना। मेरे काम में विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए गरीब परिवारों के मेधावी छात्रों के लिए अनुशिक्षण (कोचिंग) की सुविधा उपलब्ध कराना भी शामिल रहा। मुझे विश्वास है कि सशक्तिकरण के माध्यम उपलब्ध कराना ही सच्चा कौशल है और इससे व्यक्ति अपनी रोजी कमा सकते हैं। जिले में विभिन्न योजनाओं के धन से कई कौशल विकास पहल की गई हैं।

मैं मानती हूं कि मनरेगा जैसी योजनाएं संकट में प्रवास रोकने के लिए अच्छा साधन हैं। जानकारी देने और लोगों की भागीदारी बढ़ाने के लिए जिले में कई कदम उठाए जा रहे हैं।

पी.एम.आर.डी.एफ. होने के नाते मुझे लोगों को करीब से जानने, उनसे सीखने और उनके साथ काम का मौका मिला है। कॉर्पोरेट जगत के साथ चार साल के अपने अनुभव और इस प्रक्रिया में प्राप्त ज्ञान से मुझे जिले का महत्वपूर्ण सदस्य बनने में सहायता मिली है।

अरिंदम बनर्जी
पश्चिम मिदनापोर, पश्चिम बंगाल

टी.आई.एस.एस., मुम्बई से स्नातकोत्तर का एक साल पूरा करने के बाद और फिर तीन–तीन नौकरी करने के बाद भी मैं ज्यादातर चीजों के बारे में यकीनी तौर पर कुछ नहीं कह सकता था सिवाय इसके कि मैं यात्रा करना और नए स्थानों का अनुभव लेना चाहता था, लोगों की कहानियाँ और उनके संघर्ष, जीवन और प्रेरणाओं के बारे में सुनना चाहता था। यद्यपि टी.आई.एस.एस. के दिनों से ही संघर्ष, उग्रवाद और विकास के मुद्दों में मेरी रुचि रही है इसलिए पी.एम.आर.डी.एफ. ही मेरे लिए स्वाभाविक पसंद थी।

सीधे पश्चिम मिदनापोर में लालगढ़ और झारग्राम जैसे क्षेत्रों में काम करने के विचार और लोगों एवं उनकी जरूरतों की कहानियों को सुनने की उत्सुकता में मुझे पता ही नहीं चला कि कब मुझे पी.एम.आर.डी.एफ. के रूप में चुन लिया गया। प्रारंभिक प्रशिक्षण सत्र और अन्य साथियों के साथ अच्छी तरह से बिताए एक महीने के बाद, क्षेत्र में जाने का समय भी जल्दी ही आ गया।

अपने काम की प्रकृति के बारे में लोगों को समझाने में मुझे अक्सर कठिनाई महसूस हुई। देश में ज्यादातर लोगों के लिए प्रशासनिक सेवाएं और गैर सरकारी संगठन विकास परिदृश्य के दो विपरीत सिरों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऐसे हालात में स्वतंत्र स्थान बनाने की कोशिश करना और बदलाव को सुगम बनाना अगर असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य होता है। मेरा प्रयास जिले में अधिक से अधिक विकास खंडों, गाँवों और पंचायतों की यात्रा करना था। पी.एम.आर.डी.एफ. के आठ महीने होने पर, आज मैं खुद को धन्यवाद देता हूँ कि मैंने इस तरह की रोचक यात्रा का हिस्सा बनने का विकल्प चुनकर कुछ गलत नहीं किया।

> मैं भाग्यशाली हूँ कि मुझे विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने का अनुभव प्राप्त हुआ और कई मुद्दों पर जानकारी प्राप्त हुई।

देर शाम राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम के कार्य स्थलों पर, दूरदराज के गाँवों में कुछ घंटे बिताने के बाद जिला मुख्यालय पर लौटते हुए, साल की पत्तियों के उत्पाद बनाती महिलाओं के बीच छोटे सामुदायिक सभागृह में, प्राथमिक शिक्षकों के एक उद्यमी समूह के साथ अंतिम मध्याह्न भोजन चखकर और छोटी सी लड़की के स्वर में डैफोडिल की आवाज सुनकर जो अनुभव मिला उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। सचमुच ऐसा महसूस होता है कि यह अद्वितीय अनुभव हैं।

सौभाग्य से मैं कई क्षेत्रों के संपर्क में रहा और कई मुद्दों और समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। क्षेत्र की अपनी यात्रा में, मैंने स्थाई समस्याओं के साथ मोहभंग मजदूरों को देखा और प्रदान की गई सेवाओं के बारे में लोगों की शिकायतें सुनीं। फिर भी लालगढ़ में महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम स्थल पर दोपहर के समय

श्रमिकों को जी–जान से खुशी के साथ अपनी बात सुनते और बात करते देखा तो मुझे बेहतर समाज और बेहतर जीवन के लिए आशा की एक किरण दिखाई दी। अपने सीमित अधिकारों और सुविधाओं को पूरी तरह जानते हुए, मैंने अगले कुछ वर्षों के दौरान अधिक परिणाम दिखाने की संभावना वाले क्षेत्रों में हस्तक्षेप करने का फैसला किया। ग्रामीण कारीगर समूहों, महिला स्वयं सहायता समूहों, प्राकृतिक रेशा आधारित दस्तकारों, कारीगरों और युवाओं के साथ काम करते हुए, मैं अब दृढ़ता के साथ महसूस करता हूँ कि कुछ प्रेरणा और सही बाज़ार संपर्क से उनके सपनों को साकार करने की अधिक से अधिक संभावना पैदा की जा सकती है।

कोलकाता में जादवपुर विश्वविद्यालय से स्नातक करने के दौरान, साहित्य का अध्ययन करते समय मैं अकसर समकालीन साहित्य में सामाजिक वास्तविकता के प्रतिबिम्ब की कमी के बारे में बहस करने लगता था। कुछ वर्ष बाद जब मैं साल, प्याल और मोहुल के पेड़ों के विशाल झुरमुट के बीच घूमने और आशा, निराशा और सपनों के अनगिनत आख्यान सुनने के लिए निकला तो महसूस किया कि साहित्य इस तरह के अनुभवों से ही पैदा होता है।

संभवतः निकट भविष्य में जब मैं इस फेलोशिप को पूरा करूँगा और यहाँ बिताए समय के बारे में पीछे मुड़कर देखूँगा, तो मुझे पूरी आशा है कि तब मेरे इस विश्वास की पुष्टि ही होगी कि हम सभी अपने जीवन में अपने ही विकल्पों से नियंत्रित होते रहे हैं।

आरती मिश्रा
बालाघाट, मध्य प्रदेश

एम बी ए ग्रामीण प्रबंधन में स्नातकोत्तर के बाद, मैंने गुजरात के आदिवासी विकास विभाग द्वारा स्थापित समिति के साथ विकास पेशेवर के रूप में कैरियर शुरू किया। यह एक सपने के सच होने जैसा था। संगठन में साल भर लम्बे कार्यकाल के दौरान मुझे न सिर्फ आदिवासी शिक्षा के लिए काम करने का अवसर मिला बल्कि अपने अकादमिक ज्ञान और कौशल को निखारने में भी सहायता मिली। हालांकि मैंने महसूस किया कि फाइलें, दिशानिर्देश, नोट शीट और अस्वीकार विचारों के साथ अपने संघर्ष में मैं कहीं खो गई हूँ। लेकिन असली खुशी का पल तो तब आया जब क्षेत्र के दौरे के दौरान, छात्रों ने मुझे बताया कि खेल के नए मैदान के बाद कैसे स्कूल के प्रति उनका प्यार शुरू हुआ, उन्होंने मुझे हाल ही में लागू ई–शिक्षण परियोजना के साथ जुड़ने के प्रयासों, अपनी पहली कैरियर परामर्श कार्यशाला का आनंद और ये भी बताया कि कैसे उनकी अव्यवस्था अब एक बेहतर स्थिति में आ गयी है। ये छोटे–छोटे बदलाव थे लेकिन मैं भी उनका हिस्सा थी, या मैं उन्हें आगे बढ़ाने का साधन बनी थी। मगर मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि तो वह फोन कॉल थी, जब इन बच्चों ने मुझे फिर से वापस आने या जितना जल्दी सम्भव हो क्षेत्र की यात्रा करने के लिए कहा।

पी.एम.आर.डी.एफ. में शामिल होने के लिए मेरी प्रेरणा दुर्गम क्षेत्रों में जाकर भी सरकार के साथ काम करना और संरचित रणनीतियों और गतिविधियों के साथ एक अच्छी अवधारणा वाले मिशन का हिस्सा बनने की इच्छा थी। आपस में एक दूसरे से सीखने और पिछड़े क्षेत्रों में विकास को सुविधाजनक बनाने की संभावना ने मुझे बहुत आकर्षित किया। इस के अतिरिक्त काम करने के अवसर और सरकार के कुछ बेहतरीन अधिकारियों के साथ ज्ञान का आदान–प्रदान इस पी.एम.आर.डी.एफ. का एक और दिलचस्प पहलू रहा।

> बालाघाट में एक पी.एम.आर.डी. फेलो के रूप में मुझे व्यक्तिगत और प्रोफेशनल की तरह बढ़ने में मदद प्राप्त हुई।

बालाघाट में पी.एम.आर.डी.एफ. के रूप में इस आखिरी साल के दौरान मुझे खुद को व्यक्तिगत और पेशेवर दोनों रूप में विकसित करने में सहायता मिली। यहाँ मुझे पंचायत सचिव से लेकर राज्य के हर स्तर के अधिकारियों और लोगों के साथ काम करने और बातचीत करने का मौका मिला। कार्य के प्रारम्भिक चरण में मुझे जिले के परिदृश्य को समझने में सहायता मिली और मैंने विभिन्न विकास योजनाओं के बारे में अपने ज्ञान का विस्तार किया। बालाघाट जिला प्रशासन विकास योजनाओं के प्रभावी और कुशल कार्यान्वयन के लिए विभिन्न तकनीकी उपायों के साथ नए प्रयोग कर रहा है। मैंने भी जिले में एक ऐसी ही परियोजना में काम किया जो जिले में निर्माण कार्यों में देरी से निपटने के लिए विकसित कार्य प्रबंधन प्रणाली थी। मैं एकीकृत कार्य योजना की परियोजना की रूपरेखा बनाने में भी शामिल थी।

पिछले एक साल के दौरान, मेरा मुख्य उद्देश्य कार्य के क्षेत्र की पहचान करना रहा है ताकि मैं अपने पूरे कौशल और ज्ञान के साथ जिले में अधिक प्रभावी ढंग से कार्य कर सकूँ। मुझे अब भी इसका औचित्य साबित करना है कि मेरे इन छोटे–छोटे कार्यों से जिले को कैसे फायदा हुआ। जहाँ तक उपलब्धियों का सम्बन्ध है तो मुझे लगता है कि सोने से पहले अभी मुझे मीलों आगे जाना है।

फेलोज़ का प्रालेख

रमेश रेड्डी ईस्ट गोदावरी जिले में महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी योजना के लाभार्थियों के साथ बातचीत करते हुए।

अनंत कृष्णन आर. के.

आदिलाबाद, आन्ध्र प्रदेश

तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर से कृषि अभियांत्रिकी में बी टेक और खाद्य एवं कृषि प्रक्रिया अभियांत्रिकी (प्रोसेस इंजीनियरिंग) में एम टेक।

अनंत ने एम एस स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन के साथ एक वैज्ञानिक के रूप में दो साल काम किया है। ओडिशा के कोरापुट जिले में आदिवासी किसानों के साथ वाटरशैड प्रबंधन कार्य, भूमि एवं जल संरक्षण कार्यक्रम की योजना बनाने और लागू करने तथा किसानों के सामुदायिक विकास के काम के साथ उन्होंने जैव औद्योगिक वाटरशैड कार्यक्रम में भी कार्य किया है।

"सरकार के साथ काम करने से सेवा वितरण तंत्र की कार्य प्रणाली और प्रदर्शन को समझने की गहरी अंतःदृष्टि मिलती है।"

राजेन्द्र कोंडेपती

ईस्ट गोदावरी, आन्ध्र प्रदेश

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास से केमिकल इंजीनियरिंग में बी टेक और के. ली. कुआन यू स्कूल पब्लिक पॉलिसी–नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर और जोर्जटाउन यूनिवर्सिटी, वाशिंगटन डीसी से सार्वजनिक नीति (पब्लिक पॉलिसी) में स्नातकोत्तर डिग्री।

राजेन्द्र ने मॉडल शिकायत निवारण विधेयक का मसौदा तैयार किया जो संसदीय स्थायी समिति के पास भेजा गया तथा उन्होंने आन्ध्र प्रदेश लोकायुक्त विधेयक का मसौदा भी तैयार किया जिसे राज्य विधानमंडल में पेश किया जाना है। वह तीन सदस्यीय टीम का हिस्सा थे जो 8 करोड़ रुपये के स्पाइस ग्राइंडिंग और स्टर्लाइजेशन प्लांट के नियोजन और निष्पादन के लिए जिम्मेदार थी। यह प्लांट लगभग 150 लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार उपलब्ध कराता है।

"पी.एम.आर.डी.एफ. के रूप में प्राप्त व्यवहारिक अनुभव मेरी अकादमिक शिक्षा का पूरक है।"

नरेंद्र गारिडी

करीमनगर, आन्ध्र प्रदेश

जवाहरलाल नेहरू टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी, हैदराबाद से इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन में बी टेक तथा टी.आई.एस.एस., मुम्बई से सामाजिक उद्यमिता में एम ए।

नरेंद्र ने सामाजिक उद्यम विकास, सॉफ्टवेयर विकास और शिक्षा के क्षेत्र जैसे विभिन्न क्षेत्रों में पाँच वर्ष काम किया है। उन्होंने सामाजिक विपणन, सामाजिक प्रभाव आंकलन और सामाजिक नेटवर्क विश्लेषण केंद्रित कार्यों में भी भाग लिया है।

"पी.एम.आर.डी.एफ. मुझे गरीब से गरीब लोगों के साथ काम करने और उनकी समस्याओं को सीधे सर्वोच्च प्रशासनिक मंच पर रखने का अनोखा अवसर उपलब्ध कराती है।"

नुकाला वामसी कृष्णा

करीमनगर, आन्ध्र प्रदेश

बी टेक (इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग) तथा टी.आई.एस.एस., मुम्बई से सामाजिक उद्यमिता में एम ए।

वामसी कृष्णा ने दो साल से अधिक समय तक विप्रो टेक्नोलॉजीज़ के साथ सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में काम किया है। उन्होंने कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (सीएसआर) से संबंधित विप्रो की गतिविधियों के लिए स्वयं सेवा भी की है।

"जमीनी स्तर पर अनुभव हासिल करने और विकासात्मक चुनौतियों को समझने के लिए पी.एम.आर.डी. फेलो की तरह काम करना एक बेहतरीन अवसर है।"

प्रतिमा नालाबोलू

खम्मम, आन्ध्र प्रदेश

वी एन आर विग्नना ज्योति इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद से इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग में बी टेक तथा टी.आई.एस.एस., मुम्बई से सामाजिक कार्य में एम ए।

प्रतिमा ने ढ़ाई साल आईटी क्षेत्र में काम किया है। यह कार्य प्रोग्रामिंग और विश्लेषण एवं व्यापार प्रवाह से संबंधित था।

"पी.एम.आर.डी.एफ. ने मेरे अनुभव को समृद्ध बनाया जिससे मैं आदिवासी लोगों को समझ सकी। इसने मुझे जिला प्रशासन के कामकाज की आंतरिक जानकारी भी उपलबध कराई।"

सुरेश बाबू जी.

खम्मम, आन्ध्र प्रदेश

जवाहरलाल नेहरू टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी, हैदराबाद से मैकेनिकल इंजीनियरिंग।

सुरेश ने युगांतर, जो कि एक स्वतंत्र अनुसंधान, वकालत और आउटरीच संस्था है, के साथ तीन साल काम किया है। शोध सहयोगी के रूप में उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी सुविधाओं के प्रावधान (पीयूआरए) से संबंधित विभिन्न परियोजनाओं पर काम किया है। सुरेश ने ग्रामीण क्षेत्रों में आइ आर डी ए के लिए बीमा के निष्पादन और संभावनाओं पर भी काम किया है।

"मैंने स्थानीय प्रशासन और आदिवासियों के बीच सहयोगी के रूप में काम करने, प्रशासन की कार्यप्रणाली को समझने तथा उनमें से एक होने के नाते; आदिवासियों को विकास की प्रक्रिया का हिस्सा बनाने के लिए इस फेलोशिप को चुना।"

कतमगरि बालाया

श्रीकाकुलम, आन्ध्र प्रदेश

डॉ बी आर अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय, हैदराबाद से बी ए और पांडिचेरी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, पांडिचेरी से सामाजिक कार्य में स्नातकोत्तर।

एक सामुदायिक आयोजक के रूप में तीन वर्ष तक कतमगरि ने सहभागितापूर्ण ग्रामीण मूल्यांकन (पीआरए) का उपयोग करते हुए स्कूल छोड़ने वाले बच्चों और आजीविका के मुद्दों पर समुदाय के सदस्यों के साथ काम किया है। वह बच्चों के लिए फंड जुटाने के कार्यक्रमों की योजना बनाने और आयोजित करने से जुड़े रहे हैं।

> “*विकास कार्यक्रमों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए जिले के युवाओं के कौशल एवं क्षमता का उपयोग करने का मेरा विचार है।*”

पूजा बी.वी.

श्रीकाकुलम, आन्ध्र प्रदेश

जी एम प्रौद्योगिकी संस्थान, दावाणगेरे, कर्नाटक से कम्प्यूटर विज्ञान में बी ई।

> “*मैं लोगों की आशाएं पूरी करने में जिला प्रशासन के समर्पण को देखना चाहती थी।*”

चेतन यार्लागड्डा

विशाखापट्टनम, आन्ध्र प्रदेश

जवाहरलाल नेहरू प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हैदराबाद के स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर से शहरी और क्षेत्रीय नियोजन में बी ई।

चेतन ने सरकार और कॉरपोरेट सेक्टर एवं गैर सरकारी संगठनों के साथ विभिन्न पदों पर छह साल काम किया है। उन्होंने शहरी नियोजन और विकास पर तथा आजीविका और ग्रामीण रोजगार के मुद्दों पर भी काम किया है।

> *"पी.एम.आर.डी.एफ. सरकारी तन्त्र प्रणाली के साथ काम करने और क्रांतिकारी बदलाव की दिशा में प्रगतिशील योगदान करने का एक अच्छा अवसर है।"*

के बालकृष्ण रेड्डी

विशाखापट्टनम, आन्ध्र प्रदेश

जैव प्रौद्योगिकी में स्नातक और स्नातकोत्तर।

बालकृष्ण ने श्री बायोटेक लैबोरेटरीज़ के साथ आणविक जीवविज्ञानी के रूप में चार साल कृषि के क्षेत्र में काम किया और वे आनुवांशिक रूप से संशोधित बैंगन की कीट–प्रतिरोधी किस्म विकसित करने के लिए सार्वजनिक निजी भागीदारी परियोजना का भी हिस्सा रहे। उन्होंने एमएस स्वामीनाथन फाउंडेशन के साथ स्टेट बैंक ऑफ इंडिया यूथ फॉर इंडिया फेलो के रूप में भी काम किया है।

> *"मुझे पी.एम.आर.डी.एफ. कार्यक्रम ने सामाजिक विकास, नीतियों, योजनाओं और प्रशासन से संबंधित विभिन्न विषयों की जानकारी से अवगत कराया है।"*

हर्ष वर्धन चिरुवेल्ला

विजियानगरम, आन्ध्र प्रदेश

उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद से बी ई और टेक्सास ए एंड एम विश्वविद्यालय से एम एस।

हर्ष वर्धन स्टार्टअप कम्पनी में एक पेटेंट उत्पाद की बिक्री और विपणन से जुड़े रहे हैं। उन्होंने आपूर्ति श्रृंखला विश्लेषक के रूप में एक्सेंचर के लिए भी काम किया है।

"गाँव का एक्सपोजर एक सीखने का अनुभव था जिसने वितरण प्रणाली, लास्ट माइल गैप और आदिवासी संस्कृति में मेरा ज्ञानवर्धन किया – तथा सबसे महत्वपूर्ण–इसने मुझे विशेषकर युवाओं एवं स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के साथ घुलने–मिलने का अवसर दिया।"

डी श्याम सुंदर राव

वारंगल, आन्ध्र प्रदेश

लोयोला कॉलेज, चेन्नई से समाजशास्त्र में बी ए (ऑनर्स) तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, हैदराबाद से प्रबंधन में स्नातकोत्तर।

श्याम ने डॉ. रेड्डीज फाउंडेशन, हैदाराबाद की डॉ. रेड्डीज लेबोरेटरीज की कॉरपोरेट सोशल रेस्पोंसिबिलिटी टीम के साथ काम किया है। वहाँ उन्होंने जीवन कौशल, व्यक्तित्व विकास और संचार कौशल पर प्रशिक्षण सत्रों का आयोजन किया। उन्होंने प्रशासन और उद्योग इंटरफेस विकसित करने के प्रयास में भी भाग लिया है।

"पी.एम.आर.डी.एफ. लोगों तक पहुंचने और जमीनी स्तर पर विकासात्मक चुनौतियों को समझने के बेहतरीन संभव तरीकों में से एक है।"

चिंतन राज पश्चिमी चंम्पारन जिले में महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी योजना की एक बैठक में भाग लेते हुए।

पंकज कुमार राय

अरवल, बिहार

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली से बी ए (ऑनर्स) और डॉ डी वाई पाटिल विश्वविद्यालय, नवी मुम्बई से एम बी ए।

पंकज को सात वर्ष का कार्य अनुभव है जिसमें से चार साल उन्होंने राजनीतिक शोध, आंकड़े संग्रह और विश्लेषण करने वाले एक संगठन के साथ काम किया है। उन्होंने ई–गवर्नेन्स और वित्तीय समावेशन परियोजनाओं पर काम कर रही आईटी कंपनी के साथ भी काम किया है।

“पी.एम.आर.डी.एफ. के बारे में बड़ी बात यह है कि इसकी परिकल्पना कमजोर वर्गों, निष्क्रिय पंचायतों और अकुशल प्रशासन की समस्याओं को समावेशी ढंग से निस्तारित करने के लिए की गई है।”

नम्रता विलोचन

औरंगाबाद, बिहार

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार से अर्थशास्त्र में बी ए (ऑनर्स) और पटना विश्वविद्यालय, बिहार से अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर।

नम्रता ने बाल पुनर्वास और महिला सशक्तिकरण के लिये कार्यरत गैर सरकारी संस्था मीमांसा के साथ काम किया है। उनका काम गैर सरकारी संगठन और विभिन्न सरकारी विभागों के बीच समन्वय स्थापित करना रहा है। झारखंड में यूनिसेफ के लिए राज्य समन्वयक के रूप में उन्होंने कार्यक्रम के बेहतर कार्यान्वयन के लिए रक्तहीनता नियंत्रण कार्यक्रम और योजना की प्रगति की निगरानी का काम भी किया है।

“पी.एम.आर.डी.एफ. में चयनित होना मेरी जिंदगी में एक क्रांतिकारी मोड़ था।”

शशि कर्ण प्रसाद अकेला

औरंगाबाद, बिहार

मुज़फ्फरपुर इंस्टिट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी, मुज़फ्फरपुर, बिहार से बी टेक (सूचना प्रौद्योगिकी)।

शशि ने भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) के एक प्रत्यक्ष बिक्री कार्यकारी के रूप में काम किया है। बिहार प्रशासनिक सुधार मिशन के साथ आईटी सहायक के रूप में उन्होंने विकास खंड स्तर के अधिकारियों को कम्प्यूटर प्रशिक्षण भी दिया है। उन्होंने सॉफ्टवेयर डेवलपर बनने का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया है।

"पी.एम.आर.डी.एफ. के रूप में गांव के लोगों तथा उच्च सरकारी अधिकारियों से भी आसानी से मिलना संभव है। मुझे आशा है कि पी.एम.आर.डी.एफ. ग्रामीण विकास में एक महत्वपूर्ण साधन बन चुका है।"

अमृता धीमान

गया, बिहार

गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर, उत्तराखंड से बी एस सी (कृषि) तथा वी ए एम एन आइ सी ओ एम, पुणे से एग्रीबिजनेस मैनेजमेंट में विशेषज्ञता के साथ पी जी डी एम।

अमृता ने अपना करियर सार्वजनिक क्षेत्र बैंक में क्षेत्र कार्य के साथ शुरू किया और फिर उन्होंने कार्वी कॉमट्रेड के साथ काम किया। महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड के साथ काम करने के दौरान उन्होंने महिंद्रा समृद्धि इंडिया एग्री अवार्ड की परिकल्पना की और ये पुरस्कार शुरू भी किए। उनके कार्यकाल के दौरान कार्वी कॉमट्रेड को बेहतरीन फंडामेंटल एनालिस्ट 2009 के लिए ज़ी बिजनेस अवार्ड और महिंद्रा एंड महिंद्रा लि. को गोल्डन पीकॉक इन्नोवेशन अवार्ड 2010 से सम्मानित किया गया।

"पी.एम.आर.डी.एफ. होने के नाते मुझे लोगों के करीब जाने, उनसे सीखने तथा उनके साथ काम करने का अवसर मिला है।"

क्षोवन गुहा

गया, बिहार

उत्तर बंग कृषि विश्वविद्यालय से कृषि में बी एस सी और बिधान चंद्र कृषि विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल से बीज विज्ञान और प्रौद्योगिकी में एम एस सी। कलिंगा इन्स्टिटूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलोजी स्कूल औफ रूरल मैनेजमेंट, भुवनेश्वर, ओडिशा से रूरल मैनेजमेंट में एम बी ए।

क्षोवन ने महिला किसान प्रोड्यूसर कंपनी (डब्लूएफपीसी) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में बिहार ग्रामीण आजीविका संवर्धन सोसायटी (बीआरएलपीएस) के साथ दो साल काम किया है।

"पी.एम.आर.डी.एफ. मेरा एक बहुत चुनौतीपूर्ण अवसर रहा परंतु साथ ही साथ यह मेरे लिए अति लाभदायक एवं ज्ञानवर्द्धक भी सिद्ध हुआ है।"

आदित्य त्यागी

जमुई, बिहार

दिल्ली विश्वविद्यालय से बी एस सी और जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय से एम सी ए।

आदित्य की पृष्ठभूमि व्यापार विश्लेषिकी परामर्श दाता (बिजनेस एनालिटिक्स कनसल्टिंग) की रही है जिसमें उन्होंने व्यापार समस्याएं सुलझाने, योजना बनाने और कार्यान्वियन, अनुशिक्षण एवं प्रेरित करने तथा विभिन्न स्तरों पर उद्देश्यों का तालमेल बिठाने में भाग लिया है।

"जीवन को समर्थ बनाने के लक्ष्य को पूरा करने के अलावा पी.एम.आर.डी.एफ. मानवीय एवं प्रशासनिक व्यवहार की जटिलताओं को समझने में भी मेरी मदद कर रहा है।"

श्रवण कुमार झा

जमुई, बिहार

कृषि में बी एस सी और कृषि व्यवसाय में एम बी ए।

श्रवण ने एसकेएस माइक्रोफाइनेंस के साथ काम किया है और वे संगठन के माइक्रोफाइनेंस संचालन से जुड़े रहे हैं। उन्हें लेखा परीक्षा का अनुभव है और उन्होंने शिक्षा और माइक्रोफाइनेंस के क्षेत्र में भोपाल के एक गैर सरकारी संगठन के साथ काम किया है। उन्होंने चार साल काम किया है।

"पी.एम.आर.डी.एफ. प्रशासन तथा विकास के साथ साक्षात्कार को समझने का बेहतरीन मंच है।"

पी. के. आनंद

जेहानाबाद, बिहार

महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, केरल से हिंदी में बी ए और सोशल वर्क में एम ए।

आनंद ने राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम, आदिवासी भागीदारी को बढ़ाने, शिकायत निवारण तंत्रों को मजबूत करने तथा सुनामी पीड़ितों के लिए आजीविकाओं से जुड़े मुद्दों पर और स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के साथ तीन वर्ष तक काम किया है। वे अमृता विश्वविद्यालय, कोलम, केरल के सामाजिक कार्य विभाग में व्याख्याता भी रहे हैं।

"पी.एम.आर.डी. फैलो के रूप में जीवन रूपांतरकारी रहा है।"

प्रियंका कुमारी

जेहानाबाद, बिहार

महिला कॉलेज पटना, बिहार से जैव प्रौद्योगिकी में बी एस सी और बिरला प्रौद्योगिकी संस्थान, मेसरा, रांची से एम बी ए।

प्रियंका ने एक सौर संयंत्र में मानव संसाधन के क्षेत्र में काम किया है। उन्हें श्रमशक्ति, योजना बनाने और प्रशिक्षण के काम संभालने का अनुभव है।

"ग्रामीण विकास राष्ट्र के विकास का मुख्य स्तंभ है।"

अविनाश तिवारी

कैमूर, बिहार

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कोचीन, केरला से सिविल इंजीनियरिंग में बी टेक, तथा राष्ट्रीय निर्माण प्रबंधन एवं अनुसंधान संस्थान, मुम्बई से अग्रिम निर्माण प्रबंधन में स्नातकोत्तर कार्यक्रम।

अविनाश को बुनियादी ढांचा निर्माण के क्षेत्र में तीन वर्ष का अनुभव है। परियोजनाओं की योजना और निगरानी में उनको विशेषज्ञता हासिल है। उन्होंने प्रबंधन प्रशिक्षु (मैनेजमैन्ट ट्रैनी), सहायक प्रबंधक और प्रबंधक (योजना) के रूप में भी काम किया है।

"पी.एम.आर.डी.एफ. सीखने का अनुपम अनुभव साबित हुआ है।"

अंकुश सिंह

मुंगेर, बिहार

उत्तर प्रदेश तकनीकी विश्वविद्यालय, लखनऊ से इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन में बी टेक।

अंकुश को सॉफ्टवेयर उद्योग में पांच साल से अधिक समय का अनुभव है। उन्होंने एमडोक्स डिवेलपमेन्ट सेन्टर प्राइवेट लिमिटेड और इन्फोसिस टेक्नोलॉजीज लिमिटेड के साथ काम किया है। वह सॉफ्टवेयर के परीक्षण और विकास के विभिन्न चक्रों में तकनीकी विशेषज्ञ और प्रशिक्षक के रूप में शामिल रहे हैं।

“पी.एम.आर.डी.एफ. में मैंने प्रणाली का व्यवहारिक अनुभव प्राप्त किया, शिक्षा हासिल की तथा लोगों और समाज के साथ काम किया तथा समुदायों के सामूहिक मनोविज्ञान की जानकारी प्राप्त की। पी.एम.आर.डी.एफ. ने मुझे काफी कुछ सिखाया और अनुभव प्रदान किया तथा व्यापक स्तर पर काम करने का मौका दिया।”

रवि धानुका

मुंगेर, बिहार

हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय से इकोनॉमिक्स में बी ए ऑनर्स तथा इंस्टीट्यूट ऑफ रूरल मैनेजमेंट, आनन्द, गुजरात से ग्रामीण प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

रवि ने माइक्रोफाइनेंस और ग्रामीण आजीविका के क्षेत्रों में दो साल काम किया है। उनकी महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों में 14 करोड़ रुपये के पोर्टफोलियो के साथ जिला स्तर पर एक शाखा का प्रबंधन, स्वयं सहायता समूहों/प्रोड्यूसर कंपनियों को बनाने और इन संस्थाओं को पेशेवर प्रबंधन प्रदान करना शामिल है। उन्होंने बाजार संपर्क स्थापित करने के प्रयासों का सुझाव दिया और अन्य व्यवसाय विकास सेवाएं प्रदान कीं। उन्होंने घाटे में चल रही माइक्रोफाइनेंस इकाई को फिर से सफल बनाने में भी मदद की।

“पी.एम.आर.डी.एफ. ऐसा मंच था जिसे मैं किसी भी कीमत पर नहीं खोना चाहता था क्योंकि इसके ज़रिए मुझे प्रशासन को उस स्तर पर ले जाने का अवसर मिला जहां वह बहुत अहमियत रखता है।”

दीपक कुमार

नवादा, बिहार

दिल्ली विश्वविद्यालय के देशबंधु कॉलेज से बायोकैमिस्ट्री में बी एस सी ऑनर्स तथा जेवियर इन्स्टिटट्यूट ऑफ सोशल सर्विस, रांची से ग्रामीण विकास में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

दीपक ने गुजरात सरकार की डेवेलपमेन्ट सपोर्ट एजेंसी ऑफ गुजरात के साथ दो साल काम किया है। उन्होंने कृषि विविधीकरण परियोजनाओं, विभिन्न योजनाओं से धन का लाभ उठाने, सिंचाई सुविधाओं और लघु सिंचाई के माध्यम से पानी की उपयोग क्षमता बढ़ाने एवं दक्षता बढ़ाने पर काम किया। उन्होंने किसानों की आय बढ़ाने पर भी काम किया है।

"पी.एम.आर.डी.एफ. ने मुझे शिक्षा, आजीविका और संस्थागत वित्त जैसे विविध क्षेत्र में काम करने का अवसर दिया। इसने मुझे ग्रामीण समुदायों, सिविल सोसायटी संगठनों और सरकारी विभागों सहित हितधारकों के प्रयासों में समन्वय का मंच उपलब्ध कराया है।"

अमन आकाश भारद्वाज

रोहतास, बिहार

इंडियन स्कूल ऑफ माइन्स, धनबाद, झारखंड से माइनिंग इंजीनियरिंग में बी टेक।

अमन ने कोल इंडिया लिमिटेड के एक वरिष्ठ अधिकारी के रूप में काम किया है। उनके काम में खनन कार्य के संचालन में सहायता करना, सुरक्षा मानकों का उपयोग और मानक संचालन प्रक्रियाओं का उचित रूप से पालन करना शामिल है। उनकी भूमिका काफी हद तक क्राइसिस मैनेजर की और कार्यस्थल पर विवादों का निपटारा करने की थी।

"पी.एम.आर.डी.एफ. के रूप में अपने एक वर्ष में मैंने शोधकर्ता से लेकर प्रेरक, विश्लेषक, पर्यवेक्षक, क्षेत्र सर्वेक्षक, समन्वयक, प्रतिपुष्टि प्रदाता तथा ईमानदार आलोचक जैसी अनेक भूमिकाएं निभाई हैं।"

मानसी कौशिक

रोहतास, बिहार

गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, दिल्ली से कंप्यूटर साइन्स में बी टेक और राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान, हैदराबाद से ग्रामीण विकास प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

मानसी ने इन्फोसिस में सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में काम किया है और उन्होंने ग्रामीण विकास के क्षेत्र में प्रशिक्षु (इंटर्न) के रूप में भी काम किया है।

"सरकार की बाहर बैठ कर आलोचना करना आसान है लेकिन इसमें सम्मिलित हो कर देश के लिए काम करने के लिए हिम्मत और हौंसला चाहिए।"

चिंतन राज

पश्चिम चंपारन, बिहार

मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई से बी ई।

पी.एम.आर.डी. फेलो बनने से पहले चिंतन 'ग्रीनएड' नामक एक सामाजिक उद्यम के सह–संस्थापक थे और लार्सन एण्ड टुब्रो के उद्यमिता जोखिम एवं सस्टेनेबिलिटी में प्रबंधक थे। उन्होंने हिज होलीनेस दलाई लामा की फाउण्डेशन फॉर यूनीवर्सल रेस्पोन्सिबिलिटी में एक फेलो की तरह, एजूकेशन टाइम्स में एक पत्रकार के रुप में एवं ग्रीनपीस में एक शोधकर्ता के रुप में कार्य किया। लार्सन एण्ड टुब्रो के मूल कार्यों में पर्यावरणीय एव सामाजिक जोखिम प्रबन्धन का समावेश करने की उपलब्धि के कारण उन्हें प्रोजेक्ट मैनेजमेण्ट इन्स्टिट्यूट ने एक वक्ता के रुप में आमन्त्रित किया। उनके सामाजिक उद्यम को 'अन लिमिटेड इण्डिया' द्वारा दो बार इनक्यूबेट किया गया। विद्यालय एवं कॉलेज में चहुंमुखी उपलब्धियों के कारण उन्हें 'इण्टरनेशनल अवार्ड फॉर यन्ग पीपुल' से सम्मानित किया गया।

"सरल प्रगतिशील समाधान सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।"

शिखा सिंह सुकुमा जिले में टीकाकरण शिविर में भाग लेते हुए।

राजीव कुमार

बलरामपुर, छत्तीसगढ़

मेरठ इन्स्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टैक्नोलॉजी (उत्तर प्रदेश तकनीकी विश्वविद्यालय, लखनऊ) से इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्यूनिकेशन इंजीनियरिंग में बी टेक ऑनर्स।

राजीव ने व्याख्याता, प्रसारण इंजीनियर और टीम लीडर के रूप में विभिन्न पदों पर काम किया है। उन्होंने दूरसंचार क्षेत्र की कई परियोजनाओं में भी भाग लिया है।

"पी.एम.आर.डी.एफ. लोगों और प्रशासन के साथ काम करने का सुनहरा अवसर है; और इसमें "सेवा करने के लिए सीखना तथा सीखने के लिए सेवा करना" जैसा महसूस होता है।"

डॉ. हर्षा वशिष्ठ

बस्तर, छत्तीसगढ़

फिजियोथेरेपी में स्नातक और न्यूरो फिजियोथेरेपी में स्नातकोत्तर।

हर्षा ने मानसिक और शारीरिक विकलांग बच्चों और वयोवृद्धों के साथ काम किया है। वह स्कोप फिजियोथेरेपी कॉलेज, रायपुर में व्याख्याता भी रही हैं। वह अनुप्रयुक्त एर्गोनोमिक्स, मैनुअल थैरेपी, रीढ़ की देखभाल, हृदय भौतिक चिकित्सा और व्यायाम विज्ञान पर कई राष्ट्रीय सम्मेलनों और गोष्ठियों (सेमिनारों) में भाग ले चुकी हैं। हर्षा का अपना फिजियोथेरेपी क्लिनिक भी है।

"पी.एम.आर.डी.एफ. ने मुझे न सिर्फ असमर्थ लोगों के साथ काम करने बल्कि समाज में अन्य प्रमुख मुद्दों पर भी काम करने का अवसर दिया है।"

नीरजा कुद्रिमोती

बीजापुर, छत्तीसगढ़

पुणे विश्वविद्यालय, पुणे से कम्प्यूटर साइंस में बी ई।

नीरजा को आईटी क्षेत्र में ढ़ाई साल काम करने का अनुभव है। वह एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी के साथ काम करते हुए विस्तृत विनिर्देशों को तैयार करने, प्रोग्राम कोड लेखन और उत्पाद परीक्षण के काम में शामिल रही हैं।

"जब मैंने जिला प्रशासन के साथ काम करना शुरू किया तो मुझे मालूम हुआ कि प्रभावकारी पर्यवेक्षण गतिविधियों के लिए प्रौद्योगिकी कितनी उपयोगी हो सकती है।"

राहुल तिवरेकर

बीजापुर, छत्तीसगढ़

गवर्नमेंट लॉ कॉलेज, मुंबई से बीएलएस एलएलबी और टी.आई.एस.एस., मुम्बई तथा बर्लिन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स एंड लॉ, जर्मनी से भूमंडलीकरण और श्रम में एम.ए.।

राहुल ने मुकदमों में उलझे गरीबों के लिए कानूनी सहायता के प्रावधान वाली परियोजना पर टी.आई.एस.एस. के साथ काम किया है। उन्होंने निर्मला निकेतन कॉलेज ऑफ सोशल वर्क, मुम्बई की क्षेत्र कार्रवाई परियोजना में सलाहकार के रूप में भी काम किया है जिसमें जमीनी स्तर पर अपनी भागीदारी की आवश्यकता होती है।

"आदिवासी समुदाय से मेरा करीबी तौर पर जुड़े रहना और उनके मुद्दों की समझ तथा अनुभूति बस्तर में पी.एम.आर.डी.एफ. के रूप में मेरे समय के दौरान महत्वपूर्ण साधन साबित हुई।"

आकाश बड़ावे

दंतेवाड़ा, छत्तीसगढ़

इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग में बी ई और बिरला इन्स्टिट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी, पिलानी से बायोलॉजिकल साइंस में एम एस सी।

आकाश ने इंटरनेट बैंकिंग के क्षेत्र में बार्कले और इलेक्ट्रानिक्स के क्षेत्र में एलएसआई निगम के साथ काम किया है। उन्होंने सामाजिक क्षेत्र में कई प्रशिक्षुता (इंटर्नशिप) पूरी की तथा शिक्षा और आजीविका के मुद्दों पर भी काम किया है।

"पी.एम.आर.डी.एफ. ने मुझे न सिर्फ कार्यक्रमों का सुझाव देने बल्कि विभिन्न सरकारी विभागों में नियोजन एवं कार्यान्वयन तथा योजनाओं से जुड़ने का भी मंच उपलब्ध कराया है।"

शिरीष अनंतप्रकाश कल्याणी

दंतेवाड़ा, छत्तीसगढ़

मातृ सेवा संघ समाज कार्य संस्थान, नागपुर से समाज कार्य में स्नातक और टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान, मुम्बई से समाज कार्य में स्नातकोत्तर के साथ ग्रामीण विकास में विशेषज्ञता।

शिरीष को सामाजिक क्षेत्र में काम करने का दो साल का अनुभव है। उन्होंने गुजरात सरकार के ग्रामीण विकास विभाग के तहत गुजरात लाइवलीहुड्स प्रोमोशन कंपनी लि. के साथ राज्य स्तर पर प्रबंधक के रूप में काम किया है। उन्होंने छोटे उद्यमियों, सामाजिक एकजुटता, संस्था निर्माण और ग्रामीण क्षेत्रों में कौशल विकास को प्रोत्साहन देने के जरिए टिकाऊ आजीविकाओं के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित रखा।

"सामाजिक–राजनीतिक तनाव की आशंका वाले क्षेत्रों में अल्पविकास की समस्या का कोई 'तुरंत' (क्विक–फिक्स) और 'एक माप सभी में उचित बैठता हो' जैसा समाधान नहीं हो सकता।"

अनुराग दीप पाठक

जसपुर, छत्तीसगढ़

बी टेक, एनआईटी, हमीरपुर।

अनुराग ने सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनी के लिए काम किया है। उन्होंने कई परियोजनाओं में भाग लिया और नेतृत्व एवं प्रबंधन से संबंधित कौशल हासिल किया है।

"मैंने सीखा है कि बदलाव एक प्रक्रिया है परिणाम नहीं और इसे जारी रखने तथा निरंतर प्रयास करते रहने की जरूरत है।"

प्रमोद कालेकर

कबीरधाम, छत्तीसगढ़

विल्सन कॉलेज, मुम्बई से राजनीति विज्ञान में बी ए और गवर्नमेंट लॉ कॉलेज, मुम्बई से एल एल बी तथा टी.आई.एस.एस., मुम्बई से डेवेलपमेंट स्टडीज में एम ए।

प्रमोद को आर्थिक रूप से हाशिए पर मौजूद लोगों के लिए सामुदायिक भागीदारी और संस्था निर्माण में काम करने का व्यवहारिक अनुभव हासिल है। उन्होंने संस्था और संगठन प्रबंधन, विकास परिप्रेक्ष्य (पर्स्पेक्टिव) योजनाओं और परियोजना प्रस्तावों को विकसित करने के बारे में विभिन्न संगठनों को परामर्श सेवाएं प्रदान की हैं।

"गरीबों के क्षमता निर्माण में निवेश करना सामाजिक–आर्थिक सीमांत लोगों की समस्याएं दूर करने का उत्तम तरीका है।"

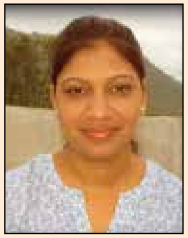

प्रियंका यादव

कांकेर, छत्तीसगढ़

दिल्ली विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान में बी ए ऑनर्स और नैदानिक मनोविज्ञान में एम ए।

प्रियंका ने शिक्षा और सार्वजनिक नीति के क्षेत्र में काम किया है। उन्होंने महिलाओं और भारत के संघर्ष प्रभावित क्षेत्रों में आदिवासी विकास के मुद्दों पर हितधारकों (सांसदों और विधायकों) के समक्ष उनका पक्ष रखा है। उन्होंने सफलतापूर्वक प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन किया और क्षेत्र समर्थन भी प्रदान किया है। प्रियंका ने छात्र स्वयंसेवक के रूप में मानसिक रूप से परेशान लोगों और उनके परिवारों के लिए एक समर्थन नेटवर्क भी बनाया है।

“पी.एम.आर.डी.एफ. ने मेरे लिए सीखने के नए दरवाजे खोले हैं।”

डॉ. मयूर गुप्ता

कोंडागाँव, छत्तीसगढ़

राष्ट्रीय शारीरिक विकलांग संस्थान, कोलकाता से पेशेवर रोगोपचार में स्नातक तथा टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान, मुम्बई से सार्वजनिक स्वास्थ्य में स्नातकोत्तर।

मयूर ने मिनेसोटा विश्वविद्यालय, आमेरिक के 'स्कूल ऑफ पब्लिक हैल्थ' में "हैल्थ असेसमेंट ऑफ टैकोनाइट वर्कर्स" नामक शोध अध्ययन में शोध अध्येता के रूप में कार्य किया है। स्नातकोत्तर अध्ययन के दौरान उन्होंने ग्रामीण, शहरी और औद्योगिक क्षेत्रों में सार्वजनिक स्वास्थ्य अध्ययन किए हैं।

“इस फेलोशिप ने मुझे ऐसा मंच उपलब्ध कराया जहाँ मेरे अंदर अच्छे प्रशासक के रूप में विश्वास पैदा हुआ और न सिर्फ अच्छी तरह काम करने का जज्बा पैदा हुआ बल्कि बेहतर ढंग से लोगों की मदद करने का मौका भी मिला। इससे सार्वजनिक स्वास्थ्य और शोध में मेरे कौशल उन्नत हुए हैं तथा अब ग्रामीण विकास के विभिन्न पहलुओं में इस्तेमाल किए जा रहे हैं।”

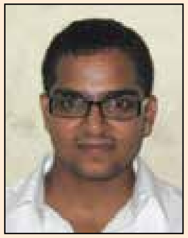

ललित पंकज

कोरिया, छत्तीसगढ़

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहाटी से कंप्यूटर साइंस और इंजीनियरिंग में बी टेक तथा भारतीय वन प्रबंधन संस्थान, भोपाल से वन प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

ललित ने रिलायंस टैक सविर्सेस के साथ सिस्टम डेवलपर के रूप में काम किया है। उन्होंने अपने दो वर्ष के कार्यकाल के दौरान प्रशिक्षण और पर्यवेक्षण जिम्मेदारी संभाली। उनके काम का क्षेत्र सॉफ्टवेयर विकास है।

"स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के साथ काम करने ने मुझे सिखाया कि सभी अच्छे कामों की बुनियाद विश्वास है।"

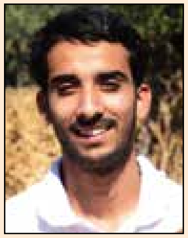

अक्षय कपूर

नारायणपुर, छत्तीसगढ़

इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्यूनिकेशन्स में बी ई।

अक्षय को सूचना प्रौद्योगिकी, बाजार अनुसंधान, और सतत् विकास के क्षेत्र में इलेक्ट्रॉनिक्स और दूरसंचार इंजीनियर के रूप में कार्य करने का तीन वर्षों का अनुभव है। उन्होंने इन्फोसिस के साथ अपना कैरियर शुरू किया और उसके बाद वह ग्रेल रिसर्च में चले गए जहाँ उन्होंने एक साल काम किया। उसके बाद उन्हें स्टेट बैंक ऑफ इंडिया यूथ फार इंडिया फेलोशिप मे चयनित किया गया।

"पी.एम.आर.डी.एफ. ने मुझे विभिन्न गतिविधियों जैसे नियोजन संसाधनों, बिजनेस योजनाओं, तालाब बनाने, कौशल विकास प्रशिक्षण, नए सरकारी विभागों की स्थापना करना तथा जटिल सरकारी योजनाओं की देखभाल करने के बारे में काम करने का अवसर दिया है।"

यतिन आर एस दिवाकर

नारायणपुर, छत्तीसगढ़

पुणे विश्वविद्यालय से जैव प्रौद्योगिकी में एम एस सी और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुम्बई से प्रौद्योगिकी और विकास में एम टेक।

यतिन को पढ़ाई करने के दौरान सरकार के साथ कार्य करने की इच्छा थी क्योंकि वह महसूस करते थे कि सरकार के पास देश में विकास करने के लिए संसाधन व ढ़ाँचा दोनों उपलब्ध हैं। पी.एम.आर.डी.एफ. के बारे में पता चलते ही उन्होंने आवेदन कर दिया और चयनित भी हो गए। पी.एम.आर.डी.एफ. उनका पहला कार्य अनुभव है।

“सरकारी तंत्र के साथ इस अनुभव को हासिल करने के बाद मुझे विश्वास है कि मैं उचित प्रशासक बन सकता हूँ।”

डॉ. प्रेषित अम्बाडे

राजनंदगाँव, छत्तीसगढ़

छत्रपति शाहू महाराज शिक्षण संस्था आयुर्वेद महाविद्यालय, औरंगाबाद से आयुर्वेद, चिकित्सा और सर्जरी में स्नातक तथा टी.आई.एस.एस., मुम्बई से स्वास्थ्य प्रशासन में स्नातकोत्तर।

“पी.एम.आर.डी.एफ. ग्रामीण विकास एवं आजीविका के अवसरों को स्वास्थ्य से जोड़ने का उत्कृष्ट मौका है।”

डॉ. सतीश चन्द्रभान ताज्ने

सरगुजा, छत्तीसगढ़

महाराष्ट्र यूनिवर्सिटी ऑफ हैल्थ साइंस, नासिक से आयुर्वेदिक मेडिसिन एंड सर्जरी में स्नातक और टी.आई.एस.एस., मुम्बई से स्वास्थ्य प्रशासन में एम ए।

डॉ. ताज्ने स्वास्थ्य बीमा के क्षेत्र में चिकित्सा अधिकारी के रूप में काम कर चुके हैं। इस दौरान उन्होंने दावों के विश्लेषण और मुआवजे के आंकलन की जिम्मेदारी संभाली और वास्तविक लाभार्थियों को बीमा लाभ उपलब्ध कराया।

"पी.एम.आर.डी.एफ. के रूप में काम करना मेरे लिए समृद्ध अनुभव रहा है तथा इससे मेरा विश्वास सुदृढ़ हुआ है कि कोई भी बदलाव हो सकता है यदि आप कुछ करना चाहें।"

डॉ. अजितेंद्र कुमार

सुकमा, छत्तीसगढ़

दिल्ली सरकार के डॉ. बी आर सुर होम्योपैथिक मेडिकल कालेज, हैस्पिटल एंड रिसर्च इंस्टिट्यूट से होम्योपैथिक चिकित्सा और सर्जरी में स्नातक तथा टी.आई.एस.एस., मुम्बई से स्वास्थ्य प्रशासन में एम ए।

डॉ. कुमार ने एक चिकित्सक के रूप में काम किया है और स्वास्थ्य शिविरों के आयोजन और प्रशिक्षण देने में शामिल रहे हैं। उन्होंने जमीनी स्तर पर स्वास्थ्य सेवा प्रदापन की समस्याओं को समझने के लिए आदिवासी क्षेत्रों में काम किया है।

"पी.एम.आर.डी.एफ. की प्रमुख विशेषता है कि यह आपको ऐसा मंच देती है जहां आप एक साथ कई स्तरों पर और विभिन्न क्षेत्रों में हस्तक्षेप कर सकते हैं।"

शिखा सिंह

सुकमा, छत्तीसगढ़

नवयुग डिग्री कॉलेज से बी एस सी और लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ से एम बी ए।

शिखा ने मध्य प्रदेश में गोंड समुदाय के साथ विकास प्रोफेशनल के रूप में दो साल काम किया है। वह आजीविका गतिविधियों को बढ़ावा देने और निष्क्रिय दृष्टिकोण को बदलने संबंधी गतिविधियों से भी जुड़ी रही हैं।

"आदिवासी समुदायों के साथ काम करना बहुत आनंददायक अनुभव है और जीवन के बारे में मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा है।"

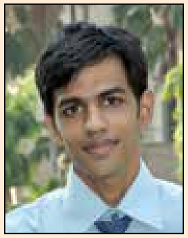

अंशुमान गुप्ता

सूरजपुर, छत्तीसगढ़

मणिपाल प्रौद्योगिकी संस्थान, कर्नाटक से इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्यूनिकेशन्स में बी ई तथा ग्रामीण प्रबंधन संस्थान, आनन्द, गुजरात से ग्रामीण प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

अंशुमान ने राजस्थान के बारां आदिवासी जिले में समावेशी विकास के लिए आईसीआईसीआई फाउंडेशन के साथ काम किया है। उन्होंने सरकारी प्राथमिक स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार और शिक्षा का अधिकार कानून के अनुरूप संस्थाओं के रूप में कुछ स्कूलों के विकास के लिए जिला और विकास खंड स्तर पर प्राथमिक शिक्षा विभाग के साथ भी काम किया है। उन्होंने कृषि के क्षेत्र में सूक्ष्म सिंचाई तकनीक के आर्थिक और पर्यावरणीय लाभों पर शोध भी किया है।

"मैंने सीखा है कि गरीब ग्रामीण परिवार की आमदनी के स्तर में मामूली सुधार से भी भारी योगदान मिलता है।"

फेलोज़ वर्तिका सिंह और शैलजा तिग्गा, जिला कलेक्टर लातेहार सुश्री आराधना पटनायक के साथ क्षेत्रीय भ्रमण पर।

अमित वाल्मीकि

बोकारो, झारखंड

बिरला प्रबंधन संस्थान, मेसरा रांची से व्यवसाय प्रबंधन और जेवियर सामाजिक विज्ञान संस्थान, रांची से ग्रामीण विकास में स्नातकोत्तर।

अमित ने सामाजिक कार्य के लिए चर्च आक्सिलरी सर्विसेज़ में कार्यक्रम सहायक के रूप में दलित अधिकारों, भोजन के अधिकार और आपदाओं के प्रबंधन के लिए काम किया है। उन्होंने कार्यक्रमों के नियोजन, कार्यान्वयन, सहायता सेवाओं और निगरानी का कार्य भी किया है। अमित ने बिहार ग्रामीण आजीविका संवर्धन संस्था 'जीविका' के साथ पर्यवेक्षण और मूल्यांकन के प्रबंधक के रूप में बिहार में आजीविका के मुद्दों पर भी काम किया है।

"पी.एम.आर.डी.एफ. ग्रामीण मुद्दों को समग्र ढंग से समझने का मंच उपलब्ध कराती है।"

नीलांजलि कुमार

बोकारो, झारखंड

कुवेम्पु विश्वविद्यालय, दावणगेरे, कर्नाटक के यूनिवर्सिटी बीटीडी इंजीनियरिंग कॉलेज से इलेक्ट्रोनिक्स एंड इंजीनियरिंग में बी ई तथा यूनिवर्सिटी आफ पेट्रोलियम एड एनर्जी स्टडीज़, देहरादून से तेल और गैस में एम बी ए।

नीलांजलि ने रिलायंस रिटेल के साथ काम किया है जहां उनके कार्य में खुदरा क्षेत्र में ग्राहक के क्रय आचरण का अध्ययन करना शामिल था। उन्होंने विकास खंड स्तर पर महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम के कार्यान्वयन के लिए झारखंड सरकार के साथ भी काम किया है। इस भूमिका में सामाजिक लेखा परीक्षा, पूंजी प्रबंधन, योजनाओं का पर्यवेक्षण और मूल्यांकन, क्षमता निर्माण, प्रशिक्षण और जागरूकता पैदा करना शामिल था।

"पी.एम.आर.डी.एफ. मुझे मेरे अनुभवों के दायरे का विस्तार करने में मदद कर रही है।"

राजीव कुमार रंजन

पूर्व सिंघभुम, झारखंड

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर से कृषि इंजीनियरिंग, पोस्ट हार्वेस्ट टेक्नोलॉजी में एम टैक।

राजीव झारखंड के 300 से अधिक गांवों में प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन आधारित वाटरशेड विकास कार्यक्रमों का पर्यवेक्षण, मूल्यांकन, प्रलेखन और कार्यान्वयन में शामिल रहे हैं। उन्होंने आजीविका विकास के लिए गरीबों के साथ सक्रिय रूप से काम किया और वह झारखंड आदिवासी विकास कार्यक्रम से जुड़े रहे हैं।

“पी.एम.आर.डी.एफ. ने मुझे गरीब ग्रामीण लोगों के लिए आजीविका की संभावनाएं बढ़ाने के मेरे सपने को साकार करने का मंच उपलब्ध कराया है।”

तारिक रसूल वनी

पूर्व सिंघभुम, झारखंड

अमर सिंह कॉलेज, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर से लिबरल आर्ट्स में बी ए तथा एमिटी विश्वविद्यालय, नोएडा से एनजीओ मैनेजमेंट में स्नातकोत्तर डिप्लोमा और टी.आई.एस.एस., मुम्बई से वैश्वीकरण और श्रम में एम ए।

तारिक को कॉरपोरेट और सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने का पांच साल से अधिक का अनुभव है। उन्होंने डेल वित्तीय सेवाओं, अमेरिकन एक्सप्रेस बैंकिंग कॉरपोरेशन, दुबई इस्लामिक बैंक, सेव दा चिल्ड्रन इंडिया, चाइल्ड राइट्स एंड यू जैसे संगठनों के साथ काम किया है।

“मैंने पी.एम.आर.डी.एफ. के रूप में बहुत कुछ सीखा है जिससे मुझे विकास के क्षेत्र में एक पेशेवर के रूप में अपना सफर आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी।”

संतोष कुमार

गढ़वा, झारखंड

इंदिरा गाँधी नेशनल ओपेन यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली से लोक प्रशासन में बी ए और मगध विश्वविद्यालय, बोधगया से लोक प्रशासन में एम ए।

संतोष ने पंचायत स्तर पर ग्राम विकास समिति के साथ काम किया है जहाँ उन्होंने आजीविका के अवसर बढ़ाने के लिए स्थानीय युवाओं को जागरूक बनाने और क्षमता निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने पंचायत स्तर पर लड़कियों की शिक्षा और महिलाओं के सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए भी काम किया है तथा विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी संगठनों के साथ भी सहयोग किया है।

"विकास का मेरा स्वप्न लोगों की महत्वाकांक्षाओं और सरकारी प्रयासों को करीब लाना है।"

श्रद्धा पांडेय

गढ़वा, झारखंड

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ से बी ए एल एल बी ऑनर्स।

श्रद्धा ने अपने पांच साल के कार्य अनुभव के दौरान कई तरह के सलाहकार के रूप में काम किया है। वह उच्च न्यायालय और उच्चतम न्यायालय के साथ कानूनी सलाहकार के रूप में काम कर चुकी हैं। उन्होंने वृत्तचित्र फिल्म के सलाहकार और नीति सलाहकार के रूप में भी काम किया है।

"मैं विकास और आपराधिक न्याय प्रणाली को मजबूत बनाने और उसमें सुधार के लिए विकास एवं कानूनी क्षेत्र में काम करने की इच्छुक हूँ।"

यिकोनिया इज़लरी

गिरिडीह, झारखंड

गुवाहाटी विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में बी ए और टी.आई.एस.एस., मुम्बई से सामाजिक कार्य में एम ए।

यिकोनिया ने नीति और नियोजन भूमिकाओं में गैर सरकारी संस्थाओं में एक वर्ष काम किया है। उन्होंने जिला कम्यूनिटी मोबिलाइजर के रूप में असम में राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के साथ दो साल काम किया है।

"स्वास्थ्य सिर्फ बायो–मेडिकल घटना नहीं है बल्कि यह अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक, भौगोलिक और मनोवैज्ञानिक कारकों से प्रभावित होता है।"

वी साईं वामसी वर्धन

गिरिडीह, झारखंड

सूचना प्रौद्योगिकी में बी टेक।

वामसी ने सॉफ्टवेयर डेवलपर के रूप में टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज़ के साथ काम किया है। वह एक आरटीआई कार्यकर्ता भी हैं तथा उन्होंने महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम के संबंध में कई आवेदन दायर किए हैं। उन्होंने कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग द्वारा आयोजित सूचना का अधिकार संबंधी ऑनलाइन प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम में भी भाग लिया है।

"पी.एम.आर.डी.एफ. के कारण मैं हिंदी सीखने में सफल रहा।"

राजीव रंजन

गुमला, झारखंड

इंदिरा गाँधी नेशनल ओपेन यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली से कम्प्यूटर एप्लीकेशन में स्नातक और जेवियर समाज सेवा संस्थान, रांची से ग्रामीण विकास में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

राजीव ने झारखंड में समुदाय आधारित प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन परियोजनाओं और जलवायु परिवर्तन के स्थानीय प्रभाव से संबंधित अध्ययन में कार्य किया है। वे ज्ञान साझा में कार्यरत हैं और उन्होंने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में अपने निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं। उनके लेख पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुए हैं।

"गाँव, विकास खंड और जिले जैसे अनेक स्तरों पर सीखने और काम करने के अनुभव से मुझे पेशेवर के रूप में उभरने तथा ज्यादा बड़ी परियोजनाओं में काम करने का कौशल हासिल करने में मदद मिली है।"

श्रीकांत पुरवार

गुमला, झारखंड

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर से गणित में बी एस सी और गोविंद बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद से ग्रामीण विकास में एम बी ए तथा कॉर्पोरेट मूल्य प्रबंधन एवं अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली से कॉर्पोरेट सोशल रेस्पोंसिबिलिटी में एडवांसड पी जी सर्टिफिकेट कोर्स

श्रीकांत ने रायबरेली में स्थित गैर सरकारी संगठन में विपणन (मार्केटिंग) और परियोजना समन्वयक के रूप में काम किया है। वह स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) और बैंकों के साथ उनके संबंध को बढ़ावा देने, आपूर्ति श्रृंखला के विकास, स्वयं सहायता समूहों में आय सृजन गतिविधियों को बढ़ावा देने के साथ ही आवधिक क्षेत्र सर्वेक्षण और आंकड़े विश्लेषण के काम से भी जुड़े रहे हैं।

"यह प्रशासन की कार्य प्रणाली सीखने, कार्यक्रम कार्यान्वित करने की प्रक्रिया को समझने, आखिरी व्यक्ति तक योजना पहुंचाने के महत्वपूर्ण अंतर की पहचान करने तथा उसके समाधान सुझाने का अवसर था।"

मोहम्मद करीमुद्दीन मलिक

हजारीबाग, झारखंड

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ से मास कम्युनिकेशन एंड सोशल वर्क में बी ए और सोशल इंजीनियरिंग में एम ए।

करीमुद्दीन ने महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) से संबंधित नीति अनुसंधान में कार्य शुरू किया और उन्होंने उत्तर प्रदेश सरकार एवं एक्शन ऐड के साथ प्रतापगढ़ जिले में 137 सामाजिक लेखा जांच के संचालन में भाग लिया है। उन्होंने पंचायत अधिकारियों और महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम के तहत सामाजिक जाँच कैसे करें इसके बारे में आम जनता को प्रशिक्षण भी दिया है।

"मैं स्वयं को समाज के प्रति अधिक आवेश से भरा और अधिक उत्तरदायी के रूप में देखना चाहता था।"

विनोद चंद्रवाल

हज़ारीबाग, झारखंड

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से जीव विज्ञान में स्नातक, फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज़, उदयपुर से मानव संसाधन में एम बी ए, इंदिरा गाँधी नेशनल ओपेन यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली से ग्रामीण विकास में स्नातकोत्तर डिप्लोमा और वर्धमान महावीर ओपेन यूनिवर्सिटी, कोटा से लेबर लॉ में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

विनोद ने कार्यक्रम अधिकारी के रूप में राजस्थान के पंचायती राज और ग्रामीण विकास मंत्रालय के साथ काम किया है। वह मनरेगा से संबंधित परियोजना प्रबंधन, नियोजन और लोक संपर्क जैसे कार्यों से जुड़े रहे हैं।

"पी.एम.आर.डी.एफ. ऐसी थी जैसे किसी ने मेरे सपनों के अनुरूप काम रचा है।"

बेलमती जोंको

खूंटी, झारखंड

जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर के बोस्टन कॉलेज फॉर प्रोफेशनल स्टडीज़ से बायोटेक्नोलॉजी में बी एस सी और कलिंगा इंस्टिट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलोजी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर से रूरल मैनेजमेंट में एम बी ए।

बेलमती को आजीविका प्रबंधन, कृषि व्यवसाय और कृषि इनपुट विपणन के क्षेत्रों में एक साल का अनुभव है।

"पी.एम.आर.डी.एफ. ने मुझे लोगों में विकास की समझ को बढ़ाने का मौका दिया है।"

शीला मतंग

खूंटी, झारखंड

इतिहास में बी ए ऑनर्स, सोशल वर्क में एम ए।

शीला ने ढ़ाई साल के कार्य अनुभव के दौरान सार्वजनिक स्वास्थ्य के मुद्दों पर व्यापक काम किया है। उन्होंने गुजरात राज्य सरकार एड्स नियंत्रण संस्था के साथ काम किया है। वह राजस्थान में भी रहीं जहाँ उन्होंने महिलाओं के प्रजनन स्वास्थ्य और शहरी मलिन बस्तियों में सार्वजनिक स्वास्थ्य के मुद्दों पर काम किया। झारखंड में उन्होंने किशोर स्वास्थ्य के मुद्दों पर काम किया है।

"कार्यक्रमों के नियोजन और कार्यान्वयन में समुदाय का स्वामित्व समग्र एवं सतत् विकास का मुख्य निर्धारक है।"

अश्विन प्रसाद

कोडरमा, झारखंड

रांची विश्वविद्यालय, रांची से बी कॉम और राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान, हैदराबाद से ग्रामीण विकास प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

अश्विन ने आईएल एंड एफएस क्लस्टर विकास पहल लिमिटेड के साथ काम किया जहां वह कंपनी की कौशल विकास पहल से जुड़ी नियुक्ति के लिए झारखंड राज्य समन्वयक थे। वह सामाजिक एकजुटता, समन्वय, और सरकारी एजेंसियों, उद्योगों एवं सामाजिक संगठनों के साथ महत्वपूर्ण साझेदारी में भी शामिल रहे हैं। उन्होंने झारखंड के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के लिए कौशल अन्तर आंकलन अध्ययन में भी योगदान दिया है।

"यह सफर तो सिर्फ शुरू हुआ है और अभी तो काफी काम करना है।"

विवेकानंद गौतम

ग्रामीण विकास विभाग, रांची, झारखंड

डॉ. बी आर अम्बेडकर कृषि अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी कालेज, इटावा से कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग में बी टेक और गवर्नमेंट पॉलिटेक्निक, लखनऊ से इन्फोरमेशन टेक्नोलोजी में डिप्लोमा।

विवेकानंद को दूरसंचार उद्योग में काम करने का दो साल का अनुभव है। उन्होंने विज्ञापनदाता और सर्वेक्षण इंजीनियर के रूप में भी काम किया है।

"मैंने ग्रामीण क्षेत्रों में जमीनी स्तर पर समस्याओं को देखने और समझने का अवसर हासिल करने के लिए पी.एम.आर.डी.एफ. से जुड़ने का फैसला किया।"

शैलजा तिग्गा

लातेहार, झारखंड

सेंट जेवियर्स कॉलेज, रांची से अर्थशास्त्र में बी ए ऑनर्स तथा जेवियर समाज सेवा संस्थान, रांची से ग्रामीण विकास में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

शैलजा को ग्रामीण विकास के क्षेत्र में काम करने का तीन साल का अनुभव है। वह परियोजना नियोजन, बजट, फेलोशिप योजनाओं का पर्यवेक्षण एवं मूल्यांकन, आंकड़े विश्लेषण और स्वयं सहायता समूहों के लिए प्रशिक्षण आयोजित करने और क्षमता निर्माण के कार्यों में शामिल रही हैं। उन्होंने आदिम जनजाति वर्ग के बच्चों के लिए आवासीय शिक्षा परियोजना शुरू की, लोक कार्यक्रम और ग्रामीण प्रौद्योगिकी विकास परिषद् और टाटा स्टील, जमशेदपुर के सहयोग से एक ग्राम श्री मेले का आयोजन किया और पूर्वी सिंहभूम में बेरोजगार युवकों के लिए आवासीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम की भी शुरूआत की।

> *“विभिन्न सामाजिक समूहों से जुड़े रहने से सामाजिक–आर्थिक परिदृश्य को समझने और उससे निपटने की मेरी क्षमता बढ़ी है।”*

जयंती कुजुर

लोहरदगा, झारखंड

सेंट जेवियर्स कॉलेज, रांची से अकाउंट्स में बी ए ऑनर्स और जेवियर समाज सेवा संस्थान, रांची से ग्रामीण विकास में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

जयंती ने प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, ग्रामीण संस्थाओं को मजबूत बनाने, सतत् आजीविका और महिला सशक्तिकरण से संबंधित मुद्दों पर तीन साल काम किया है। उन्होंने गांव में समूह गतिविधियों के माध्यम से ग्रामीण संस्थाओं को मजबूत करने के लिए काम किया। उन्होंने क्षेत्र के काम के दौरान तीन गांवों का अध्ययन किया और ग्रामीण स्वयं सेवकों को प्रशिक्षित भी किया।

> *“पी.एम.आर.डी.एफ. में आवेदन करने का मेरा मुख्य उद्देश्य सरकार में प्रिमिटिव (आदिम) आदिवासी समूहों के साथ काम करना था।”*

श्रद्धा भगत

लोहरदगा, झारखंड

सेंट जेवियर्स कॉलेज, रांची से पॉलिटिकल साइंस में बी ए ऑनर्स और जेवियर समाज सेवा संस्थान, रांची से ग्रामीण विकास में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

श्रद्धा सामुदायिक भागीदारी, नियोजन, कार्यान्वयन, पर्यवेक्षण, और प्रलेखन से जुड़ी रहीं हैं। उन्होंने सूक्ष्म स्तर पर योजना बनाने और प्रशिक्षण देने का काम किया। उनका काम लिंगानुपात में गिरावट, लैंगिक भेदभाव, शिक्षा, और बाल श्रम के मुद्दों से संबंधित रहा है।

"मैंने आदिवासी लड़की होने के नाते अपना मन बनाया क्योंकि अपने लोगों के विकास के लिए काम करना मेरी पहली जिम्मेदारी है।"

सुमित कुमार

पश्चिम सिंहभूम, झारखंड

सीवी रमन इंजीनियरिंग कॉलेज, भुवनेश्वर से इलेक्ट्रॉनिक एंड टेलीकम्युनिकेशन इंजीनियरिंग और टी.आई.एस.एस., मुम्बई से समाज कार्य में एम ए।

सुमित ने जेएसडब्ल्यू फाउंडेशन के लिए निगम क्षेत्र में काम शुरू किया जहां वह जल संरक्षण, अपशिष्ट प्रबंधन और स्वच्छ विकास तंत्र परियोजनाओं पर संगठन के पर्यावरण प्रयासों का काम देख रहे थे। उन्होंने परियोजनाओं के कार्यान्वयन में सुधार के लिए सरकारी संस्थानों और गैर सरकारी संगठनों के साथ संपर्क का कार्य भी किया है।

"निगम क्षेत्र में काम करने से मुझे संतुष्टि नहीं मिली क्योंकि मैं जमीनी स्तर पर कार्यक्रमों के कार्यान्वयन से सीधे तौर पर नहीं जुड़ा था।"

अरविंद लकड़ा

पलामू, झारखंड

कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी ए और जेवियर समाज सेवा संस्थान, रांची से ग्रामीण विकास में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

अरविंद ने वित्तीय समावेशन के क्षेत्र में काम का अनुभव हासिल किया है। उनके काम में गुजरात के एक जिले में चार विकास खंडों में नियोजन, कार्यान्वयन, पर्यवेक्षण, मूल्यांकन और प्रलेखन का कार्य शामिल था। उन्होंने शिक्षा और आजीविका परियोजनाओं के अंतर्गत भी काम किया है।

“मैंने महसूस किया कि सरकार ने ग्रामीण गरीब जनता की बहुत मदद की है तथा विभिन्न कार्यक्रमों एवं योजनाओं के माध्यम से उनकी आर्थिक हैसियत मजबूत की है तथापि समुचित पर्यवेक्षण एवं मूल्यांकन की शीघ्र ज़रूरत है।”

श्वेता त्रयांबक

रामगढ़, झारखंड

बिरला इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, मेसरा, रांची से बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में बी ए और जेवियर समाज सेवा संस्थान, रांची से एम बी ए और जेवियर लेबर रिलेशन्स इंस्टिट्यूट, जमशेदपुर से उद्यमिता प्रबंधन में स्नातकोत्तर

श्वेता ने लोक कार्यक्रम और ग्रामीण प्रौद्योगिकी विकास परिषद् और ट्राइबल कल्चरल सोसाइटी, जमशेदपुर के साथ काम किया है। आजीविका, महिला सशक्तिकरण, रोजगार और शिक्षा उनके कार्य क्षेत्र रहे हैं।

“मुझे उस समय आशा की किरण नजर आई जब अनेक महिलाएं सामाजिक अंकेक्षण के लिए आगे आईं और अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाई।”

वैभव माहेश्वरी

रामगढ़, झारखंड

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर से बी एस सी और एम बी ए।

वैभव ने एक वर्ष इवेन्ट मैनेजमेन्ट के क्षेत्र में काम किया है। परियोजना प्रबंधक के रूप में, उनका काम समन्वय और यात्रा करना था जिसमें उन्हें संस्कृतियों, समाज और प्रणालियों की व्यापक समझ हासिल करने का अवसर मिला।

"प्रणाली कैसे काम करती है उस तरीके को समझना, सार्थक एवं कारगर कार्यक्रम बनाने के लिए पूरी तरह आवश्यक है।"

अक्षय कश्यप

मुख्य सचिव कार्यालय, रांची, झारखंड

इन्स्टिट्यूट ऑफ एडवान्स्ड स्टडीज़ इन एजुकेशन, सरदारशहर, राजस्थान से सूचना प्रौद्योगिकी में बी एस सी ऑनर्स और टी.आई.एस.एस., मुम्बई से सोशल वर्क में एम ए।

अक्षय ने संस्थानों एवं क्षेत्र स्तर पर रणनीतिक सलाहकार सेवाएं प्रदान करने के लिए विभिन्न परियोजनाओं पर बेसिक्स कंसल्टिंग एंड ट्रेनिंग सर्विसेज़ के साथ काम किया है। उन्होंने परियोजना प्रबंधक, शोधकर्ता और सलाहकार के रूप में संस्थाओं के लिए समर्थन जुटाया और उत्पाद विकास में योगदान दिया।

"अब मैं गरीबी उन्मूलन में सरकार के समक्ष आने वाली विभिन्न चुनौतियों से निपटने के लिए ज्यादा सजग हूँ।"

दीप्ति परिधि किन्डो

रांची ग्रामीण, झारखंड

रांची विश्वविद्यालय, रांची से कम्प्यूटर एप्लिकेशन में बी एस सी ऑनर्स तथा जेवियर समाज सेवा संस्थान, रांची से ग्रामीण विकास में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, स्कूल ऑफ सोशल सांइन्सेज्, नई दिल्ली से लोक प्रशासन में एम ए।

दीप्ति गुजरात के कच्छ में टाटा पॉवर कंपनी सीजीपीएल के साथ प्रशिक्षण पूरा कर चुकी हैं। उन्होंने स्व–प्रशासन पंचायती राज संस्थाओं, स्वास्थ्य, आजीविका, शिक्षा और एनआरएम को सुदृढ़ करने के लिए समूह समन्वयक के रूप में गुजरात में काम किया है। दीप्ति गरीबों, ग्रामीण महिलाओं के लिए आजीविका अवसरों को प्रोत्साहन देने के लिए झारखंड में राज्य के सहायक के रूप में काम कर चुकी हैं।

“मैं वंचित लोगों के सशक्तिकरण की दिशा में सहायक के रूप में काम करने के लिए पी.एम.आर.डी. फेलो बनी ताकि वे अपनी किस्मत खुद लिख सकें।”

नीलांजना मोइत्रा

रांची ग्रामीण, झारखंड

विश्वभारती विश्वविद्यालय, शान्तिनिकेतन से सामाजिक कार्य में बी ए और एम ए।

नीलांजना ने झारखंड में उद्यम विकास प्रशिक्षक और निगरानी, मूल्यांकन एवं प्रलेखन अधिकारी के रूप में काम किया है। उन्होंने आजीविका सृजन के बारे में ग्रामीण गरीब महिलाओं को प्रशिक्षित किया तथा उनका सहयोग किया और उन्होंने महिला उद्यमियों के लिए उद्यम निर्माण प्रशिक्षण और उद्यम विकास प्रशिक्षण आयोजित किए। इसके अलावा उन्होंने कार्यात्मक साक्षरता पर डिजिटल पाठ्यक्रम डिजाइन किया है।

“मैं इस जिज्ञासा के साथ पी.एम.आर.डी.एफ. में शामिल हुई थी कि सरकार के साथ, सत्ता और अधिकार के साथ–और सबसे महत्वपूर्ण–लोगों की भलाई के लिए संसाधनों तक पहुंच बनाते हुए, काम करना कैसा रहेगा।”

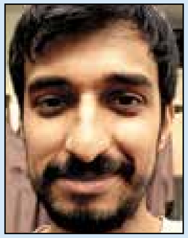

नितिन शुक्ला

सरायकेला खरसावाँ, झारखंड

विस्वेसवराया प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, बेलगॉम से दूरसंचार इंजीनियरिंग में बी ई।

नितिन ने ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना की पहुंच के मुद्दों से निपटने के प्रयास में एक वर्ष स्वतंत्र उद्यमी के रूप में काम किया है। उन्होंने दूरसंचार क्षेत्र में भी काम किया है।

“पी.एम.आर.डी.एफ. ने मुझे थोड़े से समय में ही आईएपी, मनरेगा और यूआईडी जैसी विविध योजनाओं पर काम करने का अवसर दिया है।”

शशि कुमार वर्मा

ग्रामीण विकास विभाग, रांची, झारखंड

बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग, ए वी आई टी विनायक मिशन्स विश्वविद्यालय, चेन्नई।

शशि ने आंकड़ा प्रबंधन और आंकड़ा केंद्र प्रौद्योगिकियों पर अग्रणी इन्फोरमेशन टेक्नोलॉजी कंपनियों के साथ काम किया है। कई अत्याधुनिक तकनीकी जैसे आईबीएम एआईएक्स, क्लाउड एंड ग्रिड कम्प्यूटिंग में उन्हें विशेषज्ञता हासिल है।

“मैं लोगों और उनकी जरूरतों एवं समस्याओं के लिए प्रौद्योगिकी से परे सोचने के लिए विवश हुआ।”

रामाशीष रजक

पश्चिम सिंहभुम, झारखंड

जमशेदपुर कोऑपरेटिव कॉलेज, रांची विश्वविद्यालय, रांची से अर्थशास्त्र में बी ए ऑनर्स और दिल्ली स्कूल ऑफ सोशल वर्क, दिल्ली विश्वविद्यालय से समाज कार्य में एम ए।

रामाशीष ने राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड की सहकारी परियोजना में सहायक प्रबंधक का कार्य किया है। उनका कार्य ग्राम स्तर पर स्वयं सहायता समूहों से पशुपालन, किसानों से दूध की सीधी खरीद, गांव में दूध की कीमत पर बिचौलियों का असर कम करने और उन्हें आगे संपर्क करने की सुविधा उपलब्ध कराने के जरिए आजीविका के अवसर पैदा करना भी था। उन्होंनें उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान में जमीनी स्तर पर पांच साल तक काम किया है।

“पी.एम.आर.डी.एफ. ने मुझे कौशल प्रशिक्षण और नियुक्ति के जरिए सारंदा के युवाओं की आजीविका को प्रोत्साहन देने का अवसर दिया है।”

कथा कार्तिकी बालाघाट जिले में जिलास्तरीय अधिकारियों के प्रशिक्षण में।

नीरज आहूजा

अनूपपुर, मध्य प्रदेश

इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन में बी ई।

नीरज ने इन्फोसिस के साथ एक सिस्टम इंजीनियर के रूप में काम किया। उसके बाद वह आईसीआईसीआई फेलोज़ कार्यक्रम में शामिल हुए और उन्होंने मध्य प्रदेश के पन्ना जिले में पंचायती राज और स्थानीय स्व–शासन के मुद्दों पर समर्थन – सेंटर फॉर डेवेलपमेंट सर्पोट के साथ काम किया।

"बाधाओं के बावजूद जिला स्तर पर प्रणाली जैसे कार्य करती है, उसकी सराहना करनी पड़ेगी।"

आरती मिश्रा

बालाघाट, मध्य प्रदेश

बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल से फिजियोथेरपी में स्नातक तथा कलिंगा इन्स्टिट्यूट ऑफ इण्डस्ट्रियल टेक्नोलॉजी के स्कूल ऑफ रूरल मैनेजमेंट, भुवनेश्वर से रूरल मैनेजमेंट में एम बी ए।

आरती ने आदिवासी शिक्षा के क्षेत्र में काम किया है। उन्होंने सार्वजनिक निजी भागीदारी उद्यमों के लिए परियोजना सलाहकार का काम किया तथा विद्यार्थियों के लिए कैरियर परामर्श कार्यक्रम आयोजित किए हैं। वह दसवीं कक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थियों की प्रगति का पता लगाने से जुड़ी अल्पावधि परियोजनाओं एवं मदर्स कमिटी बनाने के काम से जुड़ी रहीं हैं और स्कूलों में गणित प्रयोगशालाएं स्थापित करने के लिए संगठनों के साथ समन्वय किया है।

"परस्पर मिलकर सीखने की संभावना और ऐसे क्षेत्रों– जहां विकास की बहुत जरूरत हो – में विकास सुगम बनाने ने मुझे पी.एम.आर.डी.एफ. की तरफ आकर्षित किया।"

कथा कार्तिकी

बालाघाट, मध्य प्रदेश

लेडी श्रीराम कॉलेज, नई दिल्ली से अंग्रेजी साहित्य में बी ए ऑनर्स और ससेक्स विश्वविद्यालय के विकास अध्ययन संस्थान से डेवलपमेंट स्ट्डीज में एम ए।

राष्ट्रमंडल स्कॉलर के रूप में कथा ने तीन साल अंतर्राष्ट्रीय विकास, जलवायु परिवर्तन वार्ता और ग्रामीण विकास के क्षेत्र में काम किया है।

"जिला स्तर पर काम करना ऐसा रहा जैसे आइने में उस हकीकत को देखना जिसके अस्तित्व के बारे में मैं हमेशा संदेह करती थी लेकिन कभी उसका सामना नहीं किया।"

विक्रमजीत शर्मा

छिन्दवाड़ा, मध्य प्रदेश

पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से कम्प्यूटर साइंस और इंजीनियरिंग में बी ई और लिबरल आर्ट्स एंड साइंसेज (यंग इंडिया फेलोशिप, पेंसिल्वेनिया विश्वविद्यालय और आईएफआरई) से स्नातकोत्तर।

विक्रम ने तकनीक कन्सल्टिंग के क्षेत्र में मैकेफी, माइक्रोसॉफ्ट और ईएमसी स्क्वायर के लिए कन्सल्टन्ट के रूप में लगभग दो साल काम किया है। सोशल सेक्टर स्टार्ट–अप की कोर टीम के सदस्य के रूप में उन्होंने गरीबी, ग्रामीण विकास, भ्रष्टाचार, स्त्री–पुरुष के बीच भेदभाव और विदेशी नीति जैसे मुद्दों से युवाओं को जोड़ने और उनके दृष्टिकोंण संबंधी आंकड़े लेने के लिए मुद्दा आधारित ऑनलाइन सर्वेक्षण की परिकल्पना की और उसे कार्यान्वित किया। वे सामाजिक उद्यमिता, प्रशासन और युवा वर्ग के बारे में विचार साझा करने के लिए स्टार्टिंग ब्लॉक (बॉस्टन,11), ऑक्सफोर्ड (वाईबीडी) और क्लिंटन ग्लोबल इनीशिएटिव (सैंट लुईस, 12) जैसे वैश्विक मंचों के साथ जुड़े रहे हैं।

"पी.एम.आर.डी.एफ. विकास और प्रशासन की सूक्ष्म व्यवस्था को समझने में मेरे लिए बहुमूल्य अवसर साबित हुई है।"

रोहित जोशी

सिंगरौली, मध्य प्रदेश

कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल से बी कॉम और राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान, हैदराबाद से रूरल मैनेजमेंट में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

रोहित को अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में करीब तीन साल का अनुभव है। उन्होंने क्षमता निर्माण, आजीविका और कौशल विकास पर काम किया तथा महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम, कैश ट्रान्सफर और सार्वजनिक वितरण प्रणाली पर शोध कार्य भी किया है।

"पी.एम.आर.डी.एफ. के रूप में काम करने के दौरान कुछ निराशा हाथ लगी लेकिन अनेक पल आनंद के भी रहे।"

सौरभ दत्ता

डिण्डौरी, मध्य प्रदेश

सरकारी मॉडल साइन्स कॉलेज, जबलपुर से इलेक्ट्रॉनिक्स में बी एस सी और रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर से सामाजिक कार्य में एम ए।

सौरभ ने क्षेत्र अन्वेषक के रूप में राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन के साथ काम किया है। वह क्षेत्र पर्यवेक्षक और अन्वेषक के रूप में, डेवलपमेंट एंड रिसर्च सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड के साथ जुड़े रहे। इसमें गृह मंत्रालय के तहत वार्षिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण कराने में सहायता भी सम्मिलित है।

"इस कार्यक्रम ने मुझे एक सुअवसर उपलब्ध कराया है जिसके माध्यम से मैं ग्रामीण विकास क्षेत्र में काम कर सका।"

नेहा गुप्ता

मंडला, मध्य प्रदेश

कृषि इंजीनियरिंग कॉलेज, जबलपुर से कृषि इंजीनियरिंग में बी टेक।

नेहा को महिला स्वयं सहायता समूहों को बढ़ावा देने, आजीविका की योजना बनाने और क्षमता निर्माण के माध्यम से योजना के निष्पादन संबंधी गतिविधियों में छह साल का अनुभव है। उन्होंनें प्रदान के साथ काम किया तथा इसके अलावा उन्होंने समुदायों को लैंगिक रूप से संवेदनशील बनाने संबंधी कार्यशालाओं का आयोजन भी किया है।

"मैंने विकास के लिए सरकार जैसे अन्य महत्वपूर्ण हितधारकों के साथ काम करने की जरूरत महसूस की।"

डॉ सुषमा तायवडे

मंडला, मध्य प्रदेश

पंडित खुशीलाल शर्मा सरकारी आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज और संस्थान, भोपाल से आयुर्वेदिक मेडिसिन एंड सर्जरी में स्नातक तथा प्रबंधन अध्ययन संस्थान, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर से अस्पताल प्रशासन तथा स्वास्थ्य सेवा में एम ए और ग्रामीण विकास में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

डॉ तायवडे ने बाफना अस्पताल और हड्डी रोग अनुसंधान केंद्र, इंदौर में रेजिडेंट चिकित्सा अधिकारी और प्रशासनिक समन्वयक के रूप में काम किया है। उन्होंने स्वास्थ्य सेवा की गुणवत्ता सलाहकार के रूप में एन आर एच एम, महाराष्ट्र सरकार के साथ भी काम किया है।

"ज़िले में पी.एम.आर.डी.एफ. के रूप में काम सीखने का बहुत अच्छा अनुभव रहा। इससे मुझे ग्रामीण विकास, खासतौर से आदिवासियों एवं सीमांत समुदायों के समक्ष चुनौतियों के बारे में बहुत जानकारी मिली। यह स्वस्थ ग्रामीण भारत के लक्ष्य की तरफ योगदान देने में एक अच्छा मंच साबित हुआ है।"

रेखा सिंह

सियोनी, मध्य प्रदेश

राजीव गाँधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भोपाल से सूचना प्रौद्योगिकी में बी ई।

रेखा ने चेन्नई में सॉफ्टवेयर परीक्षण इंजीनियर के रूप में काम किया है। वह स्वास्थ्य, वित्त और होटल प्रबंधन के क्षेत्रों में भी काम कर चुकी हैं।

"प्रशासन के साथ काम करने से मुझे विकास के बारे में अपने विचारों को क्षेत्र में लागू करने का अवसर मिला।"

स्वस्ति पचौरी

सियोनी, मध्य प्रदेश

टाटा समाजिक विज्ञान संस्थान, मुंबई से विकास अध्ययन में एम ए, दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदू कॉलेज से बी ए ऑनर्स (अर्थशास्त्र) तथा भागीदारी निगरानी और मूल्यांकन में प्रमाणपत्र कार्यक्रम।

स्वस्ति अर्थशास्त्र में गोल्ड मेडलिस्ट हैं। उन्हें भारत में सरकार, सिविल सोसायटी और परामर्श संगठनों में काम करने का पांच साल का अनुभव है। उन्होंने समाज के निचले स्तर पर कार्यक्रम प्रबंधन, रणनीति परामर्श और सामुदायिक निवेश मापन के बारे में गहन अनुभव प्राप्त किया है। निवेश पर सामाजिक रिटर्न के क्षेत्र में उनके प्रयास सबसे अधिक महत्वपूर्ण रहे जहां उन्हें 2011 में केपीएमजी एनकॉर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनके कार्यों और अनुभवों में श्रम बाजार की द्विविधता, कृषि संकट/फसल अर्थशास्त्र, कल्याण अर्थशास्त्र और अनुदान प्रबंधन जैसे क्षेत्र भी शामिल रहे हैं।

"ग्रामीण गरीब उत्तम उद्यमी हैं।"

राजेश सिंह

शहडोल, मध्य प्रदेश

क्राइस्ट कॉलेज, राजकोट से बायोटेक्नोलॉजी में बी एस सी तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रबंध अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली से स्वास्थ्य और अस्पताल प्रबंधन में एम बी ए।

राजेश ने एड्स नियंत्रण परियोजना पर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के साथ काम किया है। वे एचआईवी रोगियों के लिए स्मार्ट कार्ड सिस्टम की स्थापना में भी शामिल रहे हैं। उनकी जिम्मेदारियों में विश्व स्वास्थ्य संगठन और संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ संपर्क कायम करना भी शामिल रहा है।

“प्रबंधन पशेवर होने के नाते मैं यह जानने को उत्सुक था कि सरकार विभिन्न स्तरों के वर्गीकरण के साथ जमीनी स्तर पर अनेक योजनाओं का प्रबंधन कैसे करती है।”

रेजनी पवित्रन

शहडोल, मध्य प्रदेश

मार इवानिओस कॉलेज, त्रिवेन्द्रम से मास कम्युनिकेशन में बी ए तथा अमृता विश्व विद्यापीठम्, कोयम्बटूर से सोशल वर्क में एम ए।

रेजनी ने ग्रामीण विकास में गैर लाभकारी संगठनों के साथ दो साल काम किया है। वह अंडमान द्वीप समूह में आजीविका विकास योजनाओं के डिजाइन में शामिल रहीं हैं। उन्होंने प्रवासी मजदूरों के कल्याण और अधिकारों की परियोजनाओं पर भी काम किया है तथा नागरिक एवं सरकार की बैठकों के आयोजन और दूरस्थ हिमालयी गांवों में सामाजिक–कानूनी कियोस्क की स्थापना के माध्यम से शासन में जनता की भागीदारी को बढ़ावा दिया है।

“ग्रामीणों और अधिकारियों के साथ बातचीत एवं कार्य ने मुझे सोचने का जरिया दिया और मुझे विनम्र एवं व्यवहारिक बनाए रखा।”

चिराग कुमार सोलंकी

सिधी, मध्य प्रदेश

सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर से इलेक्ट्रॉनिक्स में बी ई तथा दक्षिण ऑस्ट्रेलिया विश्वविद्यालय, एडिलेड से दूरसंचार में एम ई।

चिराग ने इलेक्ट्रिकल इंजीनियर ट्रेनी के रूप में एक साल काम किया है। इस दौरान उन्होंने सर्किट, ट्रांसफार्मर और ट्रैन्स्मिशन लाइनों से संबंधित मुद्दों पर काम किया।

"पी.एम.आर.डी.एफ. मेरे लिए महत्वाकांक्षी और क्रांतिकारी छलांग साबित हुई।"

भागवत अहिरवार

उमरिया, मध्य प्रदेश

महाराष्ट्र पशु और मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय, नागपुर से डेयरी टैक्नोलॉजी में बी टेक तथा भारतीय वन प्रबंधन संस्थान, भोपाल से वन प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

भागवत ने दुग्ध उद्योग में लगभग दो साल काम किया है। उन्होंने तकनीकी अधिकारी के रूप में वलसाड जिला सहकारी डेयरी फेडरेशन (अमूल) के साथ काम किया है। उनकी जिम्मेदारियों में समन्वय, गुणवत्ता नियंत्रण और श्रमशक्ति प्रबंधन शामिल रहे हैं।

"मैं पी.एम.आर.डी.एफ. से जुड़ा क्योंकि इसने मुझे तृणमूल स्तर पर विभिन्न हितधारकों के साथ काम करते हुए ग्रामीण विकस की पेचीदागियों को समझने का अवसर प्रदान किया।"

कुमार मनीश

उमरिया, मध्य प्रदेश

इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय से व्यापार प्रबन्धन में स्नातक, सिम्वियोसिस सेण्टर फॉर डिस्टेंस लर्निंग से व्यापार प्रबन्धन में स्नातकोत्तर और दिल्ली विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग से सामाजिक कार्य में स्नातकोत्तर (एमएसडब्ल्यू)।

कुमार को बिक्री, विपणन और संवर्धन में अनुभव हासिल है। उन्होंने ब्लैकबेरी संचालन भी संभाला और विप्रो बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग (बीपीओ) में प्रक्रियाओं का काम भी किया है। कुमार ने प्रशिक्षण, इवेंटस आयोजनों और प्रक्रिया प्रस्तुतियों में भी कार्य किया है। उन्होंने दिल्ली में स्व रोजगार महिला एसोसिएशन के साथ भी अनुभव हासिल किया है। कुमार मनीश को कुंडा दतार गोल्ड मेडल एवं कार्वे मेमोरियल अवार्ड से सम्मानित किया गया है।

“इस अनुभव ने मुझे हर किसी के प्रति विनम्र और ज्यादा मानवीय बनाया है और मैं सोचता हूँ कि यह मेरे लिए पी.एम.आर.डी.एफ. से होने वाली सबसे बड़ी सीख होगी।”

महेश राउत गढ़चिरौली जिले के एक गांव की सभा में भाग लेते हुए।

प्रिया तायडे

गढ़चिरौली, महाराष्ट्र

पुणे विश्वविद्यालय, पुणे से राजनीति विज्ञान में बी ए और टी.आई.एस.एस., मुम्बई से विकास अध्ययन में एम ए।

प्रिया ने विभिन्न आर्थिक संदर्भों में शासन परिपाटियों का अवलोकन करने के लिए आवश्यक कार्य वर्णन में अनुभव हासिल किया है। वह पैरवी, अनुसंधान, प्रचार और नीति मसौदा तैयार करने में शामिल रही हैं।

"पी.एम.आर.डी.एफ. ने मुझे व्यक्तिगत रूप से और एक बेहतरीन नागरिक बनने में मदद की है।"

संतोष विश्वनाथ गेदम

गढ़चिरौनी, महाराष्ट्र

लक्ष्मीनारायण प्रौद्योगिकी संस्थान, नागपुर से बी टेक तथा भारतीय प्रबंधन संस्थान, बंगलौर से प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

संतोष ने आठ साल तेल और गैस के क्षेत्र में काम किया है। उन्होंने भारत पेट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटेड की मुम्बई शोधशाला के साथ सात साल बिताए और इस दौरान 15 तकनीशियनों की टीम का नेतृत्व किया तथा अनेक नई खोजें कीं। उन्होंने बाद में खुदरा क्षेत्र में सहायक प्रबंधक के रूप में काम किया। संतोष ने कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी पहल के माध्यम से स्थानीय समुदायों के साथ संबंध भी बढ़ाए।

"मैंने किसानों, ग्रामीण स्तर के सरकारी कर्मचारियों, शिक्षित युवाओं और स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं के साथ काम करने के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक और राजनीतिक परिदृश्य को समझा है।"

डॉ विजयकुमार मधुकर ताते

गोंदिया, महाराष्ट्र

सिओन आयुर्वेद महाविद्यालय से आयुर्वेद चिकित्सा और सर्जरी में स्नातक तथा टी.आई.एस.एस., मुम्बई से पब्लिक हेल्थ में एम ए।

"इस फेलोशिप ने मुझे चीजों को न सिर्फ अपने परिकल्पनीय रूप से समझने में समर्थ बनाया बल्कि मुझे उससे परे सोचने के लिए प्रोत्साहित भी किया।"

महेश राउत

गढ़चिरौली, महाराष्ट्र

यशवंतराव चव्हाण ओपन यूनिवर्सिटी, नासिक से पॉलिटिकल साइंस, इतिहास और अंग्रेजी साहित्य में बी ए और टी.आई.एस.एस., मुम्बई से सामाजिक कार्य में एम ए।

महेश को महाराष्ट्र और गोवा में प्राथमिक स्कूल शिक्षक के रूप में दो वर्ष का कार्य अनुभव है। वह दिल्ली में न्यू कान्सेप्ट इन्फर्मेशन सिस्टम के साथ परियोजना अधिकारी के रूप में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के लिए अनुसंधान परियोजना पर शोध और सर्वेक्षण विभाग में काम कर चुके हैं। महेश ने गढ़चिरौली की जिला परिषद, विकल्प, नागपुर के साथ काम किया है जहां उन्होंने पिछड़ा क्षेत्र अनुदान निधि विज़न दस्तावेज़ के लिए आंकड़े एकत्रित किये।

"पिछले एक साल से मैं ज्यादा जिम्मेदार नागरिक बन गया हूँ ,मेरा उद्देश्य एक अधिक जिम्मेदार समाज का निर्माण करना है।"

गजपति जिले में प्रबीना कुमार बेबार्ता एक गांव के दौरे पर।

राजकुमार गुप्ता

बलांगीर, ओडिशा

गंगाधर मेहर (ऑटोनोमस कॉलेज), संबलपुर से भूगोल में बी ए आनर्स तथा टाटा धान अकादमी, मदुरै से विकास प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा और मद्रास विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र में एम ए।

राजकुमार ने माइक्रोफाइनांस और आजीविका को बढ़ावा देने के क्षेत्र में डेढ़ साल काम किया है और नॉन टिम्बर फारेस्ट प्रोड्यूस और चाय के विपणन में अनुभव हासिल किया है।

"मैं मानता था कि महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम पलायन को रोकने के लिए प्रभावकारी उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।"

स्वप्ना सुचरिता

बलांगीर, ओडिशा

बक्सी जगबन्धु बिद्याधर ऑटोनोमस कॉलेज, भुवनेश्वर से मनोविज्ञान में बी ए और उत्कल यूनिवर्सिटी, भुवनेश्वर से नैदानिक मनोविज्ञान में एम ए।

स्वप्ना ने ढ़ाई साल अपोलो ग्लेन इगल्स अस्पताल के साथ काम किया है और वे विभिन्न मस्तिष्क संबंधी बीमारियों के रोगियों के न्यूरोसाइक्लॉजिकल मूल्यांकन में शामिल रहीं हैं। वे अल्जाइमर रोग, सीमैंटिक मनोभ्रंश और संवहनी मनोभ्रंश रोगियों के अस्पताल की संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान इकाई में अनुसंधान कार्य में सक्रिय रूप से जुड़ीं रहीं हैं।

"पी.एम.आर.डी.एफ. ग्रामीण जनता के बीच काम करने और राष्ट्र के ग्रामीण एवं आदिवासी क्षेत्रों में विकास एवं कल्याण को बढ़ावा देने में योगदान के लिए प्रतिबद्ध युवाओं के लिए उत्कृष्ट अवसर है।"

गंगाधर पुआला

बलांगीर, ओडिशा

रायगडा विश्वविद्यालय से पॉलिटिकल साइंस में बी ए और पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पांडिचेरी से सोशल वर्क में एम ए व एम. फिल।

गंगाधर ने एक वर्ष आजीविका और स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम किया है। वह ओडिशा के रायगडा जिले में ग्रामीण गरीबों की वार्षिक आजीविका योजना की तैयारी में शामिल रहे हैं। उन्होंने स्वास्थ्य के मुद्दों पर जागरूकता फैलाने के लिए भी काम किया है।

"मैंने पी.एम.आर.डी.एफ. के लिए आवेदन इसलिये किया क्योंकि मैने महसूस किया कि यह मुझे ग्रामीण गरीबों के लिए काम करने और उनकी मदद करने की आज़ादी देगा।"

अलिवा दास

देबगढ़, ओडिशा

इलेक्ट्रानिक्स एवं कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग में बी टेक।

"पी.एम.आर.डी.एफ. से मुझे खुद को जानने और अपनी क्षमता समझने में मदद मिली है और इसने मुझे यह पता लगाने का अवसर दिया कि मैं कहाँ काम करना चाहती थी।"

प्रबीना कुमार बेबार्ता

गजपति, ओडिशा

बक्सी जगबन्धु बिद्याधर ऑटोनोमस कॉलेज, भुवनेश्वर से अर्थशास्त्र में बी ए और टी.आई.एस.एस., मुम्बई से सोशल वर्क (विकलांगता अध्ययन और कार्य) में एम ए।

प्रबीना को विकलांगता से संबंधित कार्य का दो साल का अनुभव है। उन्होंने महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ के ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में विकलांग व्यक्तियों की आवश्यकता के मूल्यांकन और विकलांगता क्षेत्र में कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी पहल जैसे मुद्दों पर अनुसंधान परियोजनाओं की एक श्रृंखला शुरू की है।

"मुझे विश्वास है कि लोगों और सरकार के साथ क़रीबी तौर पर काम करना निश्चित रूप से मेरे लिए वास्तविकता को समझने और उस सोच का निर्माण करने में मददगार होगा जो मेरे डॉक्टोरल अध्ययन और शैक्षिक जीवन में उपयोगी रहेंगे।"

प्रकाश कुमार साहू

गजपति, ओडिशा

प्राणनाथ ऑटोनोमस कॉलेज, ओडिशा से एकाउंटिंग में बी कॉम ऑनर्स और दी ह्यूमन डेवेलपमेण्ट फाउण्डेशन स्कूल ऑफ मैनेजमेण्ट, कटक, ओडिशा से वित्त और प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

प्रकाश ने राजस्थान के चुरू जिले में पिरामल फाउंडेशन के साथ गाँधी फेलो के रूप में काम किया है। फेलो के रूप में उन्होंने पांच सरकारी स्कूलों में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए सहायक के रूप में भी काम किया है।

"पी.एम.आर.डी.एफ. ने मुझे भारतीय शासन प्रणाली की जटिल संरचना की जानकारी दी है।"

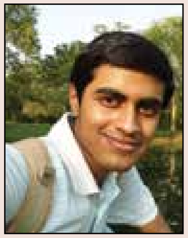

पलानी फणी किरण

गंजाम, ओडिशा

बिरला इंस्टिट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी एंड साइंस, पिलानी, केके बिड़ला गोवा कैम्पस से इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग में बी ई ऑनर्स।

पलानी ने रॉकवेल ऑटोमेशन के साथ सेल्स इंजीनियर के रुप में कोलकाता में काम किया। उनके कार्य क्षेत्र के अन्तर्गत त्रिपुरा, मेघालय और भूटान आते थे।

"मैं सरकारी कार्य की पर्यवेक्षण, मूल्यांकन और नियोजन प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी की नई खोज लाने के बारे में योगदान कर रहा हूँ।"

आलोक कुमार बिस्वाल

जाजपुर, ओडिशा

संभलपुर विश्वविद्यालय, बुरला से बी ए और उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर से रूरल मैनेजमेंट में एम ए।

आलोक ने उद्यमिता विकास, आजीविका विकास, आपदा प्रबंधन, आदिवासी विकास, सार्वजनिक स्वास्थ्य, आदिवासी शिक्षा, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के क्षेत्र में काम किया है।

"पी.एम.आर.डी.एफ. स्थानीय समस्याओं से निपटने के लिए सरकारी तंत्र के बारे में सीखने का उत्कृष्ट मंच है। हम हमारी व्यावसायिक जानकरी और अनुभवों से जिला प्रशासन का सहयोग कर पाये।"

अनिल शर्मा

कालाहांडी, ओडिशा

बक्सी जगबन्धु बिद्याधर ऑटोनोमस कॉलेज, भुवनेश्वर से बी ए और टी.आई.एस.एस., मुम्बई से एमए।

अनिल ने उत्तरी गुजरात में आदिवासियों की आजीविका को बढ़ावा देने और उन्हें मज़बूत करने के लिए गुजरात सरकार के आदिवासी विकास विभाग के साथ काम किया है।

> *“पी.एम.आर.डी.एफ. के दौरान मुझे मालूम हुआ कि कैसे छोटा सा हस्तक्षेप, जिसे हम अक्सर मामूली समझ कर अनदेखा कर देते हैं, भी दूसरे के जीवन में ऐसा प्रभाव डाल सकता है जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।”*

निवेदिता मोहंती

कंधमाल, ओडिशा

ओडिशा इंजीनियरिंग कॉलेज, भुवनेश्वर से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में बी ई और राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान, हैदराबाद से ग्रामीण विकास प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

निवेदिता ने संयुक्त राष्ट्र महिला राष्ट्रीय संस्थान की ग्रामीण विकास परियोजना – भारत और दक्षिण एशिया में महिलाओं के राजनीतिक नेतृत्व और प्रशासन को बढ़ावा देने के बारे में प्रशिक्षण प्रबंधक के रूप में काम किया है। प्रशिक्षक के रूप में उन्होंने मानव तस्करी, जेण्डर फ्रैण्डली टूल्स और जेण्डर बजटिंग जैसे मुद्दों पर कार्यशालाओं का आयोजन किया है। निवेदिता ने निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों पर शोध अध्ययन भी किया है।

> *“गाँव में रहने से मुझे आदिवासियों के साथ काम करने का उत्कृष्ट मंच मिला और उनके सामने मौजूद गरीबी जैसी समस्याओं को समझने में मदद मिली है।”*

सौम्य रंजन नाथ

कंधमाल, ओडिशा

उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर से अंग्रेजी साहित्य में बी ए ऑनर्स और टी.आई.एस.एस., मुम्बई से सामाजिक कार्य में एम ए।

सौम्य ने गुजरात सरकार के आदिवासी विकास विभाग में गुजरात विकास सहायता संस्था के तहत सलाहकार के रूप में काम किया है। उनके कार्य क्षेत्रों में वर्षा आधारित कृषि आजीविका के लिए लघु और सूक्ष्म सिंचाई, नियुक्ति से जुड़े कौशल विकास कार्यक्रम, डेयरी आधारित आजीविका और गुणवत्ता आवासीय आदिवासी शिक्षा कार्यक्रम शामिल हैं।

"मैं विश्वास करता हूँ कि लोगों के स्वामित्व, स्वीकृति और अधिकारों को समझना विकास की प्रक्रिया में बहुत महत्वपूर्ण है।"

चंद्रशेखर भुइयां

कियोंझर, ओडिशा

उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर से बी एस सी, इंदिरा गाँधी नेशनल ओपेन यूनिवर्सिटी से इन्फोरमेशन टेक्नोलॉजी प्रबंधन मे ंएम बी ए।

चंद्रशेखर ने परियोजना कार्यान्वयन, प्रबंधन और जोखिम कम करने से जुड़ी विभिन्न भूमिकाओं में इन्फोसिस के साथ चार साल से अधिक काम किया है। वह 'टीच फॉर इंडिया' फेलो भी रहे हैं। फेलोशिप के दौरान उन्होंने कम आय वाले परिवारों के बच्चों के स्कूल में पढ़ाया और शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी काम किया।

"मुझे विश्वास है कि सभी हितधारकों का संयुक्त और सहकारी प्रयास गतिशील ग्रामीण भारत का निर्माण कर सकता है।"

पांडबा चरण मुंडा

कियोंझर, ओडिशा

उड़ीसा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर से कृषि अभियांत्रिकी में बी टेक तथा राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान, हैदराबाद से कृषि व्यवसाय प्रबंधन में एम बी ए।

पांडबा ने यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के साथ काम किया है जहां वह ऋण मूल्यांकन, अंडरराइटिंग, बिक्री और विपणन के कार्य से जुड़े रहे। वह स्पंदन स्फूर्ति फाइनेन्शियल लिमिटेड से भी जुड़े रहे जहां उन्होंने स्वयं सहायता समूहों को बनाने में मदद की तथा ऋण मूल्यांकन, मंजूरी और कृषि का भुगतान, ट्रैक्टर, कृषि और डेयरी ऋण वितरण का काम संभाला।

"मैं खुद को एक विकास प्रतिनिधि के रूप में देखता हूँ जो गरीब आम आदमी को उसका हक दिलाने में मदद करता है।"

कुलदीप ज्ञानेश्वर

कोरापुट, ओडिशा

गाँधीग्राम ग्रामीण विश्वविद्यालय, गाँधीग्राम से विकास प्रशासन में एम.ए.।

कुलदीप ने पब्लिक अफेयर्स सेंटर, बेंगलुरु में काम किया है जहां उनके काम के प्रमुख क्षेत्रों में नीति अनुसंधान और विश्लेषण, ज्ञान विकास और प्रबंधन, और साझेदारी प्रबंधन शामिल थे। पर्यावरण शासन के बारे में परियोजना पर काम करते हुए उन्होंने तमिलनाडु के तटीय समुदायों की आजीविका पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव की नागरिक निगरानी प्रक्रिया का समर्थन करने के लिए जलवायु परिवर्तन स्कोर कार्ड नामक जवाबदेही उपकरण के विकास में योगदान दिया। कुलदीप ने 2011 के राज्य विधानसभा चुनाव के दौरान राजनीतिक दलों के राजनीतिक घोषणापत्रों में पर्यावरण कार्यसूची को शामिल करना सुनिश्चित करने के लिए नागरिक नेतृत्व दबाव समूह के रूप में ग्रीन तमिलनाडु के लिए जनता के गठबंधन के गठन की प्रक्रिया में सहायता की।

"आदिवासियों के लिए प्रतिष्ठा एवं सम्मान के साथ पारदर्शी और जवाबदेह सरकारी प्रणाली एवं प्रक्रियाएं, वामपंथी उग्रवाद पीड़ित कोरापुट जैसे क्षेत्रों में लोगों का भरोसा जीत सकती हैं।"

सौम्यश्री ओमप्रकाश साहू

कोरापुट, ओडिशा

नयागढ़ ऑटोनोमस कॉलेज, नयागढ़ से वनस्पति विज्ञान में बी एस सी और भुवनेश्वर विपणन एवं सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, भुवनेश्वर से विपणन में एम बी ए।

सौम्यश्री ने भुवनेश्वर में एक आईटी कंपनी रिप्पलसॉफ्ट प्राइवेट लिमिटेड के साथ काम किया है। वह स्टेट बेंक ऑफ इंडिया यूथ फॉर इंडिया नामक एक वर्षीय ग्रामीण विकास फेलोशिप कार्यक्रम का भी हिस्सा रहे। इस दौरान उन्होंने छोटे और अधिकारहीन उत्पादकों के समूह के साथ काम किया और किसान क्लब और निर्माता संगठन का गठन किया। इससे उनकी पैदावार बढ़ाने के साथ आगे एवं पीछे संपर्क कायम होने से आय बढ़ाने में भी मदद मिली।

“हर दस किलोमीटर पर लोगों और संस्कृतियों की शानदार विविधता और नए भारत की संभावनाओं को देखने के साथ मुझे कोरापुट में रहने के दौरान आनंद की अनुभूति हो रही है।”

अनूप कुमार गिरि

मलकांगिरी, ओडिशा

उत्तरी ओडिशा विश्वविद्यालय, बारीपदा से समाजशास्त्र में बी ए और देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर से सामाजिक कार्य में एम ए।

अनूप ने उदयपुर स्थित गैर सरकारी संगठन “सेवा मंदिर” के साथ काम किया है। उन्होंने योजना, बजट, कार्यान्वयन और पर्यवेक्षण की जिम्मेदारी संभाली। अनूप ने युवाओं के विकास से संबंधित शिक्षा कार्यक्रम, गर्ल्स लिटरेसी इनीशिएटिव और अनौपचारिक शिक्षा का पर्यवेक्षण भी किया।

“पी.एम.आर.डी.एफ. सीखने का शानदार अनुभव रहा।”

बिभूति भूषण नायक

मलकांगिरी, ओडिशा

उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर से समाजशास्त्र में बी ए और टी.आई.एस.एस., मुम्बई से सामाजिक कार्य में एम ए।

बिभूति ने स्वास्थ्य, आजीविका और शिक्षा के क्षेत्र में काम किया है। उन्होंने मानसिक स्वास्थ्य, आदिवासी बच्चों की शिक्षा जैसे मुद्दों पर काम किया और स्वयं सहायता समूह जैसे आजीविका के विकल्प बनाने के लिए प्रयास किए। उनके कार्यों में कार्यक्रम प्रबंधन, समन्वय, निगरानी और मूल्यांकन, सामूहिक कार्य और सिविल सोसाइटी की पहल को मजबूत बनाना शामिल थे।

> *"मैंने ग्रामीण संस्कृति, परंपराओं और विभिन्न लोगों के रीति रिवाजों, उनकी जीवन शैली और राजनीति के बारे में सीखा।"*

डॉ कुमार शुभाशीष

मयूरभंज, ओडिशा

उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर से वनस्पति विज्ञान में बी एस सी तथा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस से वनस्पति विज्ञान में एम एस सी और पी एच डी वनस्पति विज्ञान (इकोटोक्सिकोलॉजी)।

डॉ शुभाशीष ने छह साल शिक्षा के क्षेत्र में कार्य किया है। उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग में अध्यापन कार्य और अनुसंधान किया और विभिन्न पत्रिकाओं के लिए 13 शोध पत्र लिखने के अलावा 25 अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया। डॉ शुभाशीष ने विभिन्न समाचार पत्रों में पर्यावरण के मुद्दों पर लेख भी लिखे हैं।

> *"मुझे विश्वास है कि गांवों के विकास के बिना भारत विकसित देश बनने का सपना भी नहीं देख सकता।"*

निर्लिप्ता मोहंती

मयूरभंज, ओडिशा

कम्प्यूटर एप्लीकेशन में स्नातक और स्नातकोत्तर।

निर्लिप्ता ने सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में आई बी एम इंडिया तथा शाखा संचालन प्रबंधक के रूप में आईसीआईसीआई बैंक के साथ काम किया है। उनके कार्यों में सॉफ्टवेयर विकास के विभिन्न चरणों में भाग लेना, कार्य–विधि नियम पुस्तिका और ई–परिपत्रों के अनुरूप शाखाओं में संचालन और जोखिम नियंत्रण सुनिश्चित करना, प्रवाह और बहिर्वाह विवरण की दैनिक निगरानी तथा सूची मदों का सत्यापन शामिल था। वह सीएसआर समूह का हिस्सा भी रहीं हैं।

“ग्रामीण विकास अपेक्षाकृत अलग–थलग और छितरी हुई आबादी वाले क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन स्तर और आर्थिक कल्याण में सुधार करने की प्रक्रिया है।”

रश्मि रंजन राउत

मयूरभंज, ओडिशा

बी टैक (ईटीसी), बी पी यू टी, ओडिशा।

एप्टेक प्राइवेट लिमिटेड के साथ शिक्षक के रूप में काम करते हुए, रश्मी ने सूचना प्रौद्योगिकी जगत के जरिए बदलते ज्ञान के साथ युवाओं को जोड़ने का काम किया। उन्होंने सॉफ्टवेयर डेवलेपर और उत्पाद प्रबंधक के रूप में महिंद्रा सत्यम के साथ भी काम किया। उन्होंने परियोजनाओं की निगरानी और सुगम संचालन सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न दलों और व्यक्तियों के साथ विभिन्न कार्य किए और कार्यों के बीच समन्वय किया।

“मैंने हमेशा यह सपना देखा कि मैं उन वंचित लोगों के समूह के लिए कुछ फलदायक काम कर रहा हूँ जिसे वर्तमान और भावी पीढ़ियां हमेशा याद रखेंगी। मुझे विश्वास है कि पी.एम.आर.डी. फेलो के रूप में मैं वैसा ही काम कर सकूंगा।”

अनुरंजन मिन्ज

नबरंगपुर, ओडिशा

राष्ट्रीय सामाजिक कार्य एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर से सामाजिक कार्य में बी ए तथा इंदौर सामाजिक कार्य विद्यालय, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर से सामाजिक कार्य में एम ए।

अनुरंजन ने शिक्षा के क्षेत्र में काम किया है। उनके कार्य में सामुदायिक स्वामित्व और सेवा के माध्यम से गुणवत्ता और प्रासंगिक शिक्षा तक पहुँच बढ़ाने के माध्यम से बच्चों के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ावा देना शामिल है। उनके कार्यों में स्कूली बच्चों और किशोरों के लिए आजीविका और जीवन कौशल का विकास भी शामिल है।

> *"पी.एम.आर.डी.एफ. सरकारी तंत्र को समझने और विकास क्षेत्र में प्रगतिशील विचारों को लागू करने का महत्वपूर्ण अवसर है।"*

देवी अर्चना आशे

नबरंगपुर, ओडिशा

कुंतला कुमारी साबत महिला महाविद्यालय, बालासोर से मनोविज्ञान में बी ए ऑनर्स और फकीर मोहन विश्वविद्यालय, बालासोर से पोपुलेशन स्टडीज़ में स्नातकोत्तर।

देवी अर्चना को आजीविका और स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम करने का पांच साल का अनुभव है। उनके कार्यों में स्वयं सहायता समूहों को मजबूत बनाना, बैंकों से ऋण का लाभ उठाने के लिए समूहों का क्षमता निर्माण और आदिवासी परिवारों के साथ आजीविका गतिविधियों की शुरुआत शामिल हैं। उन्होंने सामुदायिक स्वास्थ्य सहायकों के प्रशिक्षण में भी भाग लिया है।

> *"अधिक से अधिक परिवारों तक पहुँचना और उनके जीवन की गुणवत्ता में बदलाव लाना एक बहुत बड़ी चुनौती है।"*

मीनाक्षी संधा

नयागढ़, ओडिशा

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, राउरकेला से सिविल इंजीनियरिंग में बी टेक।

मीनाक्षी ने इन्फोरमेशन टेक्नोलोजी क्षेत्र में टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज के साथ पांच साल काम किया है। इसके अतिरिक्त आई टी इंजीनियर के रूप में सामान्य काम करते हुए उन्होंने रविवार एवम् अन्य अवकाशों में टी सी एस की कॉर्पोरेट सोशल रिस्पान्सबिलिटी की गतिविधियों में भाग लेने का समय निकाला जहाँ वह ग्रामीण विकास की पहल में शामिल रहीं और उन्होंने सिलाई प्रशिक्षण का आयोजन करके महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए काम किया। उन्होंने ग्रामीण स्कूलों के बच्चों की अंग्रेजी शिक्षा व कम्पयूटर साक्षरता को आगे बढ़ाने का काम भी किया।

“मुझे ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए काम करने का उत्साह रहा है। इसके अतिरिक्त उत्साह के साथ मैंने हमेशा ज्यादा प्रभावशाली ढंग से समाज के प्रति योगदान करने में पेशेवर कौशल हासिल करने की जरूरत भी महसूस की।”

चित्तरंजन महापात्र

नुआपाड़ा, ओडिशा

उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर से भूगोल में एम ए, और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुम्बई से नियोजन और विकास में एम फिल।

चित्तरंजन को क्षेत्रीय और सामुदायिक विकास, पर्यावरण विकास, शिक्षा, आजीविका वृद्धि, परियोजना प्रबंधन एवं मूल्यांकन, कार्य अनुसंधान और प्रलेखन के क्षेत्रों में पांच साल का अनुभव है। उन्होंने फोर्ड फाउंडेशन और टाटा ट्रस्ट की ओर से शुरू की गई परियोजनाओं पर भी काम किया है।

“पी.एम.आर.डी.एफ. भारत में विकास के दृष्टांत तलाशने में मेरे लिए बहुत उपयोगी रहा है।”

गौरी शंकर मिश्रा

नुआपाड़ा, ओडिशा

सरकारी कॉलेज, फुलबनी, बहरामपुर विश्वविद्यालय, ओडिशा से वनस्पति विज्ञान में बी एस सी और विश्व–भारती विश्वविद्यालय, शांति निकेतन से ग्रामीण विकास में एम ए।

गौरी शंकर ने लोक कार्यक्रम और ग्रामीण प्रौद्योगिकी विकास परिषद, नई दिल्ली के साथ काम किया है जहां उन्होंने विभिन्न संस्थानों से युवा पेशेवरों की भर्ती के समन्वय, अनुस्थापन और पुनश्चर्या (रिफ्रेशर) प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं कार्यशालाओं के आयोजन किए। उन्होंने उड़ीसा ग्रामीण विकास और विपणन संस्था के साथ भी काम किया है।

“अवसर दिये जाने पर लोग पल्ली एवं ग्राम सभाओं में सम्मलित होते हैं परंतु मुख्य चुनौती आए हुए लोगों को चर्चा में भागीदारी लेने के लिए तैयार करने की होती है।”

देवन कुमार कुडा

रायगड़ा, ओडिशा

डीएवी कालेज, कोरापुट से बी ए, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद से इतिहास में एम ए और टी.आई.एस.एस., मुम्बई से सामाजिक विज्ञान में एम फिल।

“मुझे ग्रामीण क्षेत्रों के पुनर्निर्माण में योगदान और इसी तरह के नियोजन एवं विकास में आम आदमी की भागीदारी को प्रोत्साहन देकर लोगों के बीच असमानताओं की बढ़ती खाई को कम करने में सहायता की आशा है।”

सुधीर कुमार हल्बा

रायगड़ा, ओडिशा

बरहामपुर विश्वविद्यालय, बरहामपुर से बी एस सी और पांडिचेरी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, पांडिचेरी से सामाजिक कार्य में स्नातकोत्तर।

"फेलो को क्षेत्र की हकीकत जानने का पी.एम.आर.डी.एफ. अवसर देता है जो मुख्य रूप से शैक्षिक अध्ययनों में सैद्धांतिक दृष्टिकोण से बहुत भिन्न हैं।"

आलोक कुमार महापात्र

संबलपुर, ओडिशा

रोलैण्ड औषधि विज्ञान संस्थान, बरहामपुर से बी फार्मेसी और राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान, हैदराबाद से ग्रामीण विकास प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

आलोक ने ग्रामीण विकास मंत्रालय की कौशल विकास परियोजना पर काम किया है। उन्होंने युवाओं को एकजुट करने और प्रशिक्षण देने तथा उनकी नियुक्तियों के लिए निजी उद्योगों के साथ संपर्क बनाने की जिम्मदारी निभाई है।

"जिला अधिकारी के नेतृत्व में दो महीने की छोटी सी अवधि में ही मैं ओडिशा के ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक गरीब परिवारों के जीवन में उजाला भरने में समर्थ हुआ।"

नीलामाधब डिगाल

संबलपुर, ओडिशा

उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर से अर्थशास्त्र में बी ए ऑनर्स और टी.आई.एस.एस., मुम्बई से सामाजिक कार्य में एम ए।

नीलामाधब को विकास और आजीविका के क्षेत्र में काम करने का करीब चार साल का अनुभव है। उन्होंने महिलाओं और बच्चों के लिए स्वास्थ्य, गंभीर एवं विकट कुपोषण, संस्था निर्माण, महिला उद्यम विकास, मूल्य श्रृंखला विकास (वेल्यू चेन डेवेलपमेंट) और खाद्य के अधिकार के क्षेत्र में काम किया है।

“जब कभी हमारे दल ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से लोगों के जीवन को प्रभावित किया तो हमेशा मैंने अपने अंदर जोश और उत्साह का अनुभव किया।”

सुनील रंजन थानापती

सोनपुर, ओडिशा

ओडिशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर से कृषि अभियांत्रिकी में बी टेक।

सुनील ने तीन साल आदिवासी समुदायों के साथ काम किया है। उनके काम में भूमि, जल और वन संरक्षण की गतिविधियों के लिए योजना बनाना और उसका निष्पादन तथा तकनीकी सहायता प्रदान करना शामिल रहा।

“मेरे पी.एम.आर.डी.एफ. अनुभवों में जिले के अगम्य क्षेत्रों का दौरा, समुदाय से सीखना और उनसे चर्चा के माध्यम से लोगों की समस्याएं हल करना तथा सार्वजनिक सेवाओं को समय से उपलब्ध कराना शामिल है।”

लक्ष्मीधर सिंह

सुंदरगढ़, ओडिशा

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से चीनी भाषा में बी ए ऑनर्स और टी.आई.एस.एस., मुम्बई से सामाजिक कार्य में एम ए।

लक्ष्मीधर ने महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम की शिकायत निवारण से संबंधित कार्यक्रम प्रबंधक के रूप में आंध्र प्रदेश सरकार के ग्रामीण विकास विभाग के साथ काम किया है। उनके कार्यों में टोल फ्री नंबर और वेब के माध्यम से शिकायतों की नियमित रूप से पर्यवेक्षण और समय पर अच्छा समाधान सुनिश्चित करना भी शामिल है।

"ग्रामीण समुदायों के साथ काम करना उस श्रेष्ठ सपने को साकार करना है जो एक युवा पेशवेर अपनी जीविका के प्रारंभिक दौर में देखता है।"

राहुल दासपट्टनायक

सुंदरगढ़, ओडिशा

रावेनशॉ विश्वविद्यालय, कटक से समाजशास्त्र में बी ए ऑनर्स और एमिटी विश्वविद्यालय, नोएडा से ग्रामीण प्रबंधन में एम बी ए।

राहुल ने ओडिशा सरकार के पंचायती राज विभाग के साथ दस वर्ष काम किया। इसके अतिरिक्त वह ग्रामीण आवास योजनाओं के लिए उत्तरदायी अधिकारी भी रहे और हितधारकों की आवश्यकता का आंकलन किया एवं प्रशिक्षण भी दिया।

"मुझे आदिवासी समुदायों, लोगों के प्रतिनिधियों और विभिन्न कार्यक्रमों के लाभार्थियों तथा जिला प्रशासन से समर्थन के साथ मेरी व्यापक भागीदारी से कुछ ऐसा शुरू होने का विश्वास है, जिससे कुछ समय में लोगों और प्रशासन के बीच खाई भरनी शुरू हो जायगी।"

प्रसन टेटे

गंजाम, ओडिशा

भोपाल समाज विज्ञान विद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश से स्नातक तथा बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश से समाज विज्ञान और समाज कार्य विभाग से सामाजिक कार्य में स्नातकोत्तर।

प्रसन को छह साल (सीएएसए और एमपीडीपीआइपी) का कार्य अनुभव है। उन्होंने प्रशासन, संस्थान निर्माण, क्षमता निर्माण, आजीविका, युवा प्रशिक्षण और रोजगार दिलाना, ड्रिप सिंचाई, एसआरआई, एसडब्ल्यूआई, पीएमई जैसे क्षेत्रों में भी काम किया है।

"पी.एम.आर.डी.एफ. गरीबों के लिए जिला प्रशासन के साथ करीबी तौर काम करने और जिले के दुर्गम एवं अछूते क्षेत्रों तक सरकारी सेवाओं को पहुंचाने में समर्थन देने का बेहतरीन अवसर साबित हुई है।"

उत्तर प्रदेश

मिर्ज़ापुर जिले में अन्नु सिंह एक क्षमता निर्माण कार्यशाला आयोजित करतीं हुईं।

वरिंदर कोमल

चंदौली, उत्तर प्रदेश

गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर से बी ए और एम बी ए

वरिंदर ने तीन साल निजी क्षेत्र में काम किया है।

> *“मेरी हमेशा से यह जानने की इच्छा थी कि सरकारी प्रशासन कैसे काम करता है।”*

विनीत कुमार सिंह

चंदौली, उत्तर प्रदेश

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दुर्गापुर से विद्युत अभियांत्रिकी में बी टेक।

विनीत ने स्टेट बेंक ऑफ इंडिया यूथ फॉर इंडिया फेलो के रूप में काम किया है। इस फेलोशिप के दौरान उन्होंने वित्तीय समावेश, खाद्य सुरक्षा एवं गरीबी उन्मूलन के लिए कृषि हस्तक्षेप के माध्यम से जनजातीय विकास की दो परियोजनाओं में काम किया। उन्होंने निर्माण क्षेत्र में भी काम किया है।

> *“पी.एम.आर.डी.एफ. मेरे पूर्व में किए गए कार्य का एक विविधतापूर्ण विस्तार है।”*

अन्नु सिंह

मिर्ज़ापुर, उत्तर प्रदेश

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ से मनोविज्ञान, अंग्रेज़ी और इतिहास में बी ए और पोपुलेशन एजुकेशन एंड रूरल डेवेलपमेंट में एम ए लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ के समाज कार्य विभाग से पी एच डी (अध्ययनरत)।

अन्नु ने युवाओं के यौन और प्रजनन स्वास्थ्य एवं अधिकारों, नीति वकालत और महिलाओं के स्वास्थ्य एवं अधिकारों पर गैर सरकारी संगठन क्षेत्र में सात साल काम किया है। उन्होंने भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के कार्यक्रम सबला के तहत किशोरियों के लिए काम किया। वे ऑक्सफेम इंडिया की वित्तीय सहायता से चलाए जा रहे विद्यालयों को मजबूत बनाने के कार्यक्रम से भी जुड़ीं रहीं। अन्नु ने इंडोनेशिया के बाली में 2012 में वैश्किव युवा मंच : विकास के केंद्र में युवाओं के अधिकार में भी भाग लिया। उन्हें 2011 में कोपेनहेगन, डेनमार्क में यौनिकता और यौन शिक्षा पर क्षमता निर्माण कार्यशाला में भाग लेने के लिए भी आंमत्रित किया गया।

“पी.एम.आर.डी.एफ. ने नए परिदृश्य का द्वार खोल दिया है। ”

संदीप कुमार गौतम

मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश

गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, गौतम बुद्ध नगर, ग्रेटर नोएडा से इन्फोरमेशन टेक्नोलॉजी में बी टेक।

संदीप ने सॉफ्टवेयर विकास में काम किया है। उनके काम का मुख्य क्षेत्र वैब टैक्नोलोजीज़ रहा है।

“मेरा कौशल और विशेषज्ञता इन्फोरमेशन टेक्नोलोजी में हैं और मुझे वैब टैक्नोलोजीज़ का व्यवहारिक अनुभव है। मैं हमेशा से ग्रामीण विकास में अपने कौशल का उपयोग करना चाहता था। ”

कविंद्र कुलकर्णी

सोनभद्र, उत्तर प्रदेश

सरकारी केंद्रीय वस्त्र संस्थान, कानुपर से बी टेक और राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, बेंगालूरू से फैशन प्रौद्योगिकी में स्नातकोत्तर।

कविंद्र ने आजीविका और शिक्षा के मुद्दों पर काम किया है और वह शिक्षक भी रहे हैं। उन्होंने लखनऊ स्थित गैर सरकारी संगठन के साथ कपड़ा क्षेत्र के लिए कौशल प्रशिक्षण का काम किया है।

“मैं भारत के सुरक्षित भविष्य के लिए ग्रामीण लोगों के साथ काम करता रहा हूँ।”

ओम प्रकाश पासवान

सोनभद्र, उत्तर प्रदेश

यांत्रिक अभियांत्रिकी में बी टेक, स्काईलाइन इन्स्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलॉजी, ग्रेटर नोएडा, गौतम बुध नगर, उत्तर प्रदेश।

ओम प्रकाश ने विकास, शोध और विकास के प्रमुख के रूप में ऑटोमोबाइल क्षेत्र में छह साल काम किया है।

“अब अहसास हुआ कि मनुष्य हूँ क्योंकि मैंने रोबोट या मशीनों के लिए नहीं बल्कि जरूरतमंद लोगों के लिए काम किया।”

अनिमेष घोष जिलास्तरीय अधिकारियों के साथ पुरुलिया में कृषि प्रौद्योगिकी के एक क्षेत्र प्रदर्शन में।

अनिमेष घोष

पुरुलिया, पश्चिम बंगाल

टेक्नो इंडिया, कोलकाता से इलेक्ट्रॉनिक्स एण्ड इंस्ट्रुमेंटेशन में बी टेक।

अनिमेष ने प्रदान नाम के गैर सरकारी संगठन के साथ ग्रामीण विकास के क्षेत्र में काम किया है। उनके कार्यों में स्वयं सहायता समूहों द्वारा समुदाय संघटित करना, समुदाय आधारित पीने के पानी की व्यवस्था, आई एन आर एम मॉडल द्वारा कृषि के क्षेत्र में आजीविका के उपाय, जैविक कृषि को प्रोत्साहन और बाल शिक्षण केन्द्र शामिल रहे हैं।

“मैं कम सुविधाओं वालों के बदलाव प्रतिनिधि के रूप में काम करने का अपना सपना साकार करने के लिए पी.एम.आर.डी.एफ. में शामिल हुआ।”

सौरभ भट्टाचार्जी

पुरुलिया, पश्चिम बंगाल

विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग से गणित में बी एस सी ऑनर्स, एन आई आई टी, रांची से सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग और जेवियर समाज सेवा संस्थान, रांची से ग्रामीण विकास में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

सौरभ ने गुजरात की डेवलपमेन्ट सपोर्ट एजेंसी के साथ काम किया है। वे एजेंसी द्वारा चलाए जा रहे विकास कार्यक्रमों की सूचना, शिक्षा और संचार के क्षेत्रों में विकास परामर्श दाता के रूप में गुजरात सरकार के आदिवासी विकास विभाग के साथ काम कर चुके हैं। उन्होंने एजेंसी के लिए मानव संसाधन की जिम्मेदारी भी संभाली। इसके अलावा उन्होंने कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व के क्षेत्र में आइटीसी लिमिटेड के साथ भी काम किया जहां उन्हें ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, प्राथमिक शिक्षा, पशुधन विकास जैसे क्षेत्रों पर परियोजनाओं में काम करने का अवसर प्राप्त हुआ।

“पी.एम.आर.डी.एफ. मेरे लिए न सिर्फ अपनी क्षमताओं का विकास करने का अवसर है बल्कि बदलाव लाने की अपनी क्षमताओं की परीक्षा करने का मंच भी है।”

अरिंदम बनर्जी

पश्चिमी मिदनापोर, पश्चिम बंगाल

जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता से तुलनात्मक साहित्य में बी ए ऑनर्स और मल्टीमीडिया एवं एनिमेशन में डिप्लोमा तथा टी.आई.एस.एस., मुम्बई से मीडिया और सांस्कृतिक अध्ययन में एम ए।

अरिंदम ने पत्रकारिता, संचार, अनुसंधान, परियोजना प्रबंधन और परामर्श के क्षेत्रों में काम किया है। उन्होंने इंडियन एक्सप्रेस के लिए एक संवाददाता के रूप में काम किया और माओवादी संघर्ष, विकास के मुद्दों, उग्रवाद और फुटबॉल संस्कृति पर भी लिखा है। अरिंदम ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की परियोजना के लिए एक दृश्य – श्रव्य (ऑडियो विजुअल) संयोजक के रूप में भी काम किया है।

“पी.एम.आर.डी.एफ. का आभारी हूँ कि उसने मुझे ऐसे दिलचस्प सफर का अंग बनने के लिए विकल्प चुनने का मौका दिया।”

हबीब रैहान

पश्चिमी मिदनापोर, पश्चिम बंगाल

इन्फोरमेशन टेक्नोलोजी में बी टेक और कार्यकारी प्रबंधन में स्नातकोत्तर।

हबीब ने प्रबंधक के रूप में आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस कंपनी के साथ काम किया है। उनकी जिम्मेदारियों में विभिन्न उत्पादों और संचालन प्रक्रिया की बिक्री और विपणन शामिल थे। वे आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड में सहायक प्रबंधक भी रहे जहाँ उन्होंने व्यापार वित्त संचालन और वाणिज्यिक चालू खाता अनुभाग में काम किया।

“सरकार और समुदाय के साथ मिलकर संयुक्त रूप से काम करना विकास के लिए काम करने का बेहतरीन तरीका है।”

सायंतन सरकार

बांकुरा, पश्चिम बंगाल

कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता से सूक्ष्म जीव विज्ञान में बी एस सी और राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान, हैदराबाद से ग्रामीण विकास प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।

सायंतन ने युवा प्रोफेशनल के रूप में ग्रामीण गरीबी उन्मूलन संस्था (एसईआरपी) के लिए काम किया है। एसईआरपी गरीबी के सभी आयामों जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ्य और आजीविका संवर्धन पर काम करती है और इनके जरिए गरीबी उन्मूलन के समाधान तलाशती है। आजीविका संवर्धन के उपायों में गरीब महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों में संगठित कर और विभिन्न स्तरों पर उनके संघ बनाकर, एवं छोटे–छोटे ऋण देना शामिल है।

"मैं सौभाग्यशाली रहा हूँ जो मुझे पारिवारिक स्वच्छता, खाद्य सुरक्षा, भौगोलिक नियोजन और पंचायती राज प्रणाली जैसे व्यापक कार्यक्रमों से जुड़ने का मौका मिला।"

पीएमआरडीएफ कार्यक्रम सपोर्ट सैल,
ग्रामीण विकास मंत्रालय,
भारत सरकार,
द्वितीय तल, कोर 5A,
इंडिया हैबिटेट सेंटर (भारतीय पर्यावास केन्द्र)
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
दूरभाष: 011-24604598
ई मेल: pmrdfellows@gmail.com
www.pmrdfellows.wordpress.com
www.facebook.com/pmrdfofficialpage
http://rural.nic.in/pmrdfs

प्रकाशनः नवम्बर 2013

रूपांकन एवं मुद्रण – न्यू कान्सेप्ट इन्फोरमे न सिस्टम्स प्रा. लि.